वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

शोध बोध

फरवरी 2026

बोधकथा शोध संस्थान की मासिक ई-पत्रिका

www.jagoshiv.in

सहकर्मी द्वारा समीक्षित (पियर रिव्यूड)

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

फरवरी 2026

शोध बोध

बोधकथा शोध संस्थान की मासिक ई-पत्रिका

प्रधान संपादक
शिव नारायण सिंह

संपादक
शिवांश सिंह

संपादन सहयोग
शिवालिका सिंह
शिवेश सिंह
शिवांगी सिंह

अतिथि संपादक
डॉ. निगम मौर्य

आवरण एवं संयोजन
धर्मेन्द्र कुमार प्रजापति

प्रकाशक
बोधकथा शोध संस्थान
जागो शिव न्यास का उपक्रम
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

अनुक्रम

अपनी बात	शिवांश सिंह	03-04
संपादकीय	डॉ. निगम मौर्य	05-06
प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में उनका समकालीन रूपान्तरण	डॉ. पूनम पाण्डेय	07-14
कथा-कथन परम्परा का अभ्युत्थान : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ	डॉ. वीरेन्द्र कुशवाहा	15-22
शिव नारायण सिंह की साहित्यिक यात्रा : प्राचीन वाचिक परम्परा का पुनर्जीवन	अनुभव कुमार गुप्ता	23-28
पर्यावरण चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ	सरोज सिंह	29-35
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का उद्घोष करती : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ	सतीश कुशवाहा	36-41
शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं का पुनरावलोकन : शिक्षा पद्धति को भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ों से जोड़ने का भगीरथ प्रयास	संजू कुशवाहा	42-48
शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ: जहाँ सुमति तह सम्पति नाना का विग्रह	डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय	49-54

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

अपनी बात

शिवांश सिंह

सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति अपने हित की चिंता करता है और उसी के अनुरूप कार्य करता है, किन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने साथ-साथ अपने मित्रों और सम्बन्धियों के कल्याण के लिए भी सदैव तत्पर रहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार इनसे भी श्रेष्ठ वे व्यक्ति हैं, जो समस्त जगत को अपना मानकर सबके हित में निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसे उदार और परोपकारी व्यक्तित्व ही समाज में वास्तविक सज्जनता के प्रतीक माने जाते हैं। शिव नारायण सिंह का व्यक्तित्व इसी उच्च आदर्श का सजीव उदाहरण है। वे सबको समान दृष्टि से देखते हुए उनके कल्याण के लिए निरन्तर कार्यरत रहते हैं। उनके भीतर समाज के प्रति गहरी संवेदनशीलता और समर्पण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में एक यूनिट है वह एक निश्चित उद्देश्य से इस धरा पर आया हुआ है जो अपने उद्देश्य में लगा रहता है सफल हो ही जाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही यह संकल्प कर लिया था कि वे एक ऐसी संस्था का निर्माण करेंगे, जो व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने शिक्षा और विद्यालय को माध्यम बनाया तथा अपनी बोधकथाओं के माध्यम से न केवल नैतिक मूल्यों का प्रसार किया, बल्कि शिक्षण की भारतीय परम्परा को भी सुदृढ़ करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनके योगदान ने शिक्षा जगत में एक नई दिशा प्रदान की है, जो शिक्षक-शिक्षार्थी एवं अभिभावकों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

शिव नारायण सिंह का व्यक्तित्व शिक्षा, संस्कृति और समाज-सेवा के त्रिवेणी संगम के रूप में देखा जा सकता है। प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज की स्थापना से लेकर 'बोधकथा शोध संस्थान', गोरखपुर की स्थापना तथा 'शोध-बोध' पत्रिका के प्रकाशन तक उनका समूचा कार्य एक दूरदर्शी संकल्प, सतत साधना और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। वे केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि एक प्रेरणास्रोत हैं। उनका जीवन अनुशासन, संयम और कर्मनिष्ठा का आदर्श उदाहरण है। सेवा, शील और शिष्टाचार उनके व्यक्तित्व के स्वाभाविक गुण हैं, जो उनके व्यवहार और कार्यों में सहज रूप से प्रकट होते हैं। उनके शिक्षकीय कर्म में यह समर्पण विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। वे बार-बार कहते सुने जाते हैं आप इस दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं जिस दिन इस बात को मान लेंगे जिस दिन इसे आचरण में उतार लेंगे उस दिन आपके लिए कोई ऊँचाई शेष नहीं रह जायेगी।

प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज की स्थापना उनके उसी स्वप्न का परिणाम है, जिसमें वे शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार मानते हैं। उन्होंने विद्यालय को ऐसा मंच बनाया, जहाँ विद्यार्थियों के भीतर नैतिक मूल्यों, अनुशासन, संवेदनशीलता और आत्मविश्वास का विकास हो सके। उनके लिए शिक्षा का अर्थ केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देना है। इसी शैक्षिक दृष्टि का विस्तार 'बोधकथा शोध संस्थान' की स्थापना में दिखाई देता है। यह संस्थान केवल एक औपचारिक संस्था नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिकता और जीवन-दर्शन को पुनर्जीवित करने का एक गम्भीर प्रयास है। वे बोधकथा को केवल साहित्यिक विधा के रूप में नहीं देखे, बल्कि उसे लोकजीवन, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों के सशक्त माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किये हैं। इस संस्थान के माध्यम से बोधकथाओं के सृजन,

संकलन, अध्ययन और शोध को प्रोत्साहन मिला है, जिससे इस परम्परा को एक नई दिशा और व्यापक पहचान प्राप्त हो रही है।

'बोधकथा शोध संस्थान' की स्थापना आदरणीय शिव नारायण सिंह के दूरदर्शी विचार और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का सुन्दर परिणाम है। उन्होंने बोधकथा को केवल एक साहित्यिक विधा के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और जीवन-दर्शन को समझाने का एक प्रभावी माध्यम माना। इनके माध्यम से समाज में नैतिकता, मानवीय संवेदनाएँ और जीवन को सही ढंग से जीने की समझ विकसित होती रही है। श्री शिव नारायण सिंह का प्रयास इसी परम्परा को फिर से जीवित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अपने कार्य को केवल बोधकथाओं के सृजन और संकलन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उनके अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस संस्थान की स्थापना की। यह संस्थान बोधकथाओं की परम्परा, स्वरूप, प्रभाव और सांस्कृतिक महत्त्व पर गम्भीर अध्ययन एवं विमर्श के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है। जहाँ शोधार्थी आकर, रहकर बड़ी तन्मयता से शोधकार्य कर रहे हैं और अब तो यह कार्यस्थल उनके लिए सम्मान का प्रतीक भी बनता जा रहा है।

वर्तमान समय में ज्ञान की दुनिया निरन्तर विस्तृत होती जा रही है। सूचना-प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने ज्ञान के स्रोतों को अत्यन्त व्यापक बना दिया है, किन्तु इसके साथ ही शोध की गुणवत्ता, मौलिकता और विश्वसनीयता को बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती बन गई है। ऐसे समय में शोध-पत्रिकाओं की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे न केवल प्रमाणिक ज्ञान के प्रसार का माध्यम होती हैं, बल्कि अकादमिक अनुशासन और बौद्धिक ईमानदारी के मानकों को भी स्थापित करती हैं। इसी कड़ी में 'शोध-बोध' पत्रिका का प्रकाशन भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जो शोधार्थियों को अपने विचारों और निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का अवसर देती है। इसके माध्यम से न केवल शोध-परम्परा को सुदृढ़ किया जा रहा है, बल्कि भारतीय बौद्धिक विरासत को समकालीन सन्दर्भों में समझने और प्रसारित करने का कार्य भी निरन्तर किया जा रहा है।

निस्संदेह, प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज की स्थापना से लेकर 'बोधकथा शोध संस्थान' और 'शोध बोध' पत्रिका के माध्यम से किया गया यह कार्य भारतीय शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि यह समूचा उपक्रम न केवल बोधकथा परम्परा के पुनर्जीवन का प्रतीक है, बल्कि एक सशक्त, संस्कारित और मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण की दिशा में एक सार्थक और प्रेरणादायी प्रयास भी है।

16.02.2026 शिवलोक, गोरखपुर उ.प्र.

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

संपादकीय

डॉ. निगम मौर्य
आचार्य एवं अध्यक्ष– शिक्षक शिक्षा विभाग
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कुशीनगर (उ.प्र.)।

प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था मूलतः आचरण और आदर्शों को केंद्र में रखकर संचालित होती थी। शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य आचरण की उच्चता को स्थापित करना होता था। इसी कारण हमारे यहाँ कहा गया कि 'विद्या ददाति विनयम'। साहस और शोध इसके बृहदत्तर उद्देश्य थे। कथा या कहानी के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना भारतीय ज्ञान परम्परा की विशिष्ट पहचान रही है। भारतीय ज्ञान परम्परा के सभी महान शैक्षिक ग्रंथ यथा-पंचतंत्र, भगवत गीता, पुराण और उपनिषद इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हमारे यहाँ शिक्षण की प्रमुख विधा कहानी विधि थी जो मूलतः शिक्षण की भारतीयों द्वारा विकसित की गई पद्धति है।

भारतीय समाज अपना ज्ञान परम्परागत रूप से सूत्र वाक्य अथवा कहानी के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता था। कहानी मूलतः आम जनमानस के शिक्षण हेतु सबसे प्रभावी पद्धति मानी गई है। इसीलिए भारतीय जनमानस में लोककथाओं की भरमार देखने व सुनने को मिलती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में छात्रों को आचरण की पवित्रता पहले सिखाई जाती थी, विशुद्ध ज्ञान बाद में। इस हेतु चरित्र गाथा और नैतिक कहानियाँ सबसे उपयुक्त माध्यम थी। कहानियों के माध्यम से प्राचीन भारत में राजनीति, कूटनीति, ज्ञान-विज्ञान, समाज, धर्म, तत्व-दर्शन आदि का ज्ञान भी छात्रों को दिया जाता था। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा के महान ग्रन्थ पंचतंत्र में सम्पूर्ण शिक्षा कहानियों के माध्यम से दी गई है। पुराणों का सम्पूर्ण ज्ञान कहानियों के माध्यम से संकलित है। उपनिषद् भी शिक्षा हेतु कहानियों को ही माध्यम बनाते हैं। सम्पूर्ण वेद और उपनिषद दार्शनिक चिंतन के साथ-साथ लोककथाओं के माध्यम से लोक को शिक्षित करने का उपक्रम करते हैं।

भारतीय शिक्षा में मैकाले के प्रभाव ने लोक कथाओं के माध्यम से शिक्षा की इस अविछिन्न धारा के प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया। मैकाले के प्रभाव से भारतीय शिक्षा का कितना नुकसान हुआ इसका आकलन इसी से किया जा सकता है कि आचरण, ज्ञान, साहस और शोध केंद्रित भारतीय शिक्षा व्यवस्था मूलतः रटने पर केंद्रित हो गई। आचरण की पवित्रता कहीं खो-सी गई। शिक्षण की कहानी विधि जो छात्रों के अंदर सरल, सहज और बोधगम्य तरीके से ज्ञान का विस्तार करती थी उसका स्थान नीरस व्याख्यानों ने ले लिया। शिक्षण की विशुद्ध भारतीय पद्धति गौड़ हो गई। फलतः छात्र विषय को समझने की जगह रटने लगे। नैतिक शिक्षा अब उदाहरण न होकर विशुद्ध ज्ञान चर्चा का विषय हो गई। इस एक परिवर्तन ने भारतीय शिक्षा का इतना नुकसान किया जितना सदियों की गुलामी के दूसरे कारक नहीं कर पाए।

शिव नारायण सिंह आधुनिक समय के आचार्य विष्णु शर्मा है। आपकी कहानियों का विविधतापूर्ण संसार विस्मित करता है। आपकी कहानियों में धर्म, दर्शन, जीवन-मूल्य, सामाजिक-रीतियाँ, संस्कार, लोक-कल्याण की भावना इत्यादि के दर्शन होते हैं। आपकी कहानियों ने न सिर्फ बाल-साहित्य को समृद्ध किया है अपितु शिक्षा में कहानी विधि को पुनर्स्थापित करके भारतीय शिक्षण पद्धति पर बड़ा उपकार किया है।

आज जब हम शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा को समाहित करने का वैचारिक अभियान छेड़े हुए है उस समय शिव नारायण सिंह के द्वारा प्रार्थना सभा में नियमित रूप से कही गई बोधकथाओं की श्रृंखला 'विद्यार्थियों से...' न सिर्फ हम सभी का मार्ग दर्शन करता है अपितु सम्पूर्ण शिक्षा जगत का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

मुझे यह स्वीकार करने में रंच मात्र भी संकोच नहीं है कि आपका यह प्रयास गीजू भाई बधेका के शैक्षिक प्रयोगों की तरह ही शिक्षा जगत में भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्जागरण काल में आधारशिला की भूमिका का निर्वहन करेंगे। आपकी बोधकथाओं के विपुल साहित्य पर शोध की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि लोक को आपके कार्यों की महत्ता से परिचित कराया जा सके तथा संसार आपके योगदान का लाभ उठा सके। बोधकथा शोध संस्थान का वर्तमान प्रयास इसी दिशा में किए जा रहे कार्य का प्रमाण है।

शिव नारायण सिंह शिक्षा जगत के 'ध्रुवतारा' हैं। आप उन मनीषियों में हैं जो बँधी-बँधाई लीक पर चलने की बजाय अपना रास्ता खुद बनाते हैं। आपका कार्य भारतीय ज्ञान परम्परा के महासागर में किनारे पर बने उस प्रकाश

स्तम्भ की तरह है जो समय के थपेड़ों, मौसम की मार और अंधेरे में भटक रहे जहाज को रास्ता दिखाते हैं। वास्तव में आपका कार्य शिक्षा जगत में शिक्षण की परम्परागत विधि, कहानी विधि को पुनर्स्थापित करती है। इस दृष्टि से आपके साहित्य और अवदान पर व्यापक शोध की आवश्यकता है तभी हम सभी को आपके कार्यों का पूरा लाभ मिल सकेगा। बोधकथा शोध संस्थान के माध्यम से वर्तमान प्रयास उसी दिशा में किया जाने वाला पुनीत कार्य है।

पत्रिका के फरवरी अंक में कुल सात शोधार्थियों के शोध आलेख प्रकाशित किया जा रहा है। 'प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में उनका समकालीन रूपान्तरण'- डॉ. पूनम पाण्डेय, 'कथा-कथन परम्परा का अभ्युत्थान: शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ' - डॉ. वीरेन्द्र कुशवाहा, 'शिव नारायण सिंह की साहित्यिक यात्रा: प्राचीन वाचिक परम्परा का पुनर्जीवन'- अनुभव कुमार गुप्ता, 'पर्यावरण चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ'- सरोज सिंह, 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की उद्घोष करती : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ'- सतीश कुशवाहा, 'शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं का पुनरावलोकन : शिक्षा पद्धति को भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ों से जोड़ने का भगीरथ प्रयास'- संजू कुशवाहा, 'शिव नारायण सिंह की बोध कथाएँ: जहाँ सुमति तह सम्पति नाना का विग्रह' डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय इन आलेखों के प्रकाशन से बोधकथाओं के बारे में शिक्षा जगत को नई जानकारी प्राप्त होगी। जिससे पूरा शिक्षा जगत लाभान्वित होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोधार्थियों के निष्कर्ष हम सभी के लिए न सिर्फ फलदायी होंगे अपितु भारतीय ज्ञान के भंडार में वृद्धि भी करेंगे।

'शोध- बोध' पत्रिका का उद्देश्य केवल शोध आलेखों का प्रकाशन करना नहीं है, बल्कि शोध की उस गंभीर परम्परा को सशक्त करना भी है, जो भारतीय बौद्धिक संस्कृति की आधारशिला रही है। यह पत्रिका शोध, अध्ययन और विमर्श की उस चेतना को प्रोत्साहित करती है, जिसमें साहित्य, भाषा, संस्कृति और समाज से जुड़े विविध आयामों पर गंभीरता के साथ विचार किया जा सके। प्रवेशांक के प्रकाशन के समय जिस उद्देश्य और संकल्प के साथ इस पत्रिका का प्रारम्भ किया गया था, वह संकल्प आज भी उतनी ही प्रतिबद्धता के साथ हमारे समक्ष विद्यमान है।

शोध-बोध पत्रिका का वर्तमान अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से 'जागो शिव न्यास', शिवलोक, गोरखपुर, (उ.प्र.) ने अपने शोध केंद्र 'बोधकथा शोध संस्थान' के शोधार्थियों द्वारा किए गए कार्यों को शिक्षा जगत के सम्मुख प्रकाशित करने और भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ों को सींचने का पुनः पुनीत प्रयास है। इस पुण्य कार्य हेतु शोध-बोध पत्रिका के प्रधान सम्पादक शिव नारायण सिंह जो बोध कथाओं के मूल लेखक भी हैं, के प्रति शिक्षा जगत आभारी रहेगा।

शिव नारायण सिंह द्वारा विरचित बोधकथाएँ न सिर्फ शिक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं अपितु समाज में नैतिक एवं पारिवारिक मूल्यों की स्थापना में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। शिव नारायण सिंह द्वारा रचित बोधकथाओं के विपुल साहित्य पर गहन और व्यापक शोध किए जाने की आवश्यकता थी जो बोधकथा शोध संस्थान के माध्यम से पूर्ण हो रही है। यह केंद्र साहित्य सृजन, शोधार्थियों और प्रकाशन तीनों का समन्वित केन्द्र है। इससे शिक्षा जगत उनके योगदान से न सिर्फ परिचित हो रहा है अपितु बोधकथा रूपी साहित्य के अमृत पान से शिक्षा जगत और बाल-साहित्य को नवजीवन भी मिल रहा है। पत्रिका का फरवरी अंक इस बृहदत्तर उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में एक गिलहरी सदृश योगदान है। इसी में इस अंक की सार्थकता निहित है।

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में उनका समकालीन रूपान्तरण

डॉ. पूनम पाण्डेय
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर उ.प्र.
आचार्य- हिन्दी विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (म.प्र.)

प्रस्तावना-

भारतीय साहित्य की दीर्घपरम्परा में बोधकथा एक ऐसी विधा के रूप में प्रतिष्ठित रही है, जिसने मनोरंजन के साथ-साथ जीवन की मूलभूत सच्चाइयों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक आदर्शों को सहज, सरल और प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। वैसे तो कथा या कहानी की परम्परा हमारे देश में बहुत प्राचीन है। इसका प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताओं में मिलता है जहाँ शुनः शेप ऋषि, अपाला, घोसा, लोपामुद्रा और आत्रेयी जैसी आदर्श नारियों की चर्चा की गयी है। ब्राह्मण ग्रंथ और उपनिषद में तो ये कथाएँ बहुतायत में पायी जाती है। गुणाढ्य द्वारा पैचाशी भाषा में लिखित प्राचीन कथा संग्रह माना जाता है। हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही बोधकथाएँ जनमानस के नैतिक प्रशिक्षण, सामाजिक अनुशासन तथा मानवीय संवेदना के विकास का सशक्त माध्यम रही हैं। इसी क्रम में पंचतंत्र, जातक कथाएँ, हितोपदेश एवं कथासरित्सागर आदि ग्रंथों में संकलित बोधकथाएँ भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, मूल्यबोध और जीवन- दृष्टि को प्रतिबिंबित करती हैं। ये कथाएँ उपदेश तो देती ही हैं साथ ही जीवन के व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से मनुष्य को विवेकशील, संवेदनशील और उत्तरदायी भी बनाती हैं।

समय के परिवर्तन के साथ सामाजिक संरचना, जीवन-शैली और मानवीय सम्बन्धों में भी व्यापक बदलाव आए हैं। आधुनिक युग में जहाँ एक और भौतिकतावाद, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा और स्वार्थ की प्रवृत्तियाँ द्रुत गति से बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर मूल्यगत संकट और नैतिक द्वंद्व भी गहराए हैं। ऐसे समय में बोधकथा की परम्परा का पुनर्पाठ और पुनर्सृजन आवश्यक हो जाता है।

इसी सन्दर्भ में शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ प्रासंगिक हो उठती हैं जो पारम्परिक मूल्य चेतना को समकालीन जीवन परिस्थितियों से सन्नद्ध करने का यथेष्ठतम प्रयास करती हैं। उनकी कथाओं में प्राचीन बोधकथाओं की नैतिकता और शिक्षात्मकता का आधार तो बना रहता है, किन्तु उसका प्रस्तुतीकरण आधुनिक सामाजिक यथार्थ के अनुरूप रूपान्तरित दिखाई देता है। पुनर्पाठ के सम्बन्ध में प्रख्यात समालोचक नामवर सिंह का अभिमत है कि- "पुनर्पाठ वह प्रक्रिया है जिसमें परम्परा प्रश्नों के घेरे में आकर और अधिक, प्रासंगिक हो जाती है।"1

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं की खासियत यह है कि वे वर्तमान समय के नैतिक संकट, सामाजिक विसंगतियों और मानवीय सम्बन्धों की जटिलताओं को केन्द्र में रखकर कही गई हैं। उनकी कथाओं में व्यक्ति की आत्मचेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनाओं को विशेष महत्त्व दिया गया है, जो नैतिक शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जागरुकता और आत्म मंथन की प्रेरणा देती हैं।

प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना जहाँ सार्वकालिक नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित है, वहीं शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ उन सिद्धान्तों को वर्तमान सम सामाजिक सन्दर्भों में पुनर्स्थापित करने की सफलतम कोशिश करती हैं। उनकी कथाओं में नैतिकता का स्वरूप अधिक मानवीय, यथार्थपरक और संवादात्मक हो गया है। उनकी कथाएँ विद्यार्थियों को केवल आदर्श का पालन करने की प्रेरणा ही नहीं देतीं अपितु जीवन की जटिल परिस्थितियों में सही

निर्णय लेने की समझ भी विकसित करती हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-चार) में 'जरूरत' बोधकथा में विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हुए वे कहते हैं- "एक रास्ता प्रेय का है, दूसरा श्रेय का, एक रास्ता पतन का है, दूसरा उत्थान का, एक पछतावे का है, दूसरा गर्व करने का, एक पलायन का है, दूसरा चुनौती का, एक समस्या का है, दूसरा समाधान का, एक अनिश्चय का है और दूसरा निश्चय का, एक अदूरदर्शिता का है और दूसरा दूरदर्शिता का, एक असफल होने का है तो दूसरा सफल होने का। तय आपको करना है कि आप कौन-सा रास्ता चुनते हैं, कौन-सा रास्ता चुनेंगे आप ? जो भी रास्ता आप चुनेंगे वह आपको उसी मंजिल तक पहुँचाएगा जहाँ तक उसकी पहुँच होगी। अतः वही रास्ता आप चुनें जो आपको आपकी मंजिल तक पहुँचाए।"2

स्पष्टतः, प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं के बीच एक सतत सम्बन्ध विद्यमान है। पारम्परिक नैतिक मूल्यों को आधार बनाकर शिव नारायण सिंह ने उन्हें समकालीन जीवन के सन्दर्भों में पुनर्परिभाषित किया है।

बीज शब्द- मूल्य चेतना, समकालीन रूपान्तरण, पुनर्पाठ, प्रतीकात्मकता, जीवन दृष्टि, भौतिकवाद, सामाजिक- सन्तुलन, अन्तर्विरोध, अनुभवजन्य, नैतिक द्वन्द्व, संवादात्मक, पुनर्परिभाषित।

सारांश- यह शोध आलेख प्राचीन भारतीय बोधकथा परम्परा में निहित मूल्य-चेतना का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक हिन्दी कथाकार शिव नारायण सिंह ने इन मूल्यों का समकालीन सामाजिक सन्दर्भों में किस प्रकार पुनर्पाठ और रूपान्तरण किया है। पंचतंत्र, जातक कथाएँ, हितोपदेश और कथासरित्सागर जैसी परम्पराओं में विकसित नैतिकता, करुणा, विवेक और सामाजिक उत्तर-दायित्व को शिव नारायण सिंह ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं- नैतिक, द्वन्द्व, सत्ता- संदेह, सामाजिक अन्याय और व्यक्ति-केन्द्रित अनुभव के साथ जोड़कर नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

समकालीन समाज में मूल्य संकट, नैतिक विघटन, स्वार्थपरता, उपभोक्तावाद और संवेदनहीनता जैसे प्रश्न अत्यन्त प्रबल रूप में उपस्थित हैं। ऐसे समय में शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है। बोधकथाएँ इन समस्याओं का सीधा- सीधा समाधान न देकर विद्यार्थियों को माध्यम बनाकर मनुष्य को उसकी जिम्मेदारियों और मानवीय मूल्यों का बोध कराती हैं। इस दृष्टि से उनकी बोधकथाएँ प्राचीन परम्परा की अनुगामिनी होते हुए भी आधुनिक चेतना की प्रतिनिधि हैं। इस सम्बन्ध में सुभाष चन्द्र कुशवाहा का कथन है- " समय और समाज इस कदर बदल चुका है कि कहानी कहने और सुनने की पारम्परिक शैली 'कहन' पर मौन ने ताला जड़ दिया है या लोककथाओं की जीवन्तता को आज के ठस और एकाकी जीवन ने निगल लिया है। लोककथाएँ सदियों से पढ़े, अनपढ़ों को मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाती रही हैं और समाज को उसके परिवेश से जोड़ती रही हैं। शिव नारायण सिंह ने प्रार्थना सभा के अपने उद्बोधनों में तमाम लोककथाओं को प्रस्तुत करते हुए मानवीय त्रुटियों, उसकी मक्कारियों, चालाकियों, लिप्साओं और धूर्तताओं को नकारने या सुधारने का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है।"3

इस प्रकार यह अध्ययन न केवल प्राचीन बोधकथा परम्परा और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं के मध्य सेतु स्थापित करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि साहित्य किस प्रकार समय के साथ जीवन मूल्यों का पुनर्निर्माण करता है। इस शोध आलेख का केन्द्रीय प्रतिपाद्य यही है कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ प्राचीन मूल्य चेतना का यांत्रिक रूपान्तरण न होकर उसकी सर्जनात्मक और समकालीन रूपान्तरण हैं।

प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य-चेतना: अवधारणा और परम्परा- प्राचीन भारतीय सन्दर्भ में बोधकथा की अवधारणा धर्म, नीति और लोकाचार से अत्यन्त गहरे रूप से जुड़ी हुई है। ये कथाएँ सामाजिक जीवन के नैतिक अनुशासन मानवीय मूल्यों और सामूहिक चेतना के निर्माण का सशक्त माध्यम रही हैं।

बोधकथा का मूल आशय है- ज्ञान, विवेक और आत्मबोध। इस प्रकार बोधकथा वह विधा है जो पाठक को या श्रोता को केवल कथा का ही रसास्वादन नहीं कराती अपितु जीवन के सत्य से प्रत्यक्ष साक्षात्कार

कराती है। प्राचीन भारत में जहाँ शिक्षा मौखिक, परम्परा पर आधारित थी, वहीं बोधकथाएँ जीवन दर्शन के संप्रेषण का सहज और प्रभावशाली माध्यम थीं। जैसा कि मैनेजर पाण्डेय कहते हैं, " बोधकथाएँ वे होती हैं जिनके माध्यम से कोई-न-कोई संदेश या शिक्षा कथा कहने वाला अपने श्रोताओं या पाठकों तक पहुँचाना चाहता है और उन कथाओं के माध्यम से श्रोताओं या पाठकों के जीवन एवं जगतबोध को जागृत, उन्नत, विकासशील तथा गतिशील बनाता है। ऐसा माना जाता है कि कथा कहने की कला और परम्परा दुनिया को भारत से प्राप्त हुई है। संस्कृत साहित्य में कथा के अनेक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ मौजूद हैं। भारत में कथा की परम्परा गुणाढ्य की रचना 'वृहतकथा' से प्रारम्भ होकर कथासरित्सागर से होते हुए पंचतंत्र, हितोपदेश, और जातक कथाओं के रूप में विकसित हुई है। संस्कृत साहित्य में और बाद की लोकभाषाओं में रचित कथाएँ बोधकथाएँ ही है।" 4

बोधकथाओं की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह प्रत्यक्ष उपदेश न देकर उसे कथा- संरचना के भीतर पिरो देती हैं। पात्रों की क्रियायें उनके निर्णय और उनके परिणाम यही नैतिक शिक्षा का माध्यम बनते हैं। इस प्रकार पाठक स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचता है। यही कारण है कि बोधकथाएँ बच्चों से लेकर प्रौढ़ पाठकों तक समान रूप से प्रभाव डालती हैं।

पंचतंत्र की परम्परा और मूल्य- चेतना– प्राचीन बोधकथा परम्परा का सर्वाधिक लोकप्रिय और व्यापक रूप पंचतंत्र में देखने को मिलता है। पंचतंत्र की रचना का उद्देश्य स्पष्ट रूप से नीति-शिक्षा है- विशेषतः राजकुमारों को व्यावहारिक बुद्धि और राजनीतिक विवेक का ज्ञान कराना। इसमें मित्रता, विश्वासघात, कूटनीति, बुद्धिमता और समयानुकूल निर्णय जैसे मूल्य प्रमुखता से उजागर होते हैं। उद्धरण प्राप्त होता है कि "नीतिशास्त्र का उद्देश्य मनुष्य को व्यवहार कुशल बनाना है न कि केवल नैतिक उपदेश देना।"5

स्पष्ट है कि पंचतंत्र की मूल्य चेतना कोरा आदर्शवादी न होकर व्यावहारिक है जो आधुनिक बोधकथाओं की पृष्ठभूमि निर्मित करती है। यहाँ यह स्वीकार किया गया है कि जीवन में हर निर्णय पूर्णतः शुद्ध या निष्कलंक नहीं होता, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार विवेकपूर्ण चयन ही सर्वोत्तम नीति है। इस दृष्टि से पंचतंत्र की मूल्य-चेतना यथार्थपरक है। पशु-पक्षियों के माध्यम से कही गई ये कथाएँ सत्ता सम्बन्धों, मानवीय कमजोरियों और सामाजिक संरचनाओं का सूक्ष्म चित्रण करती हैं।

जातक कथाएँ और करुणा का मूल्य– बौद्ध परम्परा में संकलित जातक कथाएँ बोधकथा परम्परा को एक अलग नैतिक आयाम प्रदान करती हैं। जातक कथाओं का केन्द्रीय विषय करुणा है। इनमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाओं के माध्यम से त्याग, दया, सत्य और अहिंसा जैसे गुणों को प्रतिष्ठित किया गया है।

जातक कथाओं में नैतिकता केवल सामाजिक अनुशासन तक सीमित नहीं रहती अपितु वह समस्त प्राणियों तक संवेदना का विस्तार करती हैं। यहाँ मनुष्य और पशु के मध्य कठोर विभाजन नहीं है। पशु पात्र भी नैतिक निर्णय लेते हैं और मानवीय गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जातक कथाओं में करुणा और दया को सर्वोपरि रखा गया है। शश जातक में उल्लेख आता है- "करुणा वह धर्म है जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है, बिना करुणा के नीति निरर्थक है।"6

यह उद्धरण जातक कथाओं की करुणामूलक चेतना को रेखांकित करता है, जो शिव नारायण सिंह की कथाओं में मानवीय संवेदना के रूप में पुनः प्रकट होती हैं।

हितोपदेश और सामाजिक सन्तुलन– बोधकथा परम्परा के एक अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हितोपदेश में नीति, मित्रता, सामाजिक आचरण और व्यावहारिक बुद्धि को केन्द्र में रखा गया है। हितोपदेश का मूल उद्देश्य सामाजिक सन्तुलन एवं समरसता बनाये रखना है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति का आचरण निजी होने के साथ-साथ समाज में व्यापक प्रभाव डालने वाला होता है।

हितोपदेश की कथाओं में नैतिकता अपेक्षाकृत स्पष्ट और उपदेशात्मक रूप में प्रस्तुत होती है। किन्तु कथा-विन्यास उसे बोझिल नहीं होने देता। यहाँ मित्रता, सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य प्रमुख हैं। यह ग्रंथ सामाजिक

जीवन की मर्यादाओं को रेखांकित करता है और व्यक्ति को उसके कर्त्तव्यों का बोध कराता है। हितोपदेश में एक स्थल पर उल्लिखित है, "हित वही है जो समाज और व्यक्ति दोनों के कल्याण में सहायक हो।"7

कथासरित्सागर और जीवन-बोध- प्राचीन बोधकथा परम्परा का विस्तार हमें कथासरित्सागर में भी दिखाई देता है। कथासरित्सागर में लोककथाएँ पौराणिक कथाएँ, ऐतिहासिक कथाएँ और नीतिपरक कहानियाँ शामिल हैं। इसे विश्वकथा साहित्य का आदिस्रोत माना जाता है और बैताल पचीसी, सिंहासन बत्तीसी और तोता-मैना जैसी प्रसिद्ध कथाओं का भी संग्रह है। यह ग्रंथ भारतीय साहित्य में मिथक, इतिहास और कल्पना का एक अनूठा संगम है जो मध्यकालीन भारतीय समाज के रीति-रिवाजों और आस्थाओं को दर्शाता है।

कथासरित्सागर की एक प्रमुख विशेषता इसका नीतिपरक स्वरूप है। इसकी अधिकांश कथाएँ किसी-न-किसी नैतिक शिक्षा या जीवन-संदेश के साथ समाप्त होती है। उन कथाओं के माध्यम से सत्य, ईमानदारी, धैर्य, परोपकार, मित्रता और कर्तव्यपालन जैसे मूल्यों का महत्त्व बताया गया है। कथाओं में यह संदेश छिपा है कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। दुष्ट और छलपूर्ण आचरण अंततः विनाश की ओर ले जाता है, जबकि सद्गुण और धर्म का मार्ग अंततः सफलता और सम्मान दिलाता है। जीवन के सम्बन्ध में वर्णित है कि "जीवन की कथा सरल नहीं है, वह अनुभवों की जटिल श्रृंखला है।"8.

कथासरित्सागर की मूल चेतना यह संकेतित करती है कि जीवन केवल श्वेत श्याम नहीं अपितु अनेक रंगों से बना है। यहाँ नैतिकता किसी एक सूत्र में आबद्ध होकर अनुभव और परिस्थिति से विकसित होती है। यह प्रवृत्ति ही आगे चलकर आधुनिक बोधकथाओं की आधार भूमि बनती है।

हालाँकि प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य चेतना अत्यन्त समृद्ध रही है फिर भी यह स्वीकारना होगा कि उनकी कुछ सीमाएँ भी हैं। अधिकांश कथाएँ सामंती या राजसत्तात्मक समाज की पृष्ठभूमि में रची गई हैं, जहाँ सत्ता वर्ग और लिंग-सम्बन्ध अपेक्षाकृत स्थिर थे। आधुनिक समाज में जहाँ लोकतंत्र, समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मूल्य प्रमुख हैं, वहाँ इन कथाओं का सीधा अनुकरण सम्भव नहीं है और यहीं से पुनर्पाठ की आवश्यकता जन्म लेती है। प्राचीन बोधकथाओं के मूल मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए उन्हें नए सन्दर्भों में ढालना, यह समकालीन रचनाकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है जिसे शिव नारायण सिंह ने न केवल स्वीकारा अपितु उसे दिशा देने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ नैतिक द्वन्द्व से आत्मबोध तक- हिन्दी साहित्य की, बोधपरम्परा का मूल उद्देश्य जीवन के नैतिक और व्यावहारिक सत्य को सरल प्रभावी और प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत करना रहा है। इसी परम्परा को नए सामाजिक और वैचारिक सन्दर्भों, दिनों में आगे बढ़ाने का भगीरथ प्रयास कर रहे हैं शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के माध्यम से। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ नैतिक शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास पर केन्द्रित रहती हैं। दरअसल आज के भोगवादी समाज में मनुष्य का सर्वाधिक नैतिक पतन हुआ है। यद्यपि कि नैतिकता ही वह अनिवार्य तत्व है जो मनुष्य और समाज के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाती है। जैसा कि हमें विदित है कि नैतिक मूल्य के बिना किसी भी समाज का जीवित रहना अत्यन्त कठिन है और इसीलिए समाज में एक नैतिक ढाँचा का तैयार होना जरूरी ही नहीं अनिवार्य है।

आधुनिक सन्दर्भ में शिव नारायण सिंह विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में कथा-कथन पद्धति के माध्यम से उनके भीतर नैतिक गुणों का रोपण बड़े ही सरल और सुरुचिपूर्ण ढंग से करते हैं। उनकी कथाओं में प्राचीन बोधकथाओं का पुट तो है किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में। उनके सम्बन्ध में प्रो० वीरेन्द्र नारायण यादव कहते हैं- "यहाँ एक बात कहनी ज्यादा समीचीन है कि दूसरी शताब्दी में पं0 विष्णु शर्मा द्वारा राजा के पुत्रों को अर्थात् शेर के बच्चों को चूहा, बिल्ली, भालू, कछुआ, लोमड़ी, हाथी आदि को माध्यम बनाकर जो शिक्षा देने की कोशिश की गई है, वही काम आज शिव नारायण सिंह जी अपने उद्धरण में शाश्वत सत्य एवं दैनंदिन में घटने वाली सच्ची घटनाओं के साथ-साथ जीव-जंतुओं

की प्रकृति, प्रवृत्ति एवं जीवनानुभवों की बात करते हैं, जो कहीं ज्यादा सटीक एवं सार्थक प्रभाव छोड़ते हैं। निश्चित ही उनका यह प्रयास ज्यादा प्रभावी, असरदार एवं उनकी सोच के अनुरूप दिशा देकर लक्ष्य तक पहुँचाने में भी अपनी भूमिका अदा कर रहा है। उन्हें जहाँ से भी मिला, लगा, जँचा उसे अपनी विधा में समेटकर, सहेजकर विद्यार्थियों के समक्ष परोसने की एक ऐसी कोशिश की है, जो निश्चित ही बेमिसाल, लाजवाब और अनुकरणीय है।"9

इस सम्बन्ध में शिवमूर्ति जी लिखते हैं- "कथा साहित्य में बहुत सारी कथाएँ मात्र पठनीयता या श्रोता को अपने साथ बाँधे रखने की क्षमता के कारण महत्त्वपूर्ण रही हैं, शिव नारायण सिंह का कथा संसार भी ऐसी तमाम कथाओं से भरा पड़ा है। उसके ऊपर छात्रों से उद्बोधन और संवाद का आवरण चढ़ा हुआ है। ऐसी ही आवरण के कई परतों में लपेटकर छोटी-सी कथा को पेश करना शिव नारायण सिंह के किस्सागोई की विशेषता है।" 10

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें नैतिकता किसी स्थिर और निश्चित सूत्र के रूप में प्रस्तुत नहीं होती । उनकी कथाओं के पात्र प्रायः ऐसी परिस्थिति में दिखाई देते हैं, जहाँ सही और गलत का निर्णय सहज नहीं होता । यह नैतिक द्वन्द्व ही कथा को गतिशील बनाता है। उदाहरण के लिए जब कोई पात्र अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और सामाजिक जिम्मेदारी के बीच अटकता है, तब उसके सामने जो मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है, वही कथा का मुख्य बिन्दु बन जाता है। इस प्रकार वे विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष उपदेश देने के बजाए उसे जीवन की जटिलताओं से रूबरू होने और उससे निकलने का मार्ग सुझाते हैं।

उनकी बोधकथाओं में सामाजिक यथार्थ की उपस्थिति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। वे केवल व्यक्तिगत नैतिकता की बात नहीं करते अपितु समाज में व्याप्त अनीति, असमानता और संवेदनहीनता जैसे यक्ष प्रश्न को भी कथा के माध्यम से उठाते हैं। जैसा कि डॉ0 ब्रजेन्द्र त्रिपाठी लिखते हैं, "बच्चे ही हमारे भावी नागरिक हैं और हमारा भावी समाज कैसा होगा, इन्हीं पर निर्भर है। वर्तमान में जिस तरह जीवन मूल्य क्षरित हो रहे हैं, जिस तरह हमारे संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, जिस तरह उपभोक्तावाद और बजारवाद के कुचक्र में फँसते जा रहे हैं, उसकी काट यही है कि बचपन से छात्रों में नैतिकता के संस्कार डाले जाएँ, उन्हें एक सार्थक जीवन दृष्टि दी जाए, उन्हें संस्कारवान और एक संवेदनशील मनुष्य बनाया जाए उनके सहज विवेक को जाग्रत किया जाए और यह काम शिव नारायण सिंह बड़ी सक्षमता और ईमानदारी से अपनी कथाओं के माध्यम से कर रहे हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह पं. विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कथाओं के माध्यम से किया था। यह शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग है। बच्चों को नित्य एक नई कथा सुनाकर उन्हें भावी जीवन के लिए तैयार करने का काम बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है।" 11

शिव नारायण सिंह ने अपनी प्रार्थना सभा के उद्बोधन के लिए प्राचीन स्रोतों का तो उपयोग किया ही साथ ही प्राचीन एवं आधुनिक युगीन महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जुड़ी कथाओं को भी आधार बनाया। इन कथाओं के माध्यम से वे विद्यार्थियों के मन-मातिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं और उनके बहुमुखी विकास को सुनिश्चित करते हैं। वस्तुतः इन कथाओं के माध्यम से वे प्राचीन गुरुकुल की परम्परा को साकार कर रहे होते हैं। जहाँ बच्चों को आदर्श जीवन पद्धति की शिक्षा प्रदान कर संस्कारवान बनाया जाता था। वे छात्रों को आधुनिक जीवन-सन्दर्भों में अपने कर्त्तव्य का बोध कराते हैं, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पर्यावरण के प्रति उनको दायित्वबोध कराते हैं। वे उन्हें एक सहज, संवेदनशील और कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना चाहते हैं और इसके लिए अपने उद्बोधन में उन तमाम छोटी-बड़ी कथाओं तथा चरित्रों को भी शामिल कर लेते हैं जो कहीं-न-कहीं हमें प्रेरणा देती हैं।"12

इस सन्दर्भ में कतिपय मूर्धन्य विद्वानों के कथन अवलोकनीय हैं। डॉ. केदारनाथ सिंह कहते हैं कि "विष्णु शर्मा के बाद आज तक इस क्षेत्र में कोई काम नहीं हुआ था और पठनीय एवं दिलचस्प कथा-संकेतों के माध्यम से छात्रों को शिक्षित करने यह अभिनव प्रयोग सराहनीय है। प्रसिद्ध कथाकार शिवमूर्ति का मानना है कि ये लघुकथाएँ बच्चों को व्यावहारिक नैतिक और सांस्कृतिक, ज्ञान देने में बहुत

उपयोगी है।"13

शिव नारायण सिंह के बोध कथाओं की समकालीन प्रासंगिकता और शैक्षणिक महत्त्व- वर्तमान समय तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का काल है, जहाँ पारम्परिक जीवन-मूल्य निरन्तर चुनौती के घेरे में हैं। उपभोक्तावाद तीव्र प्रतिस्पर्धा, स्वार्थातिरेक, और सत्ता केन्द्रित प्रवृतियों ने नैतिकता के पारम्परिक मानदण्डों को कमजोर किया है। परिणामस्वरूप व्यक्ति के सामने सही- गलत का निर्णय करना कठिन होता जा रहा है जिससे नैतिक भ्रम की स्थिति उपस्थित होती जा रही है। सामाजिक सम्बन्धों में विश्वास, संवेदना और सहयोग की जगह संदेह, अलगाव और असन्तुलन बढ़ रहा है। परिवार, समाज और संस्थाओं के स्तर पर यह विघटन स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। इन परिस्थितियों में शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ मनुष्य को आत्ममंथन और मूल्य पुनर्स्थापना की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक तत्व की भूमिका निर्वहन में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

वे कॉलेज की प्रार्थना सभा के पश्चात् अपने विद्यार्थियों को बोधकथाओं के माध्यम से निरन्तर ह्रास होते जीवन- मूल्यों के प्रति सजग करते हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में जब सद्भावना और सहिष्णुता, प्रेम, अहिंसा, शांति जैसे मूल्य अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं उस समय सकारात्मक सोच के मानवीय गुणों से प्रेरित शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के अनेक प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से विद्यार्थियों के भीतर ऐसे गुणों की रोपित करने का प्रयास करते हैं जिससे उनके, व्याक्तित्व का पूर्णतः रूपान्तरण हो सकना एक सच्चाई के रूप में दृष्टिगत होता है।

इस सम्बन्ध में कालीचरण मत व्यक्त करते हैं- "शिव नारायण सिंह की पुस्तकें 'विद्यार्थियों से...' सब कुछ छोड़कर उपभोक्तावाद, भौतिकता और तात्कालिक उपलब्धियों के पीछे दीवानी नई पीढ़ी को कुछ क्षण ठहरकर आत्ममन्थन एवं आत्मचिन्तन के लिए विवश करती हैं। छोटे-छोटे कथा सन्दर्भों को लेकर शाश्वत जीवन मूल्यों का गहरा विश्लेषण करते हुए सहज शिक्षा बोध कराने का अनूठा ढंग आप और आप की कृतियों को स्वमेव विशिष्ट बना देता है।"14

शिव नारायण सिंह विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए 'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-दो) में 'लोभ' नामक बोधकथा में कहते है, "प्रिय विद्यार्थियों, जो भी बातें आपको बताई जाती हैं, समझाई जाती हैं, कहा जाता है कि आप इन्हें अपने आचरण में उतारिए, काश! ऐसा करते आप, तो मैं समझता हूँ कि आपको आगे कुछ बताने की जरूरत ही नहीं पड़ती। एक ही बात आपके जीवन को बदल देती... आखिर आप में परिवर्तन कब होगा, कब सीखेंगे आप ? अब आप बड़े हो रहे हैं, आप समझदार हो रहे हैं। अब आपको अपने अंदर यह बात लानी होगी, सोचने- विचारने की क्षमता विकसित करनी होगी कि क्या सही है और क्या गलत है ? अगर आप इस दिशा में एक कोशिश करते हैं, एक प्रयास करते हैं तो निश्चित रूप से आपको आपका लक्ष्य मिलेगा। आप अपने जीवन उद्देश्य में सफल होंगे।"15

इसी प्रकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय का कथन है, "समाज में सुधार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। पथभ्रष्ट व्यक्ति को नैतिक स्तर पर ले आना एक दुष्कर कार्य है। इस दुष्कर कार्य को साधने हेतु समाज और देश के उत्कर्ष के लिए श्री सिंह ने अकेले ही अपने जीवन को सत्य का प्रयोग बना दिया। जैसे समुद्र में बूँद की क्या गिनती है? बूँद का अस्तित्व ही क्या है ? पर समुद्र भी तो बूँदों से ही मिलकर बना है।"16

शैक्षणिक महत्त्व- वैश्वीकरण के वर्तमान युग में सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी विकास का सर्वाधिक कुप्रभाव बालमन पर पड़ा है। पुराने समय में बच्चों को किस्से-कहानियों के माध्यम से संस्कारित करने की विधा विद्यमान थी। संयुक्त परिवार में दादा-दादी, माता -पिता, चाचा-चाची, ननिहाल में नाना-नानी परिवार में बच्चों में जीवन-मूल्य, ईमानदारी करुणा, उत्साह, प्रेरणा, सहयोग, संवेदनशीलता, राष्ट्रीयता, मानवीयता आदि गुणों को समाविष्ट करने के लिए किस्से- कहानियों का सहारा लेते थे और उनके नानाविध दैनंदिन कार्यों को सम्पन्न कराते समय उन्हें सुनाया करते थे।

आज के, एकाकी समाज में इस विधा का लोप होने से जीवन-मूल्य, संस्कार, चरित्र सभी का तेजी से अवमूल्यन हो रहा है। फलस्वरूप अपनी सभ्यता,

संस्कृति के साथ पीढ़ियों को बचाने का संकट भी उत्पन्न हो गया है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा से ही विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क में सकारात्मक सोच और प्रेरणा भरने वाली शिक्षा का समावेश किया जाना न केवल समय की आवश्यकता है अपितु नितान्त अनिवार्य है। ऐसे में शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ एक रोशनी के रूप में समाज के मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन कर सकती हैं।

अपनी बोधकथाओं के माध्यम से वे अपने विद्यार्थियों के मानस का विस्तार इस तरह से कर देते हैं कि वे किशोरावस्था से युवावस्था में पदार्पण करते ही न केवल मानव सेवा और देश सेवा का महत्त्व समझने लगते हैं, अपितु प्रत्येक सांसारिक झंझावातों का सामना करने के लिए मानसिक दृढ़ता प्राप्त करने में बहुत हद तक समर्थ हो जाते हैं। अपने अदम्य साहस, परिश्रमशीलता, लगनशीलता एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व की आभा में उनके द्वारा विद्यार्थियों को संस्कारित करने की जो पहल की जा रही है वह अद्‌भुत है, बेमिशाल है।

इस सम्बन्ध में डॉ. रामनिवास शर्मा विचार व्यक्त करते हैं, "शिव नारायण सिंह जी बड़े ही विनम्र, मृदुभाषी, अद्‌भुत किस्सागो, विलक्षण प्रतिभा के धनी और गंभीर विचारक हैं। वे अपनी बोधकथाओं के माध्यम से बालकों को जीवन का सही पाठ पढ़ा रहे हैं। शाश्वत जीवन-मूल्यों की सजीव व्याख्या प्रस्तुत कर उनके महत्त्व को स्थापित कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर पंचतंत्र, हितोपदेश तथा कथासरित्सागर की परम्परा में एक नवीन अध्याय जोड़ रहे हैं।"17

यहाँ पर डॉ. मैनेजर पाण्डेय का कथन-"शिव नारायण सिंह की कही और छपी हुई कथाएँ उसी भारतीय कथा की महान परम्परा का आधुनिक विकास है। इनकी बोधकथाओं में बोधकथा का आधुनिक रूप ही नहीं है कथा और कथ्य की दृष्टि से आधुनिक है और समकालीन भी।"18

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-सात) 'मैं और मेरा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - प्रिय विद्यार्थियों, अभाव बड़ी बात है क्योंकि यही सफलता की राह दिखाती है और जिज्ञासा उससे भी बड़ी बात है जो तुम्हें सही राह पर चलने का माद्दा देती है।"19

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-सात) बोधकथा 'समभाव' में साधना में रत एक साधक की कथा है इस कथा माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते है कि- "प्रिय विद्यार्थियों, मैं जानता हूँ, कभी मेरी बातें आपको समझ से परे लगती हैं, कभी-कभी मेरी बातें समझ में नहीं आती, लेकिन वास्तव में ये बातें आपके लिए औषधि हैं, जो कड़वी तो होती हैं लेकिन होती अरिहार्य हैं। इसके सेवन के बिना मुक्ति पाना सम्भव ही नहीं है।" 20

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) शिव नारायण सिंह अपने विद्यार्थियों को 'एकाकार' बोधकथा के माध्यम से प्रेरित करते हुए कहते हैं कि-" मैंने जो यह रास्ता बताया वह कुछ अलग से नहीं है। यह बात बहुत सीधी और सपाट है बस मन में इसे बैठाने की जरूरत है, बस इस बात को मान लेने की जरूरत है कि मुझे ऐसा कर गुजरना है।"21

'विद्यार्थियों से...' खण्ड- पाँच में 'किताबी ज्ञान' बोधकथा में शिव नारायण सिंह कहते हैं कि- प्रिय विद्यार्थियों, आज की जरूरत है शिक्षा को इन किताबों से बाहर निकालना होगा, निकालने की कोशिश करनी होगी और निकालकर ही मानना होगा। आपको यह ध्यान रखना है कि शिक्षा वातावरण प्रभावित न हो जबकि वातावरण शिक्षा से प्रभावित हो।" 22

निष्कर्ष- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन बोधकथाओं की मूल्य-चेतना भारतीय साहित्य की एक सुदीर्घ और समृद्ध परम्परा है जो समय के साथ नए रूप ग्रहण करती रही है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ इसी परम्परा की आधुनिक विस्तार हैं। वे यह सिद्ध करती हैं कि साहित्य तभी जीवन्त रहता है, जब वह अतीत से संवाद करता हुआ वर्तमान की चुनौतियों का सामना करे। शिव नारायण सिंह ने बोधकथा को नैतिक उपदेश से मुक्त कर मानवीय अनुभव और सामाजिक विवेक का माध्यम बनाया है। इस दृष्टि से उनकी कथाएँ न केवल साहित्यिक रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, अपितु सामाजिक और शैक्षणिक रूप से अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

वस्तुतः, शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ

नैतिक द्वन्द्व से आत्मबोध तक की एक महत्त्वपूर्ण यात्रा का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे प्राचीन बोधकथा परम्परा को आधुनिक सन्दर्भों में पुनर्स्थापित करते हुए मनुष्य को आत्म- चिन्तन संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना की ओर प्रेरित करती हैं। इस दृष्टी से उनकी बोधकथाएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं, बल्कि जीवन को समझने और उसे बेहतर बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण वैचारिक हस्तक्षेप भी हैं।

1. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 109
2. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 57
3. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -176
4. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -16
5. पंचतंत्र, मित्रभेद कथा-1; संपादक- राजेन्द्र लाल मिश्र चौखंभा प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ संख्या -12
6. जातक कथा; शश- जातक, अनु0 राहुल सांकृत्यायन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 87
7. हितोपदेश; मित्रलाभ, संपात वासुदेव शरण अग्रवाल साहित्य भवन, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या –34
8. कथासरित्सागर; तरंग- 5 ; पं. दुर्गाप्रसाद द्विवेद्वी, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या – 211
9. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -94
10. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -101
11. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -59
12. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -58
13. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -58
14. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -80
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 92
16. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 44 – 45
17. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -74
18. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -16
19. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 91
20. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 184
21. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 358
22. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 442

कथा-कथन परम्परा का अभ्युत्थान : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ

डॉ. वीरेन्द्र कुशवाहा
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना–

शिव नारायण सिंह उत्तर प्रदेश के एक छोटे से जनपद देवरिया में देश के भविष्य के निर्माताओं के निर्माण स्थली अर्थात् विद्यालय के संस्थापक प्रधानाचार्य हैं, जिनका एक उद्देश्य यह भी है कि वह अपने विद्यार्थियों को वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुरूप तैयार कर सकें। शिव नारायण सिंह विद्यार्थियों में लगातार सीखने की प्रवृत्ति बनाये रखने के लिए विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रतिदिन एक नई कहानी सुनाते हैं। जिससे बच्चों के अन्दर कथा, कहानी के माध्यम से नई-नई चीजों को सीखने समझने में सहायता मिलती है और अपने पाठ्यक्रम को ठीक से समझने में मदद मिलती है, कहानी सुनने से विद्यार्थियों की याद्दाश्त भी मजबूत बनती है। विद्यार्थियों को अपनी बात को अपने उत्तर को कथा कहानी के माध्यम से सिलसिलेवार रखने में मदद मिलती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में हम कथा-कथन परम्परा के उद्भव, विस्तार व अभ्युत्थान को शिक्षा जगत सहित समाज में उसके प्रभाव व महत्ता और शिव नारायण सिंह व अन्य महत्त्वपूर्ण कथाकारों के इस सन्दर्भ में विचारों से अवगत हो सकेंगे। वास्तव में इस शोध आलेख के माध्यम से शिक्षा जगत में कथा चेतना के प्रभाव व उसकी महत्ता का अवलोकन करते हुए बच्चों, विद्यार्थियों व पाठकों के अन्दर चेतना विकसित करने में शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं का अवलोकन करेंगे। यह शोध पत्र इन्हीं की बोधकथाओं पर आधारित है।

बीज-शब्द- भौगोलिक चेतना, राजनैतिक चेतना, चेतना-सम्पन्न, भाषिक, परम्परा, दुलर्भ, समान उपलब्धि, रोजमर्रा, लोककथाएँ, पौराणिक कथाएँ।

शोध पत्र– शिव नारायण सिंह एक कर्मठ व्यक्तित्व के धनी एवं अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक शिक्षक हैं। एक शिक्षक के ऊपर सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भावी पीढ़ी के अन्दर नैतिक चेतना, सामाजिक चेतना, राजनैतिक चेतना व भौगोलिक चेतना जैसे मूल्यों को विकसित करना है। हमारे भारतवर्ष व समाज में ऐसे मानवीय मूल्यों को स्पष्टता प्रदान करने की जिम्मेदारी शिक्षकों के ही कन्धों पर है। शिव नारायण सिंह अपनी इस जिम्मेदारी को भली-भाँति समझते हैं और इसे पूर्ण करने का प्रयास भी करते हैं। मानवीय मूल्यों को विकसित करने का तरीका प्रत्येक शिक्षक का अलग-अलग होता है।

विद्यार्थियों को अलग- अलग दृष्टिकोणों से जागृत कर उन्हें चेतना-सम्पन्न बनाने के कारण शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। उनकी चेतना-सम्पन्न बोधकथाएँ संघर्षों से भरे हुए मानव जीवन के यथार्थ का बोध कराती हैं। जो विद्यार्थियों को भावी भविष्य के लिए तैयार करती है एवं सजग, जिम्मेदार व जागरूक नागरिक बनाने में अपना योगदान देती हैं।

शिव नारायण सिंह प्राचीन कालीन कथा-कथन परम्पराओं को आगे बढ़ाते हैं और उसके बाद हुए रिक्तता को भरते हैं। 'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-एक) 'शिक्षा की व्यापकता' बोधकथा में वे कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों, निश्चित रूप से शिक्षा का लाभ उसके साथ-साथ आपको भी मिलेगा। क्योंकि पढ़ाई तो तभी पूरी होती है जब आप किसी को पढ़ाते हैं। पढ़ने के साथ-साथ अगर आप पढ़ाई का कार्य करें तो निश्चित रूप से आपकी पढ़ाई पूरी मानी जायेगी और तब उसमें कोई भी चीज शेष नहीं बचेगी।" 1

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) 'तुलना' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- प्रिय विद्यार्थियों, "अगर आप कुछ ठीक नहीं कर रहे तो उसे ठीक करने की जरूरत है और उसे आप

स्वयं ही ठीक कर सकते हैं। हम आपको बता सकते हैं, हम आपको समझा सकते हैं लेकिन उसे ठीक तो आप ही को करना है।" 2

कथा-कथन का उद्भव– कथा-कथन परम्परा मानव सभ्यता जितनी ही पुरानी है, जो मौखिक रूप से कहानियों, मिथकों और लोककथाओं के माध्यम से पीढ़ी- दर- पीढ़ी ज्ञान, नैतिकता और संस्कृति का हस्तांतरण करती चली आ रही है। यह परम्परा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षा, ऐतिहासिक संरक्षण और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का सशक्त माध्यम है, जिसमें दादा-दादी की कहानियों से लेकर जातक, रामायण, महाभारत और पंचतंत्र तक शामिल हैं।

भारतीय साहित्य परम्परा में बोधकथाओं का विशेष स्थान रहा है पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाओं से लेकर आधुनिक काल तक बोधकथाएँ मानव जीवन को दिशा और दशा देने का कार्य करती रही हैं। यह कथाएँ केवल कथा विन्यास ही नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों की संवाहक होती हैं। इसी परम्परा को आधुनिक सन्दर्भ में सशक्त रूप में आगे बढ़ाने का कार्य शिव नारायण सिंह ने अपनी बोधकथाओं के माध्यम से किया है। आज के समय में जहाँ नैतिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक विघटन और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, वहीं शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ जीवन को संतुलन प्रदान करने वाली प्रेरणा स्रोत सामग्री के रूप में उभरती हैं। ये कथाएँ व्यक्ति के भीतर सुसुप्त नैतिक चेतना को जाग्रत करती हैं और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराती हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) में 'स्वर्ग की यात्रा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आपमें जो कमियाँ हैं, आप जो गलतियाँ करते हैं, आप जो लापरवाही करते हैं, आप स्वयं उनका मूल्यांकन करें। इस प्रकार आप बेहतर तरीके से जान पायेंगे अपने बारे में। ऐसा होते ही आपका मार्ग स्वयं प्रशस्त हो जाएगा, आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जायेंगे।" 3

'कथ्'धातु से निकला शब्द-समूह भारतीय भाषिक-परम्परा में अत्यन्त समृद्ध है। 'कथ्' में कहना, वर्णन करना, समाचार देना, संकेत करना इत्यादि सब शामिल हैं। इसी से बने 'कथनम्' का तद्भव 'कथन' है; जो किसी बात को कहने की क्रिया भी है और कहे गए भाव का नाम भी।

'कथ्' बोलने पर अंत में 'ह्' सुनाई देता है, यही से 'कह' बन गया। यहीं से कहना, कह, कहा, कहानी इत्यादि शब्दों का परिवार विकसित हुआ। इस परिवार का सबसे प्रसिद्ध शब्द है— कथा। कथा का अर्थ केवल 'कहानी' नहीं, बल्कि वृत्तांत, वर्णन, दास्तान या कल्पित आख्यान भी है।

कथन का अर्थ ही 'कहा हुआ' है, इसीलिए 'कथन किया' या 'उसके कथन से स्पष्ट है...' यह सही प्रयोग है। भाषा के विशेषज्ञ 'कथन कहा' और 'कथन किया' — दोनों से बचते हैं और बचने का परामर्श भी देते हैं और सीधे कथन को सन्दर्भित करते हैं, जैसे— 'उसके कथन का अभिप्राय...'।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'स्वध्याय' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, जरूरत है स्वाध्याय की और अध्यवसाय की। स्वाध्याय के साथ-साथ आप अगर अध्यवसाय करते हैं, जो भी काम अपने जिम्मे लेते हैं, पूरी ईमानदारी से लग जाते हैं और अगर यह निश्चय कर लेते हैं कि आपको आपका लक्ष्य चाहिए ही, तो आप अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे, इसमें कोई दो राय नहीं है।" 4

भारतीय परम्परा में सर्वप्रथम वेदों में कथा का उपयोग ज्ञान या चिन्तन को सुग्राह्य बनाने के लिए किया गया है। उपनिषदों में इस परम्परा का विकास देखा जा सकता है। पर उपदेश या शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर कथा के उपयोग का सबसे पुराना उदाहरण जातक कथाएँ हैं। कथासरित्सागर में भी यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

प्राचीन काल से ही कथा, कहानियाँ भारत में बोली, सुनी और लिखी जा रही है। ये कथा, कहानियाँ ही हैं जो हमें हिम्मत से भर देती हैं और हम असम्भव कार्य को भी करने को तैयार हो जाते हैं और अत्यन्त कठिनाइयों के बावजूद ज्यादातर कार्य पूरे भी होते हैं। शिवाजी महाराज को उनकी माता ने कहानी सुना सुनाकर इतना महान बना दिया कि शिवाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज बन गए।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'वरदान' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आपको बहुत बड़ी जिम्मेदारी हासिल करनी है, यानी कि आपको बड़ा बनना है, अपने कार्यक्षेत्र में बड़ा होना है, दुनिया के लिए आपको कुछ कर गुजरना है तो आप अपनी जिम्मेदारियों को, जो ईश्वर द्वारा आपको दी गयी हैं, निश्चित रूप से पूरा करना

है। ईश्वर तो आपकी ही तलाश में है, ईश्वर को कहीं खोजने की जरूरत नहीं है।" 5

जातक कथाओं में वर्णन है कि- "गुणों को गुणी ही जानता है, निर्गुणी नहीं; बलवान ही बल को जानता है, निर्बल नहीं।" 6

पंचतंत्र कथा में भी इससे सम्बन्धित यह नीतिवाक्य आता है कि शत्रु को समझे बिना आक्रमण न करो। "जो शत्रु की शक्ति को जाने बिना ही उस पर आक्रमण करता है, वह नष्ट हो जाता है—जैसे आग में उड़ने वाला पतंगा।" 7

"योजना से अजेय भी हराया जा सकता है। भले ही शत्रु अजेय लगे, शान्त मन से सोच-विचार और सावधानीपूर्वक योजना से वह पराजित किया जा सकता है, जहाँ सीधा आक्रमण असफल रहता है।" 8

"सतर्क दुर्बल भी बलवान को हरा सकता है। सजग और सावधान व्यक्ति, चाहे दुर्बल ही क्यों न हो, शक्तिशाली शत्रु पर विजय पा सकता है; जबकि भरोसे में रहने वाला बलवान भी कमज़ोर से हार सकता है।" 9

" जिस वृक्ष की छाया में बैठे अथवा लेटे, उसकी शाखा तक न तोड़ें।" 10

पट्टनायक अपनी रचनाओं में अक्सर यह स्थापना देते हैं कि मात्र संस्कृत का ज्ञान या उच्च कुल में जन्म लेना ही ज्ञान की गारण्टी नहीं; सच्चा बोध विनम्रता और सेवा में है।

"हृदयवान सदैव प्रज्ञावान होता है और बुद्धिमान ज्ञानवान यह रहस्य है इसे समझने के लिए इसमें डूबना पड़ता है जो जितना डूब जाता है वह उतना ही पा जाता है जो डूबने से घबराता है वह सतह पर ही रह जाता है।" 11

बोधकथा के सामाजिक-नैतिक आयाम को सन्दर्भित करने हेतु ये पंक्तियाँ अक्सर उद्धृत होती रहती हैं- "तुझसे भी दिल-फ़रेब हैं ग़म रोज़गार के..." 12

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'आदर्श' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " प्रिय विद्यार्थियों, ऐसी कोई घटना आपकी जानकारी में आती है, आपके संज्ञान में आती है तो आप इस आदर्श को खुलकर प्रदर्शित करें और इसका एहसास अपने साथियों को करायें। ऐसा प्रयास कीजिए कि आप उदाहरण बन जायें ताकि आपको भी यहाँ कोट किया जाए, आपका भी यहाँ उदाहरण दिया जाए।" 13

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'थोड़ा-सा लालच' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, समझदार लोग वे होते हैं, जो एक बार गलती करते हैं और फिर उस गलती को रिपीट नहीं करते हैं। एक बार नम्बर कम मिला, दूसरी बार किसी भी हाल में नम्बर कम नहीं मिलना है। अपनी जान पर उतर आयेंगे। बुद्धिमान लोग कौन होते हैं ? जो देखते हैं, बगल वाले को नम्बर कम मिला है कहीं हमें भी कम न मिल जाए, भिड़ जाते हैं, लग जाते हैं।" 14

इस प्रकार शिव नारायण सिंह प्राचीन भारतीय कथा-कथन परम्पराओं को वर्तमान सामयिक विषयों से जोड़ते हुए अपनी कथा कथन परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। शिव नारायण सिंह जो बोधकथाएँ प्रार्थना सभा में सुनाते हैं, उन्हें वे स्वयं रचते हैं, स्वयं गढ़ते हैं, स्वयं बुनते हैं और स्वयं बनाते हैं। उनकी कथाओं का उद्देश्य स्पष्ट है कि वह विद्यार्थियों को जीवन मूल्य सिखाकर, नैतिक, चारित्रिक, मानवीय व जिम्मेदार नागरिक बनना चाहते हैं।

कथा-कथन परम्परा का अभ्युत्थान और विकास– एक कथा एक कहानी ही है, जो स्थान और समय में घटित होने वाली घटनाओं की एक श्रृंखला का विवरण है और जो कारण और परिणाम के तर्क से जुड़ी होती है।

कथा- कथन का अर्थ है वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं, पात्रों और विचारों को एक व्यवस्थित संरचना (कथानक) में मौखिक या लिखित रूप से सुनाना या वर्णन करना। यह प्राचीन काल से चली आ रही एक कला है, जिसका उपयोग मनोरंजन, ज्ञान साझा करने, भावनात्मक जुड़ाव और संवाद के माध्यम के रूप में किया जाता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'मानवता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, मनुष्य वही है, जो मनुष्य के लिए जीता है। मनुष्यता आपके अन्दर कब आएगी ? यह तो आपमें अन्तर्निहित है, आप इसे विकसित कब करेंगे ? विकास का यही क्रम अगर अभी से आपके अन्दर प्रारम्भ नहीं हुआ तो बाद में कुछ नहीं हो पाएगा क्योंकि यही उपयुक्त अवसर है।" 15

भारत की प्राचीन मौखिक विधा का आधुनिक रूप हैं, ये बोधकथाएँ जो सांस्कृतिक विरासत, नैतिक मूल्यों और सामाजिक संदेशों को प्रदर्शन कला के

माध्यम से पुनर्जीवित कर रहा है। रामायण-महाभारत जैसे महाकाव्यों से प्रेरित यह विधा, लोककथाओं, लोकनृत्य और संगीत को शामिल कर समकालीन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रही है।

प्राचीन परम्परा अथवा मूल परम्परा भारत में कथावाचन की समृद्ध विरासत रही है, जहाँ कहानियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ती थीं। यह विधा मिथकों, इतिहास और सामाजिक शिक्षा का एक सशक्त माध्यम रही है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'दुर्लभ' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, मूल्य किस चीज के लिए लगता है ? आपको पता है, जो चीज उपलब्ध नहीं है उसके लिए। जैसे हमारे यहाँ क्या है, हवा, पानी बहुत है, एवरीव्हेयर अवेलेबल है।" 16

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'थोड़े का महत्त्व' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, मेरा कहना है कि जो आप सोचते हैं वह करिए, केवल सोचते रहेंगे तो कुछ नहीं होना है। क्योंकि जब यह समय बीत जाएगा, यह क्षण बीत जाएगा, यह वर्तमान बीत जाएगा तो फिर कुछ कर नहीं पायेंगे।"17

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'समान उपलब्धि' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अगर आपने भी थोड़ा विवेक का इस्तेमाल किया हो, तो आपकी भी वही स्थिति होगी, जो चौथी वाली की हुई, जिसके अन्दर क्रिएटिविटी है। तो क्रिएटिविटी कब आएगी ? जब आप विवेक का इस्तेमाल करेंगे और कुछ करना चाहेंगे।" 18

आधुनिक कथाकार अपनी जड़ों को खोजने, पुरानी लोककथाओं को फिर से जीवन्त करने के लिए और अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने के लिए उत्सुक हैं, जो उनकी पहचान को फिर से स्थापित कर रहा है यहाँ दर्शनीय है।

"कर्ज का बोझ सिर पर लदा जा रहा है, रोज डिग्रियाँ हो रही हैं। जिससे लेते हैं, उसे देना नहीं जानते, चारों तरफ बदनाम है। मैं तो ऐसी जिन्दगी से मर जाना अच्छा समझता हूँ !" 19

'छाया' जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी-संग्रह है, इस संग्रह में 11 कहानियाँ हैं; जिसमें कथा-साहित्य पर टिप्पणी देखा जा सकता है।

'विपथगा' सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की पहली कहानी-संग्रह है। यह संग्रह जेल में लिखी कहानियों के लिये विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

"आदमी मरने के बाद कुछ नहीं सोचता आदमी मरने के बाद कुछ नहीं बोलता कुछ नहीं सोचने और कुछ नहीं बोलने पर आदमी मर जाता है।" 20

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'नीयत और नियति' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, चीजों को जानिए, समझिए, मनन कीजिए और बहुत ठीक ढंग से जान लीजिए। धोखे में न रहिए, जब तक आप धोखे में रहेंगे, धोखे की सोचेंगे और धोखा देंगे किसी को, तो निश्चित ही परिणाम आपको धोखा ही मिलेगा। यह तो एकदम सत्य है, एकदम अकाट्य है, इसमें कोई भी परिवर्तन सम्भव नहीं है।" 21

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'बहरापन' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, इस पर विचार करें, सोचें, मनन करें। क्या आप कुछ अतिरिक्त नहीं कर सकते ? आप बहुत कुछ अतिरिक्त कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए अपने आपको प्रीपेयर करना होगा। उसके लिए उस तरह की सोच उत्पन्न करनी होगी। उसके लिए उतना आगे बढ़कर करना होगा। जब आप ऐसा सोचेंगे, ऐसा करने के लिए प्रवृत्त होंगे, ऐसा करने के लिए ठान लेंगे और कुछ कर दिखाने का जज्बा अपने अन्दर उत्पन्न कर लेंगे तो निश्चित ही आप वहाँ तक पहुँच जाएंगे।" 22

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'सन्त जनाबाई' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, इस दिशा में सोचें और विचार करें। जो भी काम आपके पास है वह छोटा-बड़ा नहीं होता। एक छोटा-सा पाठ ही हो या एक पेज का लेख ही हो, जो भी काम हो, जो आप लिखते हों, उसमें उपस्थित हों। आप कोई चीज पढ़ते हैं उसमें उपस्थित हों।" 23

इस दृष्टिकोण से भी शिव नारायण सिंह लोककथाओं, ऐतिहासिक वृत्तांतों और पौराणिक कथाओं को नई और समकालीन भाषा में प्रस्तुत करने का सतत प्रयास कर रहे हैं। यह अभ्युत्थान पुरानी पीढ़ियों के ज्ञान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का

एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया है, जो मौखिक परम्परा को लिखित और प्रासंगिक बनाए रख रहा है।

व्यक्तित्व निर्माण में योगदान– कहानी– क़िस्से सिर्फ़ मनोरंजन नहीं, व्यक्तित्व की "फ़ैक्ट्री" जैसा काम करते हैं— सुनने-पढ़ने वाला अपने भीतर मूल्यों, भावनाओं और व्यवहार के पैटर्न को गढ़ता है। कथाएँ पहचान और आत्म-समझ को विकसित कर मजबूत बनाती हैं।

कहानियाँ हमारे व्यक्तिगत नैरेटिव को आकार देती हैं; हम अपने मूल्यों-विश्वासों को कहानी के रूप में दोहरा कर यह तय करते हैं कि "मैं कौन हूँ"।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'परम सत्य' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, सत्य को पाने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आप इस बात को सुने, आप इन चीजों को ढूँढते हैं, आप ऐसा करने की कोशिश करते हैं। यदि आप चीजों को महसूस कर लें, अपनी फीलिंग को डेवलप कर लें तो सत्य को अकेले खोज लेंगे। वह दिन दूर नहीं जब ऐसा होना है, ऐसा होता है, ऐसा ही होगा।" 24

कथा कहानी सुनने-सुनाने से आत्म-खोज तेज़ होती है, अपनी ताकत-कमज़ोरी, विकास के पैटर्न साफ़ दिखते हैं, जिससे आत्म-जागरूकता बढ़ती है और जिम्मेदारी का बोध होता है। कहना होगा शिव नारायण सिंह की कथाएँ इसके लिए विख्यात है।

कह सकते हैं शिव नारायण सिंह अपनी कहानियों के माध्यम से बच्चों/विद्यार्थियों का नैतिक मूल्य और चरित्र गढ़ते हैं।

बचपन से सुनाई गई कहानियों से भावनात्मक जुड़ाव, मूल्यों की सीख, कल्पनाशीलता और संज्ञानात्मक विकास होता है। कहानी सुनाना मूल्यों को स्थापित करता है और मस्तिष्क की कसरत कराता है। छोटी-छोटी नैतिक कथाएँ सीधे सच्चाई, ईमानदारी, मेहनत, धैर्य जैसे गुणों को रोज़मर्रा के व्यवहार से जोड़ती हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'पूर्वानुमान' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "आपको इसका ध्यान रखना है, अगर चूक गये तो चूक गये, क्योंकि फिर कोई दूसरी प्रोसेसिंग नहीं होने वाली है, फिर कोई दूसरा अवसर नहीं मिलने वाला है, न ही फिर कोई दूसरा समय आने वाला है जिसमें आप कुछ विशेष कर जायें। आप जो भी करेंगे इसी प्रॉसेस में करेंगे, इसी क्रम में करेंगे, इसी क्षण करेंगे, तो निश्चित ही आपका लक्ष्य आपके करीब है।" 25

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'सुवास' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "सोचो, कितना अच्छा होता जब सभी सत्य के खोजी बन जाते, सभी सत्य के रास्ते पर चल पड़ते। वह दिन दूर नहीं है जब ऐसा ही होगा। क्योंकि पहला कदम बढ़ गया है और दूरी घटनी प्रारम्भ हो गयी है। ईश्वर आपको शक्ति दे, सद्बुद्धि दे, आप अपने कार्य को या यूँ कहूँ कि उसके दिए हुए कार्य को सम्पन्न करें क्योंकि आप उसके सबसे प्रिय हैं, उसके प्रतिनिधि हैं।" 26

साहित्य सृजन एक साधना है, जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भाव-योग कहा है। इसके लिए धैर्य, लगन, निष्ठा और एकाग्रता की जरूरत होती है। साहित्य साधना ईश्वर प्रदत्त गुण होता है जो मानव चेतना में निहित रहता है।

अपने आसपास की परिस्थितियों, घटनाओं, परिवेश से साहित्यकार को शब्दों में पिरोने के लिए सामग्री मिलती रहती है। जिसे रचनाकार लिखे बिना नहीं रह पाता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'स्वेच्छा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, तुम्हारी यात्रा बहुत लम्बी है। पहुँचने का मार्ग संकीर्ण है, उसमें एक साथ दो नहीं जा सकते हैं, उसमें एक साथ कई नहीं जा सकते। जब भी जाना होगा अकेले जाना होगा और जब तुम अकेले होगे रास्ता खुद-बखुद दिखाई देने लगेगा।" 27

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि जो भी समाज में घटित होता है या जो भी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा धार्मिक गतिविधि चल रही होती है, हर गतिविधि पर साहित्यकार की नजर रहती है जो साहित्यकार के मन पर गहरा प्रभाव डालती है। जिन विषयों, परिस्थितियों और गतिविधियों से रचनाकार का मन मस्तिष्क प्रभावित होता है, उन पर लिखे बिना उसे चैन, शान्ति और सुकून नहीं मिलता।

साहित्य सृजन जब इस प्रकार का हो कि पढ़ने वाले को लगे कि उसका ही दर्द बयाँ किया गया है, उसके ही आसपास की घटनाएँ लिखी गयी हैं। तो इस

प्रकार का साहित्य पाठक को बहुत रुचिकर लगता है और पढ़कर पाठक बहुत आनन्दित होता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'मन चंगा तो' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अगर आप अच्छी चीज सोचेंगे तो निश्चित अच्छा ही होगा। कहा जाता है कि अच्छी चीज सोचते हैं तो अच्छा ही होता है। आप क्यों नहीं अच्छी चीज सोचते हैं ? जरूर सोचते हैं तभी तो इतने अच्छे हैं। नहीं तो इतने अच्छे कैसे हो सकते हैं? आप अच्छी चीजें सोचें, अच्छे भाव जगाएँ, निश्चित रूप से अच्छा ही होगा। आपके भाव शरीर के एप्रोच में जो चीजें होंगी, रेंज में जो चीजें होंगी, वश में जो भी चीजें होंगी उनसे सब कुछ अच्छा होगा।" 28

इस प्रकार से समाज की विभिन्न परम्पराएँ, कलाएँ, विचारधाराएँ, विषमताएँ व सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक गतिविधियाँ सब कुछ साहित्य में समाहित हो जाती हैं। इस तरह समाज और साहित्य एक दूसरे से जुड़े रहते हैं कि दोनों को अलग कर पाना असम्भव होता है।

रचनाकार, समाज के हर पहलू को अपनी लेखनी से लिखता है और पाठकों के मन पर गहरी छाप छोड़ता है। जिस रचनाकार की जितनी गहरी अनुभूति होती है उतनी ही अधिक गहरी उसकी रचनाएँ होती हैं। इस अनुभूति को शिव नारायण सिंह की लगभग हर बोधकथा में देखा जा सकता है। रचनाएँ प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से पाठकों को समाजहित में प्रेरित करती रहती हैं।

शिव नारायण सिंह अपने नित नए सृजन के माध्यम से साहित्य के निहितार्थ को अपने जीवन में आत्मसात कर रहें है। उनकी बोधकथाएँ व कविताएँ एक सहज जीवन मूल्यों को उद्घाटित करते हैं। उनका लेखन उत्कृष्ट है। उनकी बोधकथाएँ शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में आने वाले दिनों में मील का पत्थर साबित होगी।

शिव नारायण सिंह की प्रेरणादायक बोधकथाएँ उद्देश्य, सहनशीलता और आत्म-विश्वास भरती हैं, कठिनाइयों को सीख के अवसर के रूप में देखना सिखाती हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'कौन सुनता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अब तो मुझे विश्वास होने लगा है कि आप पर मेरी इन बातों का असर हो रहा है, आप तथ्यों का विश्लेषण कर सकने में समर्थ हो रहे हैं, उनमें से अपने अनुकूल चीजें ग्रहण कर रहे हैं। अब आपके अन्दर का बीज अंकुरित हो रहा है, जो समय, परिस्थिति और वातावरण के अनुसार बाहर आएगा, पल्लवित होगा, पुष्पित होगा और उसकी सुवास चारों ओर फैलेगी जिससे यह उपवन महक उठेगा, ऐसा मुझे भरोसा है।" 29

शिव नारायण सिंह की कई बोधकथाएँ बच्चों में करुणा, विनम्रता और आलोचनात्मक सोच को उभारने का प्रयास करती हैं और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में नीव का निर्माण करती हैं। क्योंकि चिन्तन से ही असली लाभ मिलता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'सत्य का अंकुरण' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, जिसने वर्तमान से साक्षात्कार कर लिया, वह सचेत हो जाता है। उसके जीवन में ताजगी आ जाती है, उसका जीवन नया हो जाता है, उसका जीवन शुद्ध हो जाता है, उसका जीवन बुद्ध हो जाता है और वह अपने लक्ष्य को पा लेता है। निश्चित ही, तुम इस मार्ग के पथिक हो, तुम इस रास्ते पर चल रहे हो, तुम्हें अपने वर्तमान के प्रति सजग होने का एहसास है। तुम सजग हो भी और वह समय जल्दी ही आएगा, जब यह सजगता तुम्हारे अन्दर से प्रस्फुटित होगी और तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करोगे।" 30

व्यावहारिक स्तर पर, बोधकथाएँ लक्ष्य-निर्धारण, समस्या-समाधान और सामना करने की रणनीतियाँ देती हैं। ये रोज़मर्रा की आदतों में उतरकर व्यक्तित्व को दिशा देती हैं और व्यक्तित्व का निर्माण कर जिम्मेदार नागरिक बनाती हैं।

कथा-कथन के उपयोग- कथा-कथन का मतलब सिर्फ़ 'कथाएँ सुनाना' नहीं है, यह एक तरीका है जिससे जानकारी, मूल्य या अनुभव को असरदार ढंग से पहुँचाया जाता है। बच्चों को कथाएँ सुनाकर उन्हें जीवन के सबक सिखाना, शब्दावली बढ़ाना और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाना। नानी-दादी द्वारा कथाएँ सुनाना, लोककथाएँ, या आध्यात्मिक प्रसंग (कथा) सुनाना। छोटे बच्चों को कथाएँ सुनने का स्वाभाविक शौक होता है, इसलिए पाठ को कथाओ के रूप में पेश करने से उनका ध्यान बना रहता है और इतिहास भाषा जैसे विषय सरस लगते हैं।

कथा सुनने-सुनाने से बच्चों की कल्पना शक्ति बढ़ती है, वे पात्रों-घटनाओं को अपने मन में चित्रित

करते हैं। महान लोगों के जीवन-प्रसंग या नैतिक कथाएँ सुनाकर सद्गुण, आदर्श आचरण और सामाजिक समझ विकसित की जाती है। बिना उपकरणों के भी यह विधि काम करती है, इसलिए बोधकथाएँ प्राथमिक स्तर पर बहुत उपयोगी मानी गई हैं। प्रवचनकर्ताओं के अनुसार कथा सुनना मन को धोने जैसा है, जैसे- कपड़े साबुन से साफ होते हैं, वैसे ही कथा से नकारात्मक विचार घटते हैं। सिर्फ सुनना काफी नहीं, कथा के बाद मनन (गहरा चिन्तन) और उसे दैनिक आचरण में उतारना ज़रूरी बताया जाता है। कथा- श्रोता के लिए नियम भी बताए जाते हैं—सुनना, दूसरों को सुनाना और मौन चिन्तन।

कथा आयोजन युवाओं में शारीरिक-मानसिक शक्ति और विवेक की चर्चा के लिए मंच बनते हैं, जहाँ श्रोता सामूहिक रूप से भाग लेते हैं। कथा, कहानी बच्चों के दिमाग़ और दिल दोनों पर गहरा असर डालती है, यह सिर्फ़ मनोरंजन नहीं, विकास का टूल बन जाती है।

संज्ञानात्मक और भाषा विकास- कहानी से संज्ञानात्मक और भाषा विकास बढ़ता है। शब्दावली, वाक्य-रचना और समझ बढ़ती है, कहानियों में विविध शब्द और अभिव्यक्तियाँ मिलती हैं, जिससे बोल-चाल समृद्ध होती है। बार-बार सुनना या दोहराना याददाश्त और क्रम-बद्ध सोच को मज़बूत करता है, क्योंकि बच्चे घटनाओं को शुरू-मध्य- अन्त में जोड़ना सीखते हैं।

कल्पनाशीलता और रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है। बच्चे पात्रों के साथ नई दुनिया, नए अर्थ गढ़ते हैं। शिक्षक अनुभव भी यही दिखाता है कि कथाएँ ध्यान, कल्पना और सीखने की भूख जगाती है।

भावनात्मक– सामाजिक सीख- सहानुभूति और भावनाओं की पहचान पात्रों के सुख-दुःख, डर-खुशी से गुजरते हुए बच्चे अपनी और दूसरों की भावनाएँ समझना सीखते हैं। न्याय, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, धैर्य और मेहनत जैसे मूल्य कहानी के भीतर स्वाभाविक रूप से आते हैं; बड़े होने पर ये 'दोराहे-चौराहे' पर मार्गदर्शक बनती हैं। पंचतंत्र या बाल कथा जैसे पारम्परिक रूप आज भी दोहराए जा रहे हैं।

नीति का अर्थ है जीवन में बुद्धिपूर्वक, नैतिक आचरण करना न कि केवल चतुराई या धूर्तता; इसमें मनुष्य के समस्त व्यवहार को नैतिक दृष्टि से निर्देशित किया गया है। इसकी प्रत्येक कथा किसी-न-किसी नीति- सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है, जिससे व्यावहारिक जीवन में सही-गलत का विवेक सिखाया जाता है।

लोककथाएँ, पौराणिक कथाएँ बच्चों को अपनी जड़ों, परम्परा और विविध दृष्टिकोण से जोड़ती हैं, जिससे सांस्कृतिक जागरूकता बनती है। जब बच्चे ख़ुद कहानी दोहराते या बनाते हैं, तो आत्म-विश्वास और अभिव्यक्ति बढ़ती है। शिव नारायण सिंह यही बड़ा काम कर रहे हैं। विद्यार्थियों में कहानी सुनने के बाद सीखने की गतिविधियाँ जुड़ती हैं।

इस प्रकार रोज दस से पन्द्रह मिनट की कहानी—चाहे दादी-नानी की सुनाई हुई हो या शिव नारायण सिंह द्वारा स्कूल की प्रार्थना सभा में बच्चों की भाषा, सोच, जिम्मेदारी, धैर्य, भावनात्मक समझ, सामाजिक समझ, नैतिक दिशा और सामाजिक व्यवहार को एक साथ पोषित करती है।

निष्कर्ष- निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कथा-कहानी एक सुरक्षित प्रयोगशाला होती हैं जहाँ हम अपने मूल्य जाँचते, भावनाएँ प्रोसेस करते, और दूसरों के अनुभवों से सीख कर अपने चरित्र, ईमानदारी, धैर्य, करुणा, आत्म-विश्वास, मानवीय मूल्य को धीरे-धीरे गढ़ते हैं।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति, नैतिकता और कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये कथाएँ यह सिखाती है कि व्यक्तित्व केवल उपदेशों से नहीं बल्कि आचरण से निर्मित होता है। मूल्य, मानव आचरण का निर्देशक और नियंत्रक तत्व है। मूल्य और मान्यताएँ समय सापेक्ष होती हैं।

सन्दर्भ सूची-

1. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 42
2. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 77
3. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 156
4. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 103

5. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 199
6. गुण जातक, सम्पादक इ. बी. कोवेल, प्रकाशन वर्ष 1895, पृष्ठ संख्या – 17
7. पंचतंत्र, हिन्दी अनुवाद सत्यकाम विद्यालंकार प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, वर्ष 1952, पृष्ठ संख्या – 151
8. पंचतंत्र, हिन्दी अनुवाद सत्यकाम विद्यालंकार प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, वर्ष 1952, पृष्ठ संख्या – 5-10
9. पंचतंत्र, हिन्दी अनुवाद सत्यकाम विद्यालंकार प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, वर्ष 1952, पृष्ठ संख्या – 5-10
10. बुद्धघोष जातक कथा- सम्पादक इ. बी. कोवेल, पुनर्मुद्रण- मोतीलाल बनारसीदास- 2014, पृष्ठ संख्या – 181
11. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 662
12. फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ – सारे सुख़न हमारे, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2000, पृष्ठ संख्या – 33
13. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 263
14. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 70
15. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 108
16. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 293
17. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 221
18. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 264
19. मुंशी प्रेमचन्द- गोदान, रामकमल प्रकाशन, वर्ष-2005, पृष्ठ संख्या – 90
20. प्रकाश, उदय- मरना (प्रतिनिधि कविताएँ), राजकमल प्रकाशन, वर्ष- 2023, पृष्ठ संख्या – 168
21. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 309
22. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 13
23. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 282
24. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 447
25. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 129
26. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 306
27. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 502
28. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 45
29. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 205
30. सिंह,शिव नारायण 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 664

शिव नारायण सिंह की साहित्यिक यात्रा : प्राचीन वाचिक परम्परा का पुनर्जीवन

अनुभव कुमार गुप्ता
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना- शिव नारायण सिंह की साहित्यिक साधना भारतीय लोकपरम्परा, मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही कथाओं, लोकगाथाओं, दृष्टांतों और बोधकथाओं के माध्यम से ज्ञान, नैतिकता और जीवन-मूल्यों का संप्रेषण होता रहा है। यह वाचिक परम्परा समाज की सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक निरन्तरता की आधारशिला रही है। प्रस्तुत शोध आलेख 'शिव नारायण सिंह की साहित्यिक यात्रा : प्राचीन वाचिक परम्परा का पुनर्जीवन' में यह विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार उनके साहित्य में भारतीय वाचिक परम्परा की जीवन्तता और लोकानुभव की गूँज पुनर्स्थापित होती है।

शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ और कथात्मक रचनाएँ किस प्रकार लोकभाषा, सहज शैली और कथोपकथन की पद्धति के माध्यम से उस प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित करती हैं। उनके साहित्य में कथा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि वह जीवन-दर्शन, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त माध्यम बनकर उभरती है। उनकी रचनाओं में लोकजीवन के अनुभव, नैतिक शिक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी तथा मानवीय सह-अस्तित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो वाचिक परम्परा की मूल विशेषताओं से साम्य रखती है।

यह शोध गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत उनकी बोधकथाओं और अन्य साहित्यिक कृतियों का अध्ययन कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने किस प्रकार कथन- शैली, प्रतीकों और लोकानुभव के माध्यम से प्राचीन कथा-परम्परा को आधुनिक सन्दर्भों में पुनर्स्थापित किया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शिव नारायण सिंह का साहित्य केवल परम्परा का पुनरुत्थान ही नहीं करता, बल्कि उसे समकालीन सामाजिक यथार्थ से जोड़कर नई अर्थवत्ता भी प्रदान करता है।

बीज शब्द- वाचिक परम्परा, बोधकथा साहित्य, लोकपरम्परा, मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक शिक्षा, समकालीन सन्दर्भ, व्यक्तित्व विकास।

भूमिका- शिव नारायण सिंह ने भारतीय साहित्य में जो स्थान प्राप्त किया है, वह केवल उनकी साहित्यिक योग्यता का परिणाम नहीं है, बल्कि उनकी गहरी दृष्टि और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जो अभिनव प्रयोग किया है, वह न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि एक अद्वितीय शिक्षण पद्धति का उदाहरण भी है। वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए, प्राचीन भारतीय कथा साहित्य का प्रयोग अपने शिक्षण संस्थान में इस प्रकार कर रहे हैं, कि जिससे यह प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर चुका है। उनका यह दृष्टिकोण न केवल साहित्यिक बल्कि सामाजिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन भारतीय वाचिक परम्परा, जो पीढ़ियों से हमारी संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग रही है, उसे पुनर्जीवित करने और आज के परिवेश में सजीव करने में शिव नारायण सिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कहना उचित होगा कि वे न केवल विष्णु शर्मा जैसे महान साहित्यकारों की परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि इस परम्परा को आगे ले जाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

वाचिक परम्परा का पुनर्जीवन और विस्तार– विष्णु शर्मा, जिनकी रचना पंचतंत्र भारतीय नीति साहित्य का शिखर मानी जाती है, ने जिस प्रकार से सरल और संक्षिप्त कहानियों के माध्यम से गूढ़ नैतिक संदेश दिए, उसी परम्परा को शिव नारायण सिंह ने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ढ़ाला है। वे न केवल उस परम्परा को जीवित रखने का कार्य कर रहे हैं, बल्कि उसे आज के जटिल सामाजिक और वैज्ञानिक परिदृश्य में भी

प्रभावी बना रहे हैं। उनकी बोध कथाएँ न केवल नैतिकता और जीवन मूल्यों को सिखाती हैं, बल्कि वे आज के विद्यार्थियों को वैज्ञानिक सोच, जीवन के संघर्ष और समरसता की दिशा में भी प्रेरित करती हैं।

प्राचीन भारतीय वाचिक परम्परा को समकालीन सन्दर्भों में पुनर्जीवित और जीवन्त बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य शिव नारायण सिंह ने किया है। उनकी रचनात्मकता में कहीं-न-कहीं विष्णु शर्मा की परम्परा की अनुगूँज सुनाई देती है। वस्तुतः यह कहना अधिक समीचीन होगा कि उन्होंने इस प्राचीन कथा-परम्परा को केवल संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उसे आगे बढ़ाने का भी सार्थक प्रयास किया है। उनका साहित्यिक संकल्प निरन्तर नये आयामों की खोज करता हुआ दिखाई देता है। पंचतंत्र, हितोपदेश तथा कथासरित्सागर जैसी समृद्ध कथात्मक परम्पराओं की मूल चेतना को आत्मसात करते हुए उन्होंने उन्हें वर्तमान सामाजिक परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप रूपान्तरित किया है। उनकी बोधकथाओं में वैज्ञानिक दृष्टि, जीवनानुभव, संघर्षशीलता और सामाजिक समरसता जैसे तत्वों का सशक्त समावेश दिखाई देता है। इस प्रकार वे परम्परा और आधुनिकता के बीच एक सार्थक सेतु का निर्माण करते हैं।

उनकी बोधकथाओं की ग्रन्थ- श्रृंखला 'विद्यार्थियों से...' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस श्रृंखला से होकर गुजरने वाला पाठक केवल कथा का आस्वादन ही नहीं करता, बल्कि वह आत्मचिन्तन, नैतिक जागरण और व्यक्तित्व-परिवर्तन की प्रक्रिया से भी गुजरता है। यह प्रभाव उनके साहित्य की गहन मानवीय दृष्टि और शैक्षिक उद्देश्य को स्पष्ट करता है। कर्म की महत्ता को प्रदर्शित करते हुए शिव नारायण सिंह अपने विद्यार्थियों से कहते हैं "जैसे सूर्य में प्रकाश, चाँद में चाँदनी, दीपक में लौ है, ठीक उसी प्रकार कर्म में फल भी निहित है। कोई भी महान् कार्य एक दिन में संपन्न नहीं हो सकता। उपलब्ध अवसरों का पूरा-पूरा उपयोग करो। कर्म का नियम अटल है, हजारों मील की यात्रा का प्रारम्भ पहला कदम ही है। उस पहले कदम को जानें, पहचानें और रखें। जब तक उस पहले कदम को नहीं रखेंगे, तब तक आपको मंजिल नहीं मिल सकती, लेकिन कर्म के सिद्धान्त को भूलकर नहीं, कर्म के सिद्धान्त का अनुकरण करके।"1

शिव नारायण सिंह का कथा-साहित्य किसी प्रकार के कलावादी आडम्बर से दूर रहते हुए 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम'की भावना पर आधारित है। उनकी रचनाओं में सत्य का ऐसा रूप दिखाई देता है जो केवल यथार्थ को व्यक्त ही नहीं करता, बल्कि मानव के लिए कल्याणकारी और सौन्दर्यपूर्ण भी होता है। इसी दृष्टि से उनका साहित्य जीवन-मूल्यों और नैतिक चेतना को विकसित करने वाला है। प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करते हुए शिव नारायण सिंह ने अपनी बोध-कथाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य को एक नया आयाम प्रदान किया है। उनकी कथाओं में प्रयुक्त संवाद- शैली विद्यार्थियों को सीधे प्रभावित करती है और उनमें नई ऊर्जा, जिज्ञासा तथा उत्साह का संचार करती है। यह शैली पारम्परिक वाचिक परम्परा की याद दिलाती है, जिसमें गुरु अपने अनुभवों और कथाओं के माध्यम से शिष्यों को ज्ञान और जीवन-मूल्यों से परिचित कराते थे।

प्राचार्य शिव नारायण सिंह की बोध-कथाएँ केवल साहित्यिक सृजन नहीं हैं, बल्कि शिक्षण की एक प्रभावी विधि भी हैं। वे विद्यार्थियों को अध्ययन, चिन्तन और मनन की ओर प्रेरित करती हैं। "शिव नारायण सिंह ने वाचिक संवाद द्वारा प्राचीन भारतीय गुरुकुल की परम्परा को मानो प्रार्थना-सभा के रूप में पुनर्रचना की है। ये उद्बोधन कथाएँ विद्यार्थियों को कुछ सोचने-समझने और कुछ करने के लिए अभिप्रेरित करती हैं। उन्हें उनके दायित्वबोध का ज्ञान कराती हैं। अपने दोषों को यथासम्भव दूर कर उन्हें ऐसा सुनागरिक बनाना चाहती हैं, जिसमें मनुष्यता की सभी सम्भावनाएँ पुष्पित और पल्लवित हों।"2 वास्तव में यह प्रयास वाचिक परम्परा के पुनर्जीवन और उसके विस्तार की दिशा में एक अनुकरणीय पहल है। यदि अन्य शिक्षक भी इस पद्धति पर विचार करें और इसे अपनाएँ, तो निश्चय ही यह विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी और कल्याणकारी सिद्ध होगा।

इस दृष्टि से देखा जाए तो शिव नारायण सिंह का साहित्यिक प्रयास केवल कथा- परम्परा के पुनरुत्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानवता के व्यापक हित और बौद्धिक जागरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। यही कारण है कि उनका यह सतत प्रयास उन्हें एक वैश्विक चिन्तक या विश्व मनीषी के रूप में प्रतिष्ठित करने की क्षमता रखता है। निस्संदेह, उनका यह रचनात्मक संकल्प अत्यन्त प्रशंसनीय और प्रणम्य है।

'विद्यार्थियों से...' बोधकथा श्रृंखला– शिव नारायण सिंह की बोध कथाओं की श्रृंखला 'विद्यार्थियों से...' एक अद्वितीय प्रयास है, जो न केवल भारतीय वाचिक परम्परा को पुनर्जीवित करती है, बल्कि इसे नए युग के

अनुरूप भी ढ़ालती है। यह श्रृंखला विद्यार्थियों के मानसिक और नैतिक विकास के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें निहित कहानियाँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं और छात्रों को न केवल अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा देती हैं बल्कि उन्हें जीवन की जटिलताओं से निपटने के लिए भी तैयार करती हैं। "हितोपदेश, पंचतंत्र, जातक कथाओं से बोधकथा परम्परा आगे की ओर बढ़ती हुई आज वर्तमान समय में शिव नारायण सिंह कृत 'विद्यार्थियों से.....' (खण्ड- एक से दस) पुस्तकें श्रेष्ठ बोधकथा के रूप में सिद्ध हुई हैं। क्योंकि इनके अन्तर्गत सही दिशा, सच्ची प्रेरणा, सोचने- समझने की क्षमता, नई अभिव्यंजना शैली इत्यादि का बखूबी समावेश है। इनमें स्वतंत्र सृजनात्मकता, अदम्य साहस, अभूतपूर्व मेधा, दार्शनिक दृष्टिकोण, जिज्ञासा, आत्मविश्वास, सच्ची लगन, अथक संघर्ष और क्रांतिकारी भावना के पुट विद्यमान हैं। यह सर्वत्र झलकती रहती है कि इनमें वैचारिक अभिव्यक्ति के सफल आयाम सार्थक है। इन पुस्तकों के माध्यम से विचारों में विस्तार की प्रक्रिया का समर्थन किया गया है।"3

शिव नारायण सिंह के बोधकथा-श्रृंखला' विद्यार्थियों से. . . ' को केवल एक सामान्य साहित्यिक कृति के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह एक ऐसी प्रेरणादायी वैचारिक धरोहर है जिसमें निहित प्रत्येक शब्द मानो जीवन-मूल्यों की दिव्य चेतना से आलोकित है। इस संग्रह का प्रत्येक अक्षर 'अक्षर ब्रह्म' के समान प्रतीत होता है, क्योंकि उसमें ज्ञान, नैतिकता, अनुभव और जीवन-दृष्टि का सार समाहित है। 'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-छः) के मनःस्थिति नामक बोधकथा में वे विद्यार्थियों से कहते हैं कि- "चोटी से पत्थर को लुढ़का दो तो फिर कुछ नहीं करना होता, वह अपने आप नीचे आ जाएगा, कोई बाधा नहीं आएगी, कोई रुकावट नहीं आएगी और उसी पत्थर को चोटी तक पहुँचाना हो तो अनेक बाधाएँ आएँगी, थक जाओगे, पसीने- पसीने हो जाओगे। जटिल है, दुरूह है, दुर्गम है और खतरनाक भी। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती है, खतरा बढ़ता जाता है, मुश्किल बढ़ती जाती है, लेकिन अगर तुममें साहस है और तुमने साहस किया तो चोटी पर पहुँचाकर ही मानोगे, चोटी पर पहुँचा ही दोगे। मैं उसी दुस्साहस की बात कर रहा हूँ, अपना दुस्साहस जाग्रत करो, चोटी तक पहुँचने में कोई कोर-कसर मत छोड़ो। जीवन का रास्ता दुर्गम है, दुरूह है, लेकिन बहुत दूर नहीं। तुम्हारे एप्रोच में है, तुम्हारे रेंज में है, तुम्हारी पकड़ में है।"4 निश्चित ही ये कथाएँ केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि आत्मसात करने के लिए हैं, जो पाठक के भीतर चेतना, विवेक और सकारात्मक दृष्टिकोण का संचार करती हैं।

डॉ. विनोद कुमार मिश्र लिखते हैं " शिव नारायण सिंह की सहज वक्तृता से निकली ये कहानियाँ विद्यार्थियों को उनके वातावरण और सभ्यता-संस्कृति से बड़ी ही सहजता एवं सरलता से जोड़ देती है। ऐसे में पंचतंत्र की वर्तमान में प्रासंगिकता बढ़ जाती है, हाँ, यह अलग बात है कि 'विद्यार्थियों से...' में कही गई कहानियाँ अपने में आधुनिक सन्दर्भों को सहेजती हैं। शिव नारायण जी ने इन जीवन्त कहानियों के माध्यम से बच्चों को बड़ी ही सरलता के साथ लोकव्यवहार को समझाने का प्रयास किया है। इतना ही नहीं, शिव नारायण सिंह जी के इन वक्तव्यों में विद्यार्थियों में नेतृत्व की क्षमता के सूत्र भी खोजे जा सकते हैं।"5 'विद्यार्थियों से...' की विशेषता यह है कि इसमें प्रस्तुत कथाएँ विद्यार्थियों और नवपीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती हैं। इनमें जीवन के उद्देश्य, कर्तव्य- बोध, परिश्रम, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को अत्यन्त सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि जो भी पाठक इस ग्रंथ-श्रृंखला से होकर गुजरता है, उसके भीतर आत्मचिन्तन और आत्मविकास की नई ऊर्जा जागृत हो जाती है।

सुप्रसिद्ध कथा-शिल्पी, चिन्तक और मनीषी शिव नारायण सिंह का छात्रोपयोगी कथा- साहित्य 'विद्यार्थियों से...' वास्तव में एक बहुमूल्य और समृद्ध साहित्यिक धरोहर है। यह केवल कथाओं का संग्रह भर नहीं है, बल्कि जीवन-दृष्टि, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं का एक विस्तृत भण्डार है। इस कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिव नारायण सिंह बाल स्वभाव और बाल मनोविज्ञान के सूक्ष्म पारखी हैं। उन्होंने बाल मन की जिज्ञासा, सहजता और कल्पनाशीलता को गहराई से समझते हुए अपनी बोधकथाओं का निर्माण किया है। संवेदनशीलता, तार्किकता, कौतूहल और कल्पनाशीलता उनकी कथाओं के मूल आधार स्तम्भ हैं, जो इन्हें विशेष प्रभावशाली और शिक्षाप्रद बनाते हैं।'

' विद्यार्थियों से. . . ' की बोधकथाएँ केवल बालकों और विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी नहीं हैं, बल्कि वे वयस्क पाठकों को भी समान रूप से प्रेरित और मार्गदर्शित करती हैं। इन कथाओं की विशेषता यह है कि वे पाठकों को एक साथ तीनों कालों- अतीत, वर्तमान और भविष्य का बोध कराती हैं। एक ओर ये कथाएँ हमें हजारों वर्षों पुरानी भारतीय सांस्कृतिक

परम्परा और जीवन-मूल्यों से जोड़ती हैं, वहीं दूसरी ओर वर्तमान जीवन के प्रति सजगता और विवेक का संचार करती हैं। साथ ही ये भविष्य के लिए आशा, स्वप्न और सकारात्मक दृष्टि का भी निर्माण करती हैं। 'विद्यार्थियों से...' खण्ड-चार के 'दुर्गुणी पौधा' नामक बोधकथा में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए शिव नारायण सिंह कहते हैं- "मानव परिस्थितियों का दास होता है, परिस्थितिवश उसके मन में अच्छे-बुरे दोनों विचार उठते हैं, अच्छे विचार आते हैं तो उसका परिणाम सकारात्मक निकलेगा और बुरे विचार आते हैं तो उसका परिणाम नकारात्मक निकलेगा, जैसे- हिंसा, भ्रष्टाचार, आतंक, लोभ। जिससे पूरा विश्व त्रस्त है, इसलिए गंदे विचार मन में आते ही इसे उखाड़ फेंकिए।"6

इन बोधकथाओं में चरित्र- निर्माण, राष्ट्रीय चेतना, प्रकृति और पर्यावरण के प्रति अनुराग तथा लोकजीवन से गहरा सम्बन्ध जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण तत्व विद्यमान हैं। ये कथाएँ केवल उपदेश नहीं देतीं, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के माध्यम से मनुष्य को सही दिशा में प्रेरित करती हैं। अमानवीयता, अन्याय और सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी इन कथाओं से प्राप्त होता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन कहानियों में गहन दार्शनिकता और उदात्त जीवन-दृष्टि होने के बावजूद कथा-रस कहीं भी बाधित नहीं होता। कथाओं की सहजता, रोचकता और भावात्मकता पाठक को अन्त तक बाँधे रखती है। इस प्रकार 'विद्यार्थियों से...' केवल शिक्षाप्रद ही नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक, सजग और मानवीय बनाने का प्रेरणास्रोत भी सिद्ध होती है।

वर्तमान समय में जब युवा पीढ़ी अनेक चुनौतियों और द्वंद्वों से घिरी हुई है, तब यह कृति उनके लिए प्रकाश-स्तम्भ के समान है। शिव नारायण सिंह प्रार्थना सभा में अपने विद्यार्थियों से कहते हैं- "प्रिय विद्यार्थियो, हमारे अन्दर कितनी सम्भावनाएँ भरी पड़ी हैं और उसे ही जानकर लोग पुरुष से महापुरुष हो जाते हैं। महापुरुष होने की जो कड़ी है, उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण है अपने मन को कन्सन्ट्रेट करना। जिसने भी अपने मन को कन्सन्ट्रेट किया है, वह निश्चित ही अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुँचा है। जिसके लिए वह बना हुआ है, जिसके लिए वह बनाया गया है, जिसके लिए उसे यहाँ भेजा गया है।"7

निःसन्देह, वह समय दूर नहीं जब विश्व का नवोदित बाल और युवा वर्ग इन बोधकथाओं से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन के उच्च उद्देश्यों को पहचानने और उन्हें सार्थक करने की दिशा में अग्रसर होगा। निश्चित ही यह कृति आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवन्त प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हो सकती है।

आधुनिक परिवेश में वैज्ञानिकता और समरसता का समावेश– शिव नारायण सिंह की कहानियों में वैज्ञानिकता, जीवनानुभव, और संघर्ष की जो बातें की गई हैं, वे आज के दौर में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उनकी कहानियाँ यह सिखाती हैं कि कैसे व्यक्ति को जीवन के संघर्षों से जूझते हुए भी नैतिकता और ईमानदारी का पालन करना चाहिए। साथ ही, वे समरसता और समानता के मूल्यों को भी बढ़ावा देती हैं, जो आज के विभाजित समाज में अत्यन्त आवश्यक हैं।

"छात्रों के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास और नैतिक-शिक्षा शिव नारायण सिंह की चिन्ता का मुख्य विषय है। एक न्यायपरक समरस समाज जो सर्वदा अपनी जड़ों से जुड़ा रहे, का निर्माण उनका सपना है और उनके सपने का संसार ही उनके कथाजगत् का निर्माण करता है। वास्तव में वे गणित व विज्ञान में परास्नातक हैं तथा अपने रूढ़िगत संस्कारों का अतिक्रमण कर घटनाओं, परिघटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण भी करते हैं। शिव नारायण सिंह के कथाजगत् में आस्था और वैज्ञानिकता का अद्भुत समन्वय देखा जा सकता है।"8

आधुनिक शिक्षा का एक प्रमुख दोष यह रहा है कि वह प्रायः व्यक्ति को उसके अपने परिवेश से काट देती है, जिसके परिणामस्वरूप ज्ञान जीवन से जुड़ने के बजाय मात्र औपचारिक रह जाता है। इसके विपरीत, शिव नारायण जी का दृष्टिकोण शिक्षा को जीवन-सापेक्ष बनाता है। वे अपने छात्रों को न केवल बौद्धिक रूप से विकसित करते हैं, बल्कि उन्हें अपने परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील भी बनाते हैं। उनके द्वारा रचित बोध कथाएँ प्राकृतिक पर्यावरण से लेकर मानवीय सम्बन्धों के व्यापक आयामों तक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करती हैं।

घर-परिवार, आस-पास के परिचित बिंबों तथा नई-पुरानी घटनाओं के माध्यम से वे जीवन के यथार्थ को सरल और वैज्ञानिक दृष्टि से समझने की प्रेरणा देते हैं। इन कथाओं में निहित वैज्ञानिकता केवल तर्कशीलता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह समरसता के साथ जुड़कर जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों के भीतर ऐसी भाव-प्रवणता विकसित होती है, जो उन्हें जीवन की विविध

विसंगतियों के बीच भी अपनी संगति, सामर्थ्य और ऊर्जा को सुरक्षित रखते हुए निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

शिव नारायण सिंह विद्यार्थियों से कहते हैं कि- "हमारा जीवन पूर्णतः गणित का सवाल है, जिसका उत्तर पहले से ही तय है, बस सवाल लगाने की देरी है। अगर आपने सही ढंग से सवाल लगाया, तो उत्तर आना ही आना है और अगर सही ढंग से नहीं लगा पाए तो आप समझिए आपका काम समझे, बहुत समझाने से कोई फायदा नहीं है।"9

इस प्रकार, शिव नारायण जी की बोध कथाएँ आधुनिक परिवेश में वैज्ञानिक दृष्टि और मानवीय समरसता के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो शिक्षा को अधिक जीवन्त, उपयोगी और मूल्यपरक बनाती हैं।

विश्व मनीषी के रूप में स्थापना– सुप्रसिद्ध कथा–शिल्पी, चिन्तक और मनीषी शिव नारायण सिंह का छात्रोपयोगी कथा-साहित्य 'विद्यार्थियों से...' एक बहुमूल्य और व्यापक साहित्यिक सम्पदा है। वे बाल-स्वभाव और बाल-मनोविज्ञान के गहरे पारखी हैं; इसलिए उनकी बोध कथाओं का आधार संवेदनशीलता, तार्किकता, कौतूहल और कल्पनाशीलता है। इन कथाओं की विशेषता यह है कि वे केवल बालकों या विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी नहीं हैं, बल्कि वरिष्ठों को भी एक साथ अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों का बोध कराती हैं। ये कथाएँ हमें हजारों वर्षों पुरानी भारतीय संस्कृति से जोड़ते हुए वर्तमान में विवेक को जागृत करती हैं और साथ ही उज्ज्वल भविष्य के सपने भी दिखाती हैं।

इन बोधकथाओं में चरित्र-निर्माण, राष्ट्रीयता, प्रकृति और पर्यावरण के प्रति अनुराग तथा लोक-चेतना से जुड़ाव जैसे महत्त्वपूर्ण गुण विद्यमान हैं। साथ ही वे समाज में व्याप्त अमानवीयता के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी उत्पन्न करती हैं। "इस भोगवादी समाज में मनुष्य का नैतिक-स्तर बिल्कुल गिर चुका है, इसलिए नैतिकता के अभाव में एक सभ्य समाज की कल्पना असम्भव है। नैतिकता वह है जो मनुष्य और समाज में परस्पर सम्बन्धों को दृढ़ करती है, जिसमें व्यक्ति अपने प्रेम, सहयोग व प्रेरणा से निज-स्वार्थ को त्यागकर कार्य करते हैं, क्योंकि नैतिक मूल्य के बिना समाज जीवित नहीं रह सकता, इसलिए समाज में एक नैतिक ढाँचा तैयार करना आवश्यक है।"10

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-एक) 'कंगन' बोधकथा में एक बुढ़िया माई की कथा है जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- प्रिय विद्यार्थियों आप कहीं-न-कहीं चूक रहे हैं, कहीं-न-कहीं आपके अन्दर गड़बड़ी पनप रही है तो इसके पीछे केवल एक ही कारण है कि आप अपना ध्यान अपने उद्देश्य पर नहीं लगा पा रहे हैं।" 11

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-एक) बोधकथा 'बाधाएँ' में सन्त एकनाथ की कथा है जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " समस्याएँ क्या है? समस्याएँ वास्तव में समस्याएँ नहीं हैं, समस्याएँ वास्तव में समाधान हैं। अगर समस्याएँ आयेंगी नहीं तो समाधान कैसे होगा ? जो भी प्राब्लम्स आपके पास आती हैं उन्हें फेस कीजिए।" 12

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-एक) बोधकथा ईमानदारी' में शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि " अगर आप अपने कार्य को ईमानदारी से करते हैं तो आपके अन्दर भी इतनी शक्ति उत्पन्न हो जाती है कि आपका उद्देश्य खुद-ब-खुद चलकर आपके सामने आ जाता है।" 13

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-दो) 'दूरदर्शिता' बोधकथा एक राज्य की विचित्र प्रथा से सम्बन्धित है क्योंकि वहाँ पर राजा केवल दस वर्ष राज्य कर सकता उसके बाद वहाँ से उसे ऐसे जगह जाना होता जहाँ ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह कहते हैं कि – "प्रिय विद्यार्थियों, आज ही आप इस बात को तय कीजिए, आपको जो भी बनना है, जिस फील्ड में जाना है उस फील्ड के लिए आप अभी से कुछ अतिरिक्त करना शुरू कर दीजिए।" 14

'तपस्या' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं - " निराशा ऐसी चीज है कि वह उत्साह का शमन करती है। आपके अन्दर अदम्य उत्साह है इस समय, आप एनर्जेटिक हैं, आपके अन्दर बड़ी शक्ति है। अगर आप आशावान रहें तो आप कोई भी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं, कोई भी ऊँचाई प्राप्त कर सकते हैं।" 15

विद्यार्थियों से...' (खण्ड-दो) बोधकथा 'मोती' में बच्चों को समय का सदुपयोग व महत्ता का वर्णन करते हुए शिव नारायण सिंह कहते है कि - "प्रिय विद्यार्थियों, यह क्षण-क्षण जो आपके साथ बीत रहा है उन मोतियों से बहुत कीमती है। यह जो आपका समय बीत रहा है इसकी कीमत मोतियों से भी अधिक है। आप स्वयं ही इसका मूल्य लगा लें। इसका मूल्य आप

कैसे लगा सकते हैं ? इसका सदुपयोग करके, ईश्वर की प्रदत्त इस कीमती माला का, जो असंख्य मोतियों से बनी है, अगर आप सदुपयोग कर सकें तो निश्चित रूप से नगर सेठ क्या, आप विश्व सेठ बन सकते हैं।" 16

विद्यार्थियों से...' (खण्ड-दो) 'निष्ठा' बोधकथा में महाराज दिलीप और महर्षि वशिष्ठ से सम्बन्धित कथा है जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " अपने जीवन की कीमत पर अगर आप निष्ठा दिखाते हैं, चाहे जिस किसी उद्देश्य के प्रति, तो निश्चित रूप से आपका उद्देश्य पूर्ण होगा, ठीक वैसे ही जैसे महाराज दिलीप का हुआ। लेकिन इसके लिए आपको समर्पित होना होगा, निश्चित ही अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित होना होगा।" 17

शिव नारायण सिंह का यह प्रयास, जिसमें वे प्राचीन और आधुनिक के बीच एक पुल बना रहे हैं, उन्हें केवल भारतीय साहित्य में ही नहीं, बल्कि विश्व साहित्य में भी एक मनीषी के रूप में स्थापित करता है। उनकी कहानियाँ न केवल भारतीय समाज को नैतिक और सामाजिक रूप से समृद्ध कर रही हैं बल्कि वे विश्व स्तर पर भी मानवीय मूल्यों का प्रसार कर रही हैं।

इस प्रकार ये कथाएँ जीवन के प्रत्येक चरण पर हमारा मार्गदर्शन करती हैं और सार्थक तथा आदर्श जीवन जीने का संदेश देती हैं। इन कहानियों में उच्च और उदात्त जीवन-दर्शन निहित होने के बावजूद कथा-रस कहीं भी बाधित नहीं होता। यही विशेषताएँ शिव नारायण सिंह को एक व्यापक दृष्टि वाले चिन्तक और विश्व मनीषी के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं।

निष्कर्ष- शिव नारायण सिंह का साहित्यिक योगदान न केवल भारतीय वाचिक परम्परा के पुनर्जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह आधुनिक समाज के नैतिक और वैज्ञानिक विकास के लिए भी अनिवार्य है। उनका कार्य केवल साहित्यिक नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन का भी हिस्सा है। उनके इस प्रयास को न केवल सराहना मिलनी चाहिए, बल्कि इसे आदर्श मानते हुए आगे भी बढ़ाना चाहिए। उनके द्वारा किया गया यह कार्य वास्तव में प्रणम्य है, और उन्हें एक विश्व मनीषी के रूप में स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिव नारायण सिंह की साहित्यिक यात्रा भारतीय वाचिक परम्परा की निरन्तरता और पुनर्जीवन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, जो साहित्य के माध्यम से समाज में नैतिक चेतना, मानवीय संवेदनशीलता और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का कार्य करती है।

सन्दर्भ सूची-

1. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 32
2. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -133
3. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -71
4. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 444
5. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -215
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 158
7. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 43
8. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -101 - 102
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 216
10. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – 61
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 27
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 51
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 102
14. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 35
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 72
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 96
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 188

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

पर्यावरण चेतना और शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ

सरोज सिंह
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना: शिव नारायण सिंह एक मृदुभाषी, उद्यमी व पर्यावरणीय चेतना से सम्पन्न व्यक्तित्व वाले शिक्षक हैं। वे अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाना जानते हैं। उन्हें भली-भाँति ज्ञात है कि केवल पाठ्यक्रम का ज्ञान दे देने से हम अपनी जिम्मेदारी से उऋण नहीं हो सकते। एक श्रेष्ठ शिक्षक का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों के अन्दर पर्यावरणीय चेतना को विकसित करे, पर्यावरण के प्रति जागरूक व जिम्मेदार भी बनाये। शिव नारायण सिंह जी अपनी इस जिम्मेदारी को विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रतिदिन अपनी बोध कथाओं के माध्यम से पूर्ण करने के लिए अहर्निश लगे हुए हैं। जिससे बच्चों के अन्दर पर्यावरणीय चुनौतियों जैसे- जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता के नुकसान, रासायनिक पदार्थों के प्रभाव, भारतीय संस्कृति में वनों का महत्त्व, नदियों व वन्य जीवों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों और बोधकथाओं में वर्णित पर्यावरण संरक्षण के विचारों को निरुपित किया जा सके।

प्रस्तुत शोध आलेख में हम पर्यावरणीय चेतना की आवश्यकता, शिक्षा जगत में उसके प्रभाव व महत्ता और शिव नारायण सिंह के साथ-साथ अन्य महत्त्वपूर्ण विचारकों के इस सन्दर्भ में विचारों से अवगत हो सकेंगे। वास्तव में हम इस शोध आलेख के माध्यम से शिक्षा जगत में पर्यावरणीय चेतना के प्रभाव व उसकी महत्ता का अवलोकन करते हुए बच्चों के अन्दर पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं का अवलोकन करेंगे। यह शोध आलेख इन्हीं की बोधकथाओं के एक आयाम पर आधारित है।

बीज शब्द - पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, भौतिक प्रतिस्पर्द्धा, संवेदनात्मक, अभिव्यक्ति, चेतना सम्पन्न, विश्व संरक्षण, उत्तरदायित्व, अर्थवत्ता, ओजोन।

शोध आलेख :- शिव नारायण सिंह जी एक अति जागरूक शिक्षक हैं। एक शिक्षक के ऊपर सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भावी पीढ़ी के अन्दर नैतिक चेतना, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय चेतना जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित करना है। हमारे भारतवर्ष की परम्परा रही है कि समाज में ऐसे मानवीय मूल्यों को स्पष्टता प्रदान करने की जिम्मेदारी हमारे शिक्षकों के ही कन्धों पर ही होती है। शिव नारायण सिंह जी अपनी इस जिम्मेदारी को भली-भाँति समझते हैं और इसे पूर्ण करने का प्रयास भी करते हैं। मानवीय मूल्यों को विकसित करने का तरीका प्रत्येक शिक्षक का अलग-अलग होता है।

विद्यार्थियों को अलग- अलग दृष्टिकोणों से जागृत कर उन्हें चेतना सम्पन्न बनाने की वजह से शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। उनकी चेतना-सम्पन्न बोधकथाएँ संघर्षों से भरे हुए मानव जीवन के यथार्थ का बोध कराती हैं। जो छात्र-छात्राओं को भावी भविष्य के लिए प्रेरणा देती है, साथ-ही-साथ सजग व जागरूक नागरिक बनाने में अपना योगदान देती हैं।

बोधकथा 'विश्व संरक्षण' में एक लकड़हारे की कथा है, जो अपनी जिन्दगी से थक हार चुका है। उसके जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ हैं। वह अपनी जीविका चलाने के लिए जंगल से लकड़ियाँ काटता, उन्हें बेचता पर समय के साथ-साथ उसकी कठिनाइयाँ और बढ़ गईं हैं। एक दिन वह भूखा रहते हुए भी परिवार की भूख मिटाने के लिए एक सूखे पेड़ को तलाश कर लकड़ियों का एक गट्ठर तैयार करता है।

जब वह गट्ठर उठाना चाहता है तो उठा नहीं

पाता है। परेशान होकर कहता है कि इससे तो अच्छा होता मौत ही आ जाती। जैसे ही यह मौत को पुकारता है, मौत वहाँ उपस्थित हो जाती है क्योंकि वह स्थान देवस्थान होता है। मौत पूछती है मुझे क्या करना है ? लकड़हारे ने कहा- यह गट्ठर बहुत भारी है तुम इसे उठवा दो। मौत ने कहा-मैं ऐसे जाने वाली नहीं हूँ। मेरी एक शर्त है यदि उसे स्वीकार करो तो मैं चली जाऊँगी।

लकड़हारे ने कहा- अपनी शर्त बताओं, मैं तुम्हारी शर्त को शीघ्र ही पूरा कर देना चाहता हूँ। मौत कहती है- "मेरी शर्त है कि तुम आज से पेड़ नहीं काटोगे। पेड़-पौधे लगाओगे, उनकी देखभाल करोगे, औरों को भी समझाओगे और इस देश-दुनिया को हरा-भरा बनाओगे।" 1

इस बोधकथा में आगे शिव नारायण सिंह जी विद्यार्थियों से कहते हैं कि - "यह मौत की शर्त है, अब यह बताने की जरूरत है कि लकड़हारा माना कि नहीं माना, वह जरूर मान गया होगा। चलिए, आपकी ही बात मान लेते हैं। लकड़हारा तो मान गया, लेकिन क्या आप मानेंगे ? अगर यह परिस्थिति आपके साथ होती तो आप क्या करते यह मैं नहीं जानता। लेकिन जो बात मुझे कहनी है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी पेड़ की एक पत्ती स्वयं में पूर्ण होती है भले ही वह पेड़ का एक हिस्सा मात्र हो। एक पेड़ अपने में पूर्ण होता है, भले ही वह जंगल का एक हिस्सा मात्र हो।" 2

शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के माध्यम से बच्चों में ऐसी ही पर्यावरणीय चेतना को विकसित करते हैं। ताकि बच्चे अपनी इस प्रकार की जिम्मेदारियों को भली-भाँति समझ सकें। यथासामर्थ्य उसे पूरा कर सकें। क्योंकि जब उन्हें ज्ञात हो जायेगा कि यह उत्तरदायित्व उन्हीं का है और उन्हें ही इसे पूरा करना है, तब वे इसे पूर्ण करेंगे-ही-करेंगे।

'बोधकथाएँ : नवल उत्थान की ओर' शीर्षक समीक्षात्मक लेख में श्री उद्भव मिश्र ने कहा है कि - "शिव नारायण सिंह की पूरी प्रज्ञा अपने छात्रों के भविष्य निर्माण पर लगी हुई है, एक नये समाज की रचना में लगी हुई है। आज जब आधुनिक शिक्षा प्राप्त उच्च पदासीन अधिकारी भ्रष्टाचार- कदाचार में संलिप्त पाये जा रहे हैं, उस दौर में 'विद्यार्थियों से...' के माध्यम से उन्होंने जो प्रयास किया है, वह निश्चय ही नये भारत के निर्माण में एक सराहनीय कदम है।"3

उन्होंने यह भी कहा है कि- "आदमी के भीतर भौतिक प्रतिस्पर्द्धा ने जो रिक्तता पैदा की है, उसे एक बार फिर शिव नारायण सिंह ने आध्यात्मिक स्तर पर भरने का प्रयास किया है। वैज्ञानिक उपकरणों से सम्पन्न समाज को नैतिक स्तर पर समृद्ध कर दिशाहीनता की स्थिति को दूर करने का प्रयास किया है। यदि व्यक्ति के अन्तर्मन को परिष्कृत कर उसे मनुष्योचित बनाने वाले शब्दों की सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति का नाम साहित्य है तो 'विद्यार्थियों से...' की श्रृंखला को बिना किसी संकोच के श्रेष्ठ साहित्यिक कृति कहा जा सकता है।"4

'मिट्टी' बोधकथा में ईश्वर द्वारा रचित पृथ्वी, पहाड़, नदी, तालाब, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु व मनुष्य का वर्णन किया है। जिसमें ईश्वर ने देवतागण को बताया कि इस धरती पर अब तक की मेरी सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य है जिसे मैंने मिट्टी से बनाया है। देवतागण को आश्चर्य हुआ कि जब मनुष्य उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है तो मिट्टी से क्यों निर्मित किया ? पृथ्वी पर तो सोना, चाँदी, हीरे-मोती, जवाहरात की कोई कमी नहीं है। ईश्वर ने मुस्कराते हुए कहा- क्या आपने कभी सोने, चाँदी, हीरे मोती से कुछ उगते हुए देखा है या स्वत: ही उनका रूप परिवर्तित होते हुए देखा है? जवाब था- नहीं। बढ़ने का गुण तो सिर्फ मिट्टी के सम्पर्क में आने से है।

शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "मिटटी से ही शरीर की वृद्धि होती है, मिट्टी से ही शरीर का अस्तित्व है। जब पाँच तत्व बीज को मिलते हैं तो वह भी आप ही की तरह बढ़ता है। किसी बीज के अंकुरित होने में पंच तत्वों की जरूरत होती है, ठीक उसी तरह आपके शरीर को भी बढ़ने के लिए इन्हीं पाँच तत्वों का सहयोग चाहिए। प्रभु ने आपको भी ठीक उसी प्रकार बनाया है, जिस प्रकार एक बीज को बनाया है। बीज अंकुरित होता है, बढ़ता है, पल्लवित होता है, पुष्पित होता है, उसमें फल लगते हैं। आपके बारे में भी ईश्वर का ऐसा ही कॉन्सेप्ट है।"5

मिट्टी की महत्ता और अर्थवत्ता को उद्घाटित करते हुए शिव नारायण सिंह कहते हैं कि- "ईश्वर ने बहुमूल्य चीजों की उपेक्षा कर मनुष्य को मिट्टी से

इसीलिए बनाया है क्योंकि मिट्टी में उर्वरा का गुण है, मिट्टी में विकास का गुण है। उसमें ऐसी शक्ति छिपी हुई है जो अपने ही सिमेट्रीकल चीजों को उत्पन्न करती है। इस दुनिया का कायाकल्प इसी कृति से सम्भव है।"6

शिव नारायण सिंह के कथा- संवादों में उपदेश की प्रधानता न होकर अनुभव की प्रधानता दिखाई देती है। वे कहते हैं- मेरे प्रिय, जैसे-जैसे हमने विकास किया, पर्यावरण का ह्रास हुआ है। विकास को तो रोका नहीं जा सकता है, रोकने की जरूरत भी नहीं है। जरूरत इस बात की है कि पर्यावरण के ह्रास को कैसे रोका जाए ? पर्यावरण की सुरक्षा कैसे की जाए ? पर्यावरण को कैसे बचाया जाए ? आज के इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि इस समस्या का समाधान हम आचार्य बन्धु कैसे खोजते हैं, कैसे निकालते हैं?"7

"अब हम इस पर्यावरण को लेकर कितने चैतन्य हैं? यह विचारणीय विषय है। हम स्वयं कितने चैतन्य हैं इस पर्यावरण को लेकर यह विचारणीय प्रश्न है। इस धरती पर पर्यावरण को बैलेन्स करने के लिए कम-से-कम तैंतीस परसेण्ट भू-भाग पर वन की जरूरत है। जबकि आज केवल तेइस परसेण्ट पर ही वन है। बताइए कैसे होगी पर्यावरण की सुरक्षा, कैसे होगी पर्यावरण की रक्षा ? एक मात्र उपाय है जिसे आप जानते भी हैं। क्या है वह ? वह है वृक्ष लगाएं। मात्र एक उपाय है-वृक्ष लगाइए।" 8

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "मेरे प्रिय, हमें रोकना होगा मीथेन के फारमेशन को जो कार्बन डाई ऑक्साइड से दस गुना ज्यादा खतरनाक है। हमें रोकना होगा ओजोन परत में होने वाले छिद्र को। हमें रोकना होगा विलुप्त होती प्रजातियों को। केवल भारत में एक सौ पचास प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं अब तक जिनका नामोनिशान ही नहीं रह गया है हमारे पास। हमें रोकना होगा नदी के प्रदूषण को, नदियों में जो प्रदूषण है उसे हमें रोकना होगा।"9

'पर्यावरण' बोधकथा में एक किसान की कथा है। जो खेती के काम निपटाने के बाद खाली समय में आम के पौधे लगाकर उनकी देखभाल करता। समय के साथ वे पौधे बढ़े, उन पर फल लगे और पके भी। उन्हें वह स्वयं भी खाता और जो आते उन्हें भी बाँट दिया करता इस प्रकार वह आनन्द की अनुभूति करता। जब उसके बच्चे बड़े होकर खेती की जिम्मेदारी सम्भालने लगे तब वह लोगों के साथ मिलकर अच्छी प्रजाति वाले आम के पेड़ लगवाने लगा। उसने कई किलोमीटर के एरिया में लगभग एक हजार से अधिक, आम के पौधे लगाए। जिससे लोगों ने उस क्षेत्र का नाम इस किसान के नाम पर 'हजारी बाग' रख दिया।

प्रस्तुत बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "हजारी प्रसाद की जरूरत आज भी इस दुनिया को है, इस राष्ट्र को है, इस देश को है, हम सभी को है लेकिन अब कोई हजारी प्रसाद नहीं दिखाई दे रहा है। पर्यावरण असन्तुलित है, वर्षा की कमी है और भी तमाम तरह की कठिनाइयाँ, परेशानियाँ जिन कारणों से उत्पन्न हो रही है उनमें मुख्य यही है कि अब वृक्षों की संख्या घट चुकी है और यह इतना घातक हो गया है कि इसका समाधान बहुत मुश्किल लगता है। अब हजारी प्रसाद आपको स्वयं ही बनना होगा। मुझे तो लगता है कि अगर आप सभी मिलकर एक साथ कोशिश करें तो एक हजारी प्रसाद नहीं, डेढ़ हजारी प्रसाद बन सकते हैं।" 10

भारतीय शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने के साथ पर्यावरणीय चेतना को ऊँचा उठाने में सफल हुई है। शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना की ज्योति को प्रज्ज्वलित करते हुए कहते हैं कि- "यहाँ हम सबकी संख्या लगभग डेढ़ हजार होगी। प्रत्येक विद्यार्थी अपने जन्मदिन पर एक वृक्ष लगाए। यहाँ यह दृष्टिकोण नहीं है, व्यापक दृष्टिकोण है कि प्रत्येक स्टूडेण्ट, टीचर, जो भी हम सब लोग यहाँ हैं। आपस में यह तय करें कि हर व्यक्ति अपने जन्म-दिन पर एक पौधा लगाये और उसकी रक्षा का दायित्व भी समझे, तो एक साल में डेढ़ हजार वृक्ष तैयार होंगे। इससे एक बहुत बड़ी समस्या, जो अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है पर्यावरण की, उसका सहज समाधान हो सकता है।"11

"आप इस दिशा में सोचें, विचार करें और प्रयास करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो निश्चित रूप

से आपको अपने उद्देश्य के साथ-साथ एक बड़ा काम करने का भी गौरव प्राप्त होगा, जिससे यह राष्ट्र और भी समृद्ध होगा। इस बात पर आप सभी गौर कीजिए, विचार कीजिए और प्रयास कीजिए।"12

'ज्ञान' बोधकथा में थार्म बरी और एक बुढ़िया माई की कथा है। थार्म बरी एक तत्ववेत्ता, नक्षत्रवेत्ता थे। एक बार कुछ विशेष देखने के लिए अपनी दूरबीन निकालते हैं और देखने में ध्यानमग्न हो जाते है। वे कभी आगे बढ़ते तो कभी पीछे हटते और अपनी पोजीशन को एडजस्ट करते-करते गड्ढे में गिर गये। बड़ी कोशिश की लेकिन गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाये।

थार्म बरी ने मदद के लिए आवाज लगाई तभी उधर से एक बुढ़िया माई जा रही थी जो बड़ी कोशिश के बाद उन्हें बाहर निकालती हैं। थार्म बरी ने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा- मैं बहुत बड़ा नक्षत्रवेत्ता हूँ। आपको कभी कोई जरूरत पड़े तो मेरे पास आना। बुढ़िया माई जोर से हँसी और बोली- जिसे धरती के गड्ढों की जानकारी नहीं है उसे नक्षत्रों की जानकारी क्या होगी? यह बात थार्म बरी के मन में बैठ गयी। एक समय ऐसा आया जब वह इस दुनिया का महान भूगर्भवेत्ता बन गया।

शिव नारायण सिंह इस बोधकथा के माध्यम से कहते हैं-"प्रिय विद्यार्थियों, आपमें भी वे सब बातें हैं। थार्म बरी कोई बहुत अद्भुत तो था नहीं। उसका भी जन्म हुआ, आप जैसा ही वह भी विद्यार्थी था, उसने भी अध्ययन किया, नक्षत्रवेत्ता बन गया। फिर उसकी दिशा बदली, उसने अध्ययन किया और भूगर्भवेत्ता बन गया। प्रकृति ने ये सारी चीजें उन्मुक्त रूप से आप सभी के लिए छोड़ रखी है। ऐसा नहीं है कि थार्म बरी ही नक्षत्रवेत्ता से भूगर्भवेत्ता बन सकता था, कोई भी बन सकता है। आप भी बन सकते हैं, हम भी बन सकते हैं किन्तु मात्र कहने से नहीं, हमें उस दिशा में उतना करना होगा जितना थार्म बरी ने किया।"13

'प्रलय' बोधकथा में एक अत्यन्त कन्जूस पण्डित जी की कथा का वर्णन है। पण्डित जी ने अब तक के अपने जीवन काल में कभी किसी को चाय तक नहीं पिलायी। आज उन्होंने पूरे गाँव को भोज पर आमन्त्रित करने का निश्चय कर लिया हैं यह कैसे सम्भव है? लेकिन यह खबर ने इतना जोर पकड़ा कि लोगों को धीरे-धीर विश्वास होने लगा कि हो सकता है शायद प्रायश्चित ही उनका दृष्टिकोण हो। अब अन्तिम समय आ रहा है तो भोजन कराकर ही प्रायश्चित कर लें।

अब गाँव के लोग पण्डित जी के घर पहुँचते हैं तो उनके छोटे बेटे से मुलाकात होती है। उससे पूछते हैं कि तुम्हारे पिता ने पूरे गाँव को भोज पर आमंत्रित किया है, क्या यह बात सही है ? लड़का तो असलियत जान ही रहा था, कहा हाँ, मेरे पापा ने पूरे गाँव को ही भोज देने का निश्चय किया है। तिथि भी निश्चित है, तैयारी भी जोरों पर चल रही है। गाँव वालों ने तिथि पूछा तो लड़के ने कहा-जिस रात प्रलय होगी उस रात आपको भोज पर आना है।

गाँव वालों के चले जाने के बाद पण्डित जी अपने लड़के से कहते हैं अरे। प्रलय हो जाने के बाद की तिथि तय किये होते। ऐसे में शिव नारायण सिंह जी कहते हैं- "प्रलय होने में जानते हैं कितना समय है ? नहीं पता आपको, हम बता देते हैं कितना समय है। भूगर्भ शास्त्रियों ने इस पर अनुसन्धान किया ही है, परीक्षण भी हुआ है, उससे डाटा आया ही है। सारे हिमनद क्या हो रहे हैं? सिकुड़ रहे हैं, मालूम है न आपको। इक्कीस परसेन्ट सिकुड़ गये हैं हिमनद, नौ हजार हिमनद से अड़तीस परसेन्ट कम हो गये हैं। यानि सिकुड़कर शून्य हो गये हैं। ग्रीन हाउस इफेक्ट का प्रभाव जान ही रहे हैं इससे भी ध्रुव पिघल रहे हैं।"14

पर्यावरण के प्रति सचेत करते हुए शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "आप कहाँ रहते हैं, पता है आपको ? ये हिमालय के किनारे का सारा बेल्ट जो है, तराई बेल्ट है। मुश्किल से सत्तर साल इन्तजार करना है, इससे ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। प्रलय आने में इससे ज्यादा समय नहीं लगना है। अब क्या जरूरत है तिथि तय करने की।"15

आज का युग पर्यावरणीय चेतना का युग है। हर व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक हो गया है। ज्ञान और विज्ञान, की हर शाखा के विद्वान, चिन्तक पर्यावरण की सुरक्षा और संचालन के प्रति जागरूक हैं। वर्तमान में हर व्यक्ति स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त

पर्यावरण में रहने के अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वास्तव में पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित है, जिसे हम अपने चारों ओर देखते हैं, जल, थल, वायु, मनुष्य, पशु, वृक्ष, पहाड़, नदियाँ, घाटियाँ एवं भू-दृश्य इत्यादि सभी पर्यावरण के भाग हैं।

यदि पर्यावरण के एकीकृत रूप को देखा जाए तो हम देख सकते हैं कि प्रत्येक पर्यावरण घटक में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से मानव का हस्तक्षेप निश्चित है। आज विज्ञान की कोई भी ऐसी शाखा नहीं है, जिसमें पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं की चर्चा न हो । पर्यावरण ईश्वर द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण मानव के लिए अमूल्य उपहार है। अगर हम विचार करें कि हमारे चारों ओर किस तरह का आवरण है? वे कौन-कौन-सी चीजें हैं, जिनसे हम घिरे हैं? तो हम पायेंगे कि हमारे चारों ओर हवा, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मिट्टी, पानी और चाँद सितारे हैं। अत: ये सारी चीजें हमारे पर्यावरण के अंग हैं और इन्हीं से मिलकर बना है हमारा पर्यावरण ।

जब वैज्ञानिक गण पर्यावरण की बात करते हैं, उसकी सुरक्षा और संतुलन के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हैं तो उनका तात्पर्य प्रकृति के संतुलन से होता है। पुराने जमाने में अपने देश में ढेर सारे जंगल हुआ करते थे। जंगलों में ऋषियों-मुनियों के आश्रम हुआ करते थे। इन आश्रमों के आस-पास आखेट करना मना था। अनेक प्रकार के पशु-पक्षी और मृग निर्भय होकर घूमा करते थे। गाँव और कस्बों के मनोरम बागों में चिड़ियाँ चहचहाया करती थी, बुलबुल और कोयलें गाया करती थीं।

'मित्रता' बोधकथा में दूध और पानी के बीच हुए संवाद का वर्णन है। एक बार दूध ने पानी से कहा- मेरा कोई मित्र नहीं है। एक तुम ही हो जो बराबर मेरे साथ रहते हो। पानी ने कहा- मित्र तो मेरा भी कोई नहीं है। मेरी भी इच्छा है मित्र बनाने की। अब दोनों में मित्रता हो गई, दोनों मिल गये तो दोनों का अस्तित्व एक हो गया। अब दोनों की अलग-अलग कोई पहचान नहीं रह गई।

अग्नि को जैसे ही इनके मित्रता की खबर मिलती है, वह आनन-फानन में पहुँचती है और कहती है- ठीक है, तुम दोनों मित्र हो गये हो तो तुम्हारे मित्रता की परीक्षा होगी। अब इन्हें अग्नि पर चढ़ाया जाता है, अग्नि पानी को जलाती है लेकिन दूध मित्रता धर्म का निर्वाह करता है। वह उफन-उफन कर पानी को जलने से रोकता है, उसके नये रूप वाष्प में परिवर्तन को रोकता है। वह पानी को जलने नहीं देता है और उसे बचाने में स्वयं ही जल जाता है। आखिर इसके पीछे क्या है? दोनों का एक दूसरे में विश्वास, दोनों का एक दूसरे के प्रति समर्पण है।

प्रस्तुत बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित करते हुए कहते हैं कि- "यह जो पूरी गैलेक्सी, पूरी दुनिया, पूरा ब्रह्माण्ड है, इसमें पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे और नक्षत्र सब कुछ है। यहाँ तक कि आपके द्वारा भेजे गये सेटेलाइट भी गैलेक्सी में है। आखिर उनका भी तो आपस में एक रिश्ता है, एक सम्बन्ध है, जिसके तहत ये रूके हुए हैं। आप भी यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि विज्ञान की भाषा में एक ऐसा खिंचाव, एक ऐसा एट्रेक्शन इनके बीच है जिससे ये सन्तुलित हैं। परिस्थितियाँ बदलती हैं, सन्तुलन बदलता है, तो देखते ही हैं भूचाल आ जाता है। आखिर यह क्या है? यह भी तो एक रिश्ता ही है। इस ब्रह्माण्ड में सभी चीजों का एक दूसरे से सम्बन्ध है।"16

प्रकृति में जल तीन रूपों में विद्यमान है ठोस, तरल एवं गैस । ठोस के रूप में बर्फ जल का शुद्ध रूप है। इसके बाद वर्षा का जल, पर्वतीय झीलें, नदियाँ एवं कुएँ शुद्धता के क्रम में आते हैं। पृथ्वी पर प्रवाहित नदियों, तालाबों तथा झीलों इत्यादि के रूप में उपलब्ध स्वच्छ जल की मात्रा केवल सात प्रतिशत है। जल को प्रदूषित करने वाले तत्व जल में मौजूद आक्सीजन के स्तर को कम कर जल को पीने योग्य नहीं रहने देते हैं।

'पृथ्वी दिवस' बोधकथा में कैलाश पर्वत पर घटी एक घटना का वर्णन किया गया है। एक दिन माता पार्वती को पता नहीं क्या सूझा कि उन्होंने अपने दोनों पुत्रों से कहा, तुम दोनों में से जो सबसे पहले पृथ्वी का चक्कर लगाकर आ जायेगा उसे मैं अपने गले का हार दे दूँगी।

कार्तिकेय जी अपना समय नष्ट नहीं करते, अपनी सवारी मोर के साथ पृथ्वी की परिक्रमा प्रारम्भ कर देते हैं। अब गणेश जी अपने वाहन मूसक को बुलाते हैं और अपनी बुद्धि का प्रयोग कर माँ पार्वती

को प्रणाम करके उनकी एक प्रदक्षिणा करके उनके सामने आकर खड़े हो जाते हैं। माँ पार्वती भी प्रसन्न होकर गले का हार गणेश जी को पहना देती हैं।

कार्तिकेय जी जब पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके पहुँचते हैं तो उन्हें आश्चर्य होता है। गणेश जी उनसे कहते हैं- मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है। लेकिन एक बात मेरी समझ में आयी कि जगत जननी माँ पृथ्वी स्वरूपा हैं। इसीलिए मैंने इनकी प्रदक्षिणा कर ली और मेरा कार्य सिद्ध हो गया।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं – "अगर हम पृथ्वी को माता कहते हैं तो माता के लिए हम क्या सोचते हैं ? इस पर गौर करने की जरूरत है। इस समय पृथ्वी पर जो वातावरण है वह बहुत प्रभावित है। वातावरण प्रभावित होने का मतलब समय के साथ जलवायु परिवर्तन न होना। समय के साथ चीजें घटती हैं न, अपने समय में घटती हैं जो उनका वास्तविक रूप है। इसके पीछे जो मूल बात है वह है पृथ्वी के टेम्परेचर का बढ़ना। मैं आपको बता दूँ यह पृथ्वी इस समय जल रही है, बस आपको इन आँखों से दिख नहीं रहा है।"17

प्रकृति के समस्त संसाधन आज प्रदूषण की चपेट में हैं। हवा, जल और मिट्टी हमारे जीवन के आधार हैं। जिनके बिना जीवन की कल्पना ही असम्भव है। आज ये सभी अपना मौलिक स्वरूप एवं गुण खोते जा रहे हैं। ऐसे में शिव नारायण सिंह जी पर्यावरण के प्रति आगाह करते हुए कह रहे हैं कि- "हम प्रकृति का दोहन कर रहे हैं, प्रकृति के प्राकृतिक स्वरूप को नष्ट कर रहे हैं। प्रकृति का प्राकृतिक स्वरूप क्या है ? जंगल, पहाड़ नदियाँ उसके वास्तविक स्वरूप हैं। हम उसे नष्ट कर रहे हैं और नष्ट करने का परिणाम भी भोग रहे हैं।"18

इस सन्दर्भ में वे आगे कहते हैं कि " यह पृथ्वी करोड़ों-करोड़ों वर्ष पुरानी है और यहाँ लाखों-लाखों प्रजातियाँ रहती आ रही है, लाखों-लाखों जीव-जन्तु वनस्पतियाँ इस पृथ्वी पर हैं। पेड़ पौधे क्या करते हैं ? यह आपको पता है, पेड़-पौधे कार्बन डाई आक्साइड लेकर आक्सीजन बाहर करते हैं। अब इनकी संख्या घट रही है और आक्सीजन लेकर कार्बन डाई आक्साइड बाहर करने वालों की संख्या बढ़ रही है, फलस्वरूप इस वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड का परसेन्टेज बढ़ रहा है।"19

पर्यावरण की छतरी अर्थात ओजोन परत जो हमें सौरमण्डल से आने वाली घातक किरणों से बचाती हैं उसमें छेद होना वातावरण में बढ़ती कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा से उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग की समस्या दिनों-दिन घातक बीमारियों का प्रादुर्भाव व स्वास्थ्य संकट ये सब मानव के लिए बहुत घातक सिद्ध होंगे । औद्योगीकरण और मशीनीकरण के युग में प्रकृति पर अत्याचार होने लगा है। आज मानव समाज विलासितापूर्ण जीवन की चाह लिए हुए प्रकृति का अति दोहन करता जा रहा है।

ऐसे भयावह स्थिति को केन्द्र में रखकर शिव नारायण सिंह जी कहते है कि- "आप जानते हैं कि वायुमण्डल के ओजोन परत में छेद हो गया है। ओजोन परत क्या है? पृथ्वी तल से दस किलोमीटर से पचास किलोमीटर की ऊँचाई तक यानि कि चालीस किलोमीटर के रेन्ज में जो एरिया है उसमें परत-दर-परत ओजोन गैस है, उसी को ओजोन परत कहते हैं। अब उसमें छेद हो गया है। यह आपको पता ही है।"20

आज विकसित देशों की प्रभुता की लालसा ने अन्धाधुंध परमाणु हथियारों का जखीरा खड़ा करने एवं रासायनिक हथियार बनाने की होड़ ने मनुष्य को अन्धा बना दिया है एवं बढ़ती जनसंख्या के कारण मनुष्य ने जंगलों को काटकर कंक्रीट की बहु मंजिला इमारतें खड़ी कर ली है। वायुमण्डल में उपस्थित कार्बन डाई आक्साइड वातावरण के तापमान को भी नियन्त्रित करती है। पेड़ों के कटने के कारण वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड की निरन्तर बढ़ती मात्रा से वातावरण का तापमान दिनों-दिन बढ़ाता जा रहा है, जो प्रत्यक्ष रूप से वर्षा, सर्दी, गर्मी के चक्र को भी प्रभावित कर रही है।

पर्यावरण इन सारी चिन्ताओं को अपने आप में समेटे हुए है ऐसे में शिव नारायण सिंह जी कहते हैं – "प्रिय विद्यार्थियों, आपको इसके बारे में सोचना है, विचार करना है और निश्चित ही कुछ करना है। अगर आप तय कर लेते हैं, कुछ भी करते है, थोड़ा भी प्रयास करते हैं, मैंने आपको बताया ही कि इस पृथ्वी पर जो लाखों-लाखों प्रजातियाँ हैं, जो करोड़ों वर्ष से चली आ रहीं हैं, अगर आप उनमें से एक के भी करीब

पहुँचकर प्रकृति के करीब पहुँच सके या प्रकृति को अपने करीब ला सकें और ऐसा करने की कोशिश करें तो निश्चित ही आप जीवन के करीब हैं, आपका जीवन सार्थक है।"21

निष्कर्ष- निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में पर्यावरणीय चेतना पूर्ण रूपेण विद्यमान है। ये बोधकथाएँ केवल साहित्यिक व व्यावहारिक पहलुओं को ही नहीं अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं बल्कि नैतिक चेतना, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय चेतना जैसे मानवीय मूल्यों को भी विकसित करती हैं। छात्र-छात्राओं को अग्रिम भविष्य के लिए प्रेरणा देती है और सजग व जागरूक नागरिक बनाने में अपना योगदान देती हैं।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ बच्चों के अन्दर पर्यावरणीय चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, प्रदूषण, रासायनिक पदार्थों के प्रभाव, वनों का महत्त्व, नदियों, पहाड़ों, भौतिक प्रतिस्पर्द्धा व वन्य जीवों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों और पर्यावरण संरक्षण के विचारों को भरती हैं। साथ-ही-साथ उनमें अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

सन्दर्भ सूची-

1. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 316
2. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 316
3. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -227
4. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -227-228
5. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 131
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 132
7. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या- 34
8. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो, पहले ही बहुत देर हो चुकी है।' प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या- 36
9. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो', पहले ही बहुत देर हो चुकी है।' प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या- 37
10. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–173
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–174
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–175
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–251
14. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–215
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–215
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–283
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–428
18. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–429
19. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–429
20. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–429
21. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या–432

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का उद्घोष करती : शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ

सतीश कुशवाहा
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना– बोधकथा साहित्य की सफलता उसकी बोधगम्यता व सारगर्भिता में निहित होती है। इसकी सारगर्भिता के लिए शिव नारायण सिंह साहित्य का अनेक रूपों में सृजन करते हैं और उसमें अनेक प्रकार के सिद्धान्तों का समावेश करते हैं। उसमें सत्यम् - शिवम - सुन्दरम् की गूँज भी उनके इसी प्रयास का परिणाम है। इन तीनों तत्वों को भारतीय कथा-साहित्य व पारम्परिक साहित्य रचनाओं में व्यापक स्थान प्राप्त है।

साहित्य में सत्य का समाविष्ट होने से हमारा तात्पर्य है कि जीवनानुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करने से है। जीवन के सामान्य सत्य और साहित्य में प्रस्तुत किये गये सत्य में मौलिक अन्तर होता है। जीवन का सत्य अति यथार्थवाद है, जिसे साहित्य में हूबहू व्यक्त नहीं किया जा सकता। वहाँ उसे जीवन विकास के लिए अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

साहित्य में शिव-तत्व के समावेश से हमारा तात्पर्य उसमें कल्याणकारी भावनाओं के संचय से है, शिव लोकहित के पर्याय हैं। यह शिव-तत्व साहित्य को अमरत्व प्रदान करने वाला है। इसी वजह से साहित्य का अध्ययन करने वाला मानसिक शान्ति का अनुभव करता है। शिव तत्व से युक्त होने के कारण यह मानव मन उन्नति की ओर हो जाता है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में शिव-तत्व आदि से अन्त तक विद्यमान है।

साहित्य में सौन्दर्य के संचार के विषय में कोई भी व्यक्ति विपरीत मत नहीं रख सकता साहित्य के शुरुआत से अब तक उसे अधिकाधिक सुन्दर रूप में उपस्थित करने के प्रयास होते आये हैं और विभिन्न साहित्य, सिद्धान्त भी उनकी इसी प्रवृत्ति की सूचना देते हैं। साहित्य में सौन्दर्य के दो रूप हमारे सामने आते हैं- भावात्मक सौन्दर्य और कलात्मक सौन्दर्य।

साहित्य में भावों का यही महत्व है जो मानव शरीर में आत्मा का होता है। अत: अपने भावों को सुन्दर और प्रभाव-शाली रूप में उपस्थित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। भावों की भाँति काव्य में उन्हें उपस्थित करने की रीति को भी आकर्षक रूप प्रदान करने की आवश्यकता होती है। अतः कवि भाषा, शैली, छन्द, अलंकार इत्यादि विविध कलात्मक उपकरणों की सहायता से अपने काव्य को कला - सौन्दर्य प्रदान करते हैं।

भावना और कला के योग से साहित्य में जिस सौन्दर्य का सृजन होता है, वह अपने आप में अनुपम होता है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ मन को विशेष आनन्द प्रदान करने वाली हैं जो पाठक या श्रोता की थकी हुई चेतना को विश्राम प्रदान करती हैं।

बीज शब्द– बोधकथा साहित्य, भावात्मक सौन्दर्य, कलात्मक सौन्दर्य, सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्, उद्घोष

शोध आलेख– शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में सत्यम्-शिवम् और सुन्दरम् को एक दूसरे से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता। ये तीनों परस्पर एक-दूसरे के लिए पूरक का कार्य करते हैं। जब साहित्य में इन तीनों को सम्मिश्रित रूप में उपस्थित किया जाता है तभी उसमें वास्तविक प्रभाव का संचार हो पाता है।

' सत्यम्– शिवम्– सुन्दरम् की प्रतिष्ठा' समीक्षात्मक लेख में डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी कहते हैं कि- " शिव नारायण जी सत्यम्- शिवम् – सुन्दरम्' की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं, क्योंकि वही शाश्वत और स्थायी है। वे यह बात भली-भाँति जानते हैं कि यह दुनिया बन्धन है।" 1

उन्होंने यह भी कहा है कि " वर्तमान में जिस तरह से जीवन-मूल्य क्षरित हो रहें, जिस तरह हमारे संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, जिस तरह से उपभोक्तावाद और बाजारवाद के कुचक्र में हम फँसते जा रहे हैं, उसकी काट यही है कि बचपन से ही छात्रों में नैतिकता के संस्कार डाले जायें, उन्हें एक सार्थक जीवन दृष्टि दी जाये, उन्हें संस्कार-वान और एक संवेदनशील मनुष्य

बनाया जाये, उनके सहज विवेक को जागृत किया जाये। यह काम शिव नारायण सिंह बड़ी सक्षमता और ईमानदारी से अपनी कथाओं के माध्यम से कर रहे हैं। ठीक उसी प्रकार जिस तरह से पं. विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कथाओं के माध्यम से किया था।"2

'रामनाम महिमा ! बंदऊँ रामनाम रघुबर को व्याख्यात्मक लेख में प्रो0 श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी कहते हैं कि- राम एक कहानी हैं। राम तो इतना सबके हैं कि हर व्यक्ति की अपनी राम कहानी है। राम सत्य हैं, अन्तिम सत्य है, शाश्वत सत्य हैं, सत्य नारायण हैं। राम आस्था हैं, अवलम्ब हैं। वह अदेह भी हैं, सदेह भी हैं। वन में राम हैं, भवन में राम हैं। मन मन्दिर में राम हैं, तन मन्दिर में राम हैं, जन मन्दिर में राम हैं, जग मन्दिर में राम हैं। राम द्रष्टा हैं, स्रष्टा हैं, सृष्टि हैं, साक्षी है, साक्ष्य हैं।" 3

शिव नारायण सिंह ने अपनी बोधकथाओं के माध्यम से शिक्षा की ऐसी मशाल जला रखी है, जिसकी रोशनी बहुत दूर से एवं बहुत दूर तक अनुभव की जाती है। इनकी संस्था से निकलने वाले छात्र केवल शैक्षिक प्रमाण पत्र के साथ ही नहीं विदा होते हैं, अपितु वे अपने साथ एक ऐसा संस्कार भी लेकर जाते हैं जो उन्हें एक बेहद संवेदनशील और जिम्मेदार तथा कर्मठ नागरिक बनाता है। यह भीतर-बाहर से बच्चों के कायान्तरण की एक ऐसी दुर्लभ कहानी है जिसका श्रेय संस्थान के प्राचार्य शिव नारायण सिंह को जाता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'सर्वस्व' बोधकथा में एक ऋषि दम्पत्ति की कथा है। जिसमें ऋषि दम्पत्ति की तपस्या से प्रसन्न होकर ईश्वर ने वरदान माँगने को कहा। ऋषि दम्पत्ति ने कहा- हमें पुत्र चाहिए। उन्हें वरदान मिल गया, उनके यहाँ पुत्र पैदा हुआ लेकिन वह पुत्र अन्धा है। ऋषि दम्पत्ति दुःखी हैं पर कर भी क्या सकते। समय के साथ बच्चा बड़ा होकर गुरुकुल जाकर पढ़-लिखकर, दीक्षित होकर घर लौटा है। उसके मन में जिज्ञासा है अपने पिता से पूछता है क्या आप दोनों अन्धे हैं यदि अन्धे नहीं होते तो मैं अन्धा नहीं हुआ होता।

पुत्र का कहना है कि आप दोनों ज्ञानी हैं, आपके पास दृष्टि है फिर भी पुत्र मोह ने आपके सारे जीवन की तपस्या व्यर्थ कर दी। इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, जब माँगना है ईश्वर से, जो सब कुछ देने वाला है, तो उससे कम क्या माँगना ? उससे ऐसा माँगे जिससे सबका कल्याण हो, जिससे सर्वजन हिताय हो, जिससे सभी का लाभ हो। प्रभु! ऐसा दें जिससे सभी का कल्याण हो, जिससे सभी का लाभ हो, जो सभी के काम आ सके।" 4

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ विद्यार्थी और अध्यापक के बीच एक अलग तरह के रिश्ते का वितान रचती है, जिसके माधुर्य में विद्यार्थी तो अवगाहन करता ही है, स्वयं अध्यापक भी उससे गुजरता हुआ अपने को नित नवीन करता चलता है। वे स्वयं में इतने सरल, सहज और समर्पित व्यक्तित्व के स्वामी हैं कि उनके मुख से निकली हुई ये कथाएँ छात्रों से सीधे रिश्ते बना लेती हैं। यदि उनका व्यक्तित्व ऐसा हृदयग्राही नहीं होता तो ये कथाएँ कितनी भी बोधगम्य क्यों न होतीं, वह छात्रों के भीतर वैसी आत्मीय पैठ नहीं बना पाती।

कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि छात्रों के साथ संवाद से पूर्व शिव नारायण सिंह ने स्वयं अपने स्तर पर भी कुछ विशेष मानसिक तैयारी की हो, किन्तु जैसे-जैसे ये कथाएँ आगे बढ़ी हैं, उन्होंने स्वयं शिव नारायण सिंह के व्यक्तित्व को भी माँजने और निखारने का कार्य किया है। क्योंकि फूलों को सहेजने-संभालने वाले हाथ अपने-आप ही उनकी खुशबू से सराबोर हो ही जाते हैं। ऐसे में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जो भी पाठक हो या श्रोता इन बोधकथाओं से होकर गुजरेगा, उसकी हालत ठीक वैसे ही हो जायेगी जैसे किसी मैले- कुचैले कपड़े को डिटर्जेन्ट में धोये जाने से हो जाती है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'पश्चाताप' बोधकथा के माध्यम से बच्चों में चेतना व जागरुकता विकसित करते हुए शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, मुझे लग रहा है कि अभी भी आप चैतन्य नहीं हैं। आप चैतन्य होइए, जागिए और होश में आइए। क्योंकि कुछ विशेष करने का समय आ गया है, आप विशेष करने के लिए ही यहाँ आये हैं। प्रथम श्रेणी तो आप और भी जगह पा सकते थे। लेकिन यह विशेष कैसा होगा ? जब आपके सारे क्रियाकलाप विशेष होंगे, तभी आप कुछ विशेष कर सकेंगे।" 5

मुझे नहीं लगता कि शिव नारायण सिंह जी को इन कथाओं को रटने की आवश्यकता पड़ती है या पड़ी होगी। क्योंकि ये उनके तथा उनकी स्मृतियों का हिस्सा है, जिन्हें अध्ययन कक्ष से निकली हुई जिसे वे अपनी शैली में विद्यार्थियों के साथ सम्बोधन शैली में मनचाहा रुपाकार दे लेते हैं। चूँकि वे पहले से उनकी किसी भी संवाद का हिस्सा नहीं होती हैं। इसीलिए वे इन कथाओं को कहीं से भी जोड़ लेते हैं, कहीं से भी मोड़ देकर उसे किसी दूसरे प्रसंग से जोड़ देते हैं। वे प्रसंग इन कथाओं को आज के समय और समाज से जोड़ते हैं, आज के मनुष्य के लिए सार्थक और

प्रासंगिक होते हैं और जिनका नये मनुष्य के निर्माण के लिए अहम योगदान हो सकता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-सात) "जीवन दृष्टि बोधकथा के माध्यम से बच्चों को अपनी सामर्थ्य, शक्ति और साम्राज्य का स्मरण कराते हुए शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " जो तुम्हारा है, वह सदैव से तुम्हारा है, सदैव के लिए तुम्हारा ही रहेगा, बशर्ते तुम अपने अन्दर भाव उत्पन्न करो। उस अभाव को छोड़ दो, जो तुम्हारा रास्ता रोकता है। तुम भागना बन्द करो और वहाँ तक जहाँ तक तुम्हें पहुँचना है, क्योंकि यह तुम्हारा भ्रम है कि तुम भटके हुए हो।" 6

वस्तुतः ये कही और सुनाई गयी कथाएँ बोधकथाएँ ही हैं। जिनमें सुविधा और आवश्यकता के अनुसार बहुत कुछ जोड़कर उन्हें परिमार्जित, परिवर्तित और परिवर्धित किया गया है। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि अनगिनत कथाओं के आधार पर विद्यार्थियों के लिए पाठों की एक ऐसी लम्बी श्रृंखला तैयार की गयी है, जिससे जुड़कर विद्यार्थी अपने अन्दर तरह-तरह के प्रश्न, उत्तर, जिज्ञासा, समाधान, कौतुहल, आकुलता, व्याकुलता घटित होते हुए अनुभव करते हैं। इतना ही नहीं, इनके आधार पर वे अपने खुद के जीवन की जटिलता को हल करने के लिए एक सरल मार्ग खोजने के प्रयास के लिए उद्धृत होते हैं।

ऐसे में विद्यार्थियों के अन्दर उस धैर्य का समावेश भी होता है जो उन्हें बेहतर विकल्प उपलब्ध कराने के अवसर प्रदान करता है। उनके अन्दर वह जिजीविषा जागृत करता है जो उसे टूटने- बिखरने से बचाते हुए आगे बढ़ने के लिए संकल्पबद्ध करती हैं। आखिर यह संकल्प-शक्ति ही तो है जो एक साधारण से मनुष्य मोहनदास को महात्मा गाँधी बना डालती है, बेहद औसत कदकाठी के व्यक्तित्व को लाल बहादुर शास्त्री जैसा गरिमावान प्रधानमन्त्री बना डालती है।

मुझे लगता है कि अपने मौजूदा स्वरूप में ये कथाएँ विद्यार्थियों के अन्दर छिपी हुई उन शक्तियों को जगाने, उन्हें विकसित करने का कार्य करती हैं, जो मनुष्य को न केवल बड़े सपने देखने के लिए दृष्टि देती है, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए संकल्प-शक्ति भी प्रदान करती हैं।

जहाँ तक बोधकथाओं का सम्बन्ध है तो उनकी अपनी एक सघनता, समग्रता और सम्पूर्णता होती है जो एक निश्चित बिन्दु पर पहुँचकर पूर्णता प्राप्त करके ठहर जाती हैं और उसके आगे की यात्रा उनके श्रोता या पाठक के मन में घटित होती है। यदि इन संकलनों में संकलित कथाएँ सिर्फ बोध कथाएँ ही रही होती तो उनके प्रस्तुतीकरण के अलावा शिव नारायण सिंह का क्या योगदान होता ? और तब उनकी यहाँ चर्चा की भी क्या आवश्यकता होती ? क्योंकि वे तो पहले भी बार-बार अपने उसी रूप में या थोड़े-बहुत फेरबदल के साथ कही ही जाती रही हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-तीन) 'मौन की भाषा' बोधकथा में शिव नारायण सिंह कहते हैं कि-"प्रिय विद्यार्थियों, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जब वह कुछ व्यक्त-अव्यक्त खोजता है। तब मौन ही उसका मार्गदर्शक होता है, मौन ही उसे रास्ता बताता है, मौन ही उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है। जीवन जीने का विषय है, यही सत्य है। सत्य को जानने के लिए उसे आचरण में उतारना पड़ता है और आचरण की कोई भाषा नहीं होती। आचरण मूक होता है, समर्पण मूक होता है, ध्यान मूक होता है, निष्ठा, भक्ति, उत्साह, आशा, विश्वास ये सभी मूक होते हैं।" 7

सत्य और सौन्दर्य के सम्बन्ध पर विचार करने पर हम देखते हैं कि जहाँ सत्य किसी ठोस धरातल पर खड़ा होता है वहाँ सौन्दर्य की आधार-भूमि कल्पना होती है। सत्य और कल्पना एक दूसरे से सर्वथा विपरीत हैं। अतः साहित्यकार को अपनी रचना में कल्पना को अधिक उन्मुक्त नहीं होने देना चाहिए। साहित्य में कल्पना का प्रयोग तभी तक करना चाहिए जब तक वह पाठक स्वाभाविक प्रतीत हो। सौन्दर्य का शिव तत्व से अधिक निकट का सम्बन्ध है। जो भाव कल्याण रहित होता है वह सौन्दर्य की सृष्टि करने में भी असमर्थ रहता है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-चार) 'साहस और अभय' बोधकथा भगवान बुद्ध से सम्बन्धित बोधकथा है, जिसके निष्कर्ष स्वरूप शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि - " प्रिय विद्यार्थियों, परिस्थितियाँ चाहें जैसी भी हों, उन्हें आत्मसात् करें उनमें जीने की कोशिश करें, उनमें अपने को तपायें और उनमें ही अगर आप अपना उद्देश्य खोज पाते हैं तो निश्चित रूप से आप सफल होते हैं।" 8

शिव नारायण सिंह की कथाएँ जिस रूप में दस खण्डों में संकलित है, जिस रूप में वे अनेक विद्यार्थियों तक सम्बोधनों और उद्बोधनों के माध्यम से पहुँची हैं, उस रूप में उन्हें सम्बोध कथाएँ भी कहा जा सकता था। लेकिन वे कथाएँ विद्यार्थियों और पाठकों के लिए सिर्फ सम्बोधित भर नहीं है, बल्कि उनके अन्दर बोध का उद्घाटन भी करती हैं, ऐसे में उन्हें उद्बोधन कथाएँ भी कहा जा सकता था। हालाँकि इनका मूल उद्देश्य उस सम्बोधन और उद्बोधन के

माध्यम से विद्यार्थियों के सम्पूर्ण परिष्कार का है, ऐसे में इन्हें परिबोध कथाएँ भी कहा जा सकता है।

परन्तु इस नामकरण में भी कहीं कुछ छूट रहा है। क्योंकि परिष्कार का परिणाम तो विद्यार्थियों के अन्दर एक ऐसे प्रकाश के रूप में प्रकट होता है जो उनके जीवन-पथ को न केवल आलोकित करता है, वरन् उन्हें स्वयं भी प्रकाश स्तम्भ में बदल देने में सक्षम है। ऐसे में इन बोधकथा आधारित रचनाओं को 'प्रबोध कथा' का नाम देना अधिक प्रासंगिक समझता हूँ। इस प्रकार वे कथाएँ विद्यार्थियों के बोध या ज्ञान और संस्कार के परिष्कार तथा उनको प्रकाशमान बनाने की कथाएँ हैं और यही इनके सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की उद्घोषणा भी है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-चार) 'सांसारिकता से परे, बोधकथा में एक गाँव के मुखिया की कथा है, जो सन्त प्रवृत्ति के हैं। उनके माध्यम से शिव नारायण सिंह विद्यार्थियों को सत्य तक पहुँचने के लिए कहते हैं कि- " प्रिय विद्यार्थियों, मानव जीवन का उद्देश्य यही है। हमें संसार में रहना है। यह जो शरीर हमें मिला है, वह सांसारिक है। लेकिन इसी से हमें सत्य तक पहुँचना है और उस सत्य तक कैसे पहुँचेंगे ? मैंने कहा- अनुभूति से। आप सत्य की अनुभूति सभी जगह से कर सकते हैं। वह अकेला सत्य है उसे पाने की कोशिश कीजिए। क्योंकि वही जीवन का मूल लक्ष्य है और आपको वहाँ तक पहुँचना है।" 9

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-पाँच) बोधकथा 'समय सीमा' के माध्यम से समय की महत्ता और उसकी उपयोगिता को उद्घाटित करते हुए शिव नारायण सिंह कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों, आप जब लिमिटेड टाइम में, कम समय में किसी काम को करने की कोशिश करेंगे तो कोई जरूरी नहीं है कि वह काम आप उतने ढंग से सम्पन्न कर सके जितनी आपकी योग्यता है, दक्षता है, जितनी आपकी काबिलियत है, जो भी काम आपके जिम्मे है उसे समय के साथ बाँधिए। उसकी समय-सीमा तय कीजिए कि इस काम को इतने समय में कर लेना है।" 10

'विद्यार्थियों से...' खण्ड-पाँच 'निर्मल मन' बोधकथा में कबीरदास व उनके शिष्यों के गंगा-स्नान की कथा है। जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "अगर आप अपना मन निर्मल कर लेते हैं, तो निश्चित् रूप से आप बहुत कुछ कर सकते हैं और वह सब कुछ कर सकते हैं जो असम्भव है। सबसे बड़ी शक्ति आपके मन में छिपी हुई है। 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।' जिसने मन को जीत लिया उसके लिए और कुछ जीतने को शेष ही नहीं रह जाता है। ऐसे में निश्चित ही आपको आपका लक्ष्य मिलेगा।" 11

शिव नारायण सिंह की बोध कथाएँ शिव तत्व से आप्लावित हैं। इन्होंने वास्तव में सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के तथ्य को अपनाया है। भगवान शिव की कलात्मकता को इन्होंने आत्मार्पित किया है। इन्होंने मृतकाल व भविष्यकाल की कल्पनाओं व यथार्थ को तो अपनी कथाओं में पिरोया ही है। साथ-ही-साथ इन्होंने बड़ी ही इमानदारी के साथ वर्तमान को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान काल की परिस्थितियों को अपनी कथाओं में स्थान दिया है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) बोधकथा 'कीमत' में एक राजा की कथा है। जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह कहते हैं कि- " इस दुनिया में कोई भी चीज मुफ्त नहीं मिलती है। हर चीज की हमें कीमत चुकानी पड़ती है। यह बात अलग है कि वह कीमत हम प्रत्यक्ष रूप से चुका रहे हैं या परोक्ष रूप से चुका रहे हैं। कीमत तो हमें चुकानी-ही-चुकानी है। इस दुनिया में जिस भी चीज का हम उपभोग करते हैं, हमें उसकी कीमत चुकानी है।" 12

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओ की एक बड़ी विशेषता आत्मबोध व इन्द्रिय बोध है। रूप, रंग, गन्ध, स्पर्श और ध्वनि इन सबका ऐसा समुच्चय और इतना ताकतवर इन्द्रिय बोध इनसे पूर्व यदा-कदा ही देखने को मिला है। 'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-दो) 'अद्भुत शक्ति' बोधकथा में देखिए-देवता ने कहा- ठीक है, अगर मनुष्य गोताखोर हो जायेगा और समुद्र की गहराई में बहुत आसानी से पहुँच जायेगा तो फिर क्यों न मनोकामना पूर्ण करने वाली इस शक्ति को पर्वत के सबसे ऊँचे शिखर पर रख दिया जाये, वहाँ तो मनुष्य पहुँच ही नहीं पायेगा।" 13

भगवान बुद्ध की परिनिवार्ण स्थली कुशीनगर देवरिया से मात्र उन्तीस किलोमीटर दूर है। महात्मा बुद्ध का एक सार्वकालिक सन्देश है 'अप्प दीपो भव'। ऐसा लगता है यह सन्देश शिव नारायण सिंह में तो साकार हो ही रहा है उनकी बोधकथाओं के माध्यम से वे अपने हर विद्यार्थी, हर पाठक को भी 'अप्प दीपो भव' के सन्देश से परिपूरित कर देना चाहते हैं।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) बोधकथा 'शास्त्रार्थ' में ईसा मसीह की कथा है जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आप क्या बनना चाहते हैं? क्या करना चाहते हैं? अगर यह तय कर यें तो खुद ही जान जायेंगे कि उस लक्ष्य को प्राप्त कैसे करना है? यह बताने की जरूरत ही नहीं होगी क्योंकि आप भी उसी प्रोसेस में हैं। अगर आप

लक्ष्य तय नहीं कर पाते हैं तो आप भटक सकते हैं। अपना भटकाव रोकने के लिए आपको अपना लक्ष्य तय करना ही होगा।" 14

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-एक) बोधकथा 'अंहकार' के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि– "प्रिय विद्यार्थियों, आप इस दुनिया में इसीलिए आये हैं कि आप यहाँ से पूर्ण होकर जायें। अगर आप प्रयास करते हैं, अगर आप कोशिश करते हैं, अगर आप अहंकार को अपने अन्दर से बाहर कर देते हैं, जिस दिन आपने अहंकार पर विजय प्राप्त कर ली, समझिए उस दिन आप पूर्ण हो गये।" 15

दस खण्डों में फैली ये बोधकथाएँ स्वयं शिव नारायण सिंह को उस स्थान पर लाकर खड़ा कर देती हैं जहाँ वह किंवदन्ती बनने लगता है 'न भूतो न भविष्यति' जैसी स्थितियाँ बनती दिखाई देती हैं। ऐसी कोई शक्ति तो जरूर है जो शिव नारायण सिंह की जिह्वा पर बैठ जाती है और वे इन कथाओं का निमित्त बन जाते हैं, माध्यम बन जाते हैं, जिससे वे अपने उद्देश्य को पूर्णता प्रदान कर देते हैं।

'सत्यनिष्ठ' बोधकथा में एक ऐसे व्यक्ति की कथा है, जो अपनी सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध है जिसके माध्यम से शिव नारायण सिंह कहते हैं कि - "प्रिय विद्यार्थियों, सत्य ही ईश्वर है। सत्य ही परमेश्वर है, सत्य ही सब कुछ है। यहाँ जो कुछ भी है, वह पुराना है, बासी है, व्यर्थ है। तुम्हें नवीन खोजना है, तुम्हें नवीन करना है. तुम्हें इसी नवीन में पाना है, क्योंकि यहाँ जो भी है, वह मार्ग है, मंजिल नहीं है और जो तुम करोगे उसी से तुम्हारी मंजिल का रास्ता मिलेगा, उसी से तुम मंजिल तक पहुँचोगे।" 16

शिव नारायण सिंह जी कथाओं की समाप्त हो रही मौखिक परम्परा को नया रूप दे रहे हैं। प्रार्थना सभा में पंक्तिबद्ध विद्यार्थियों को एकाग्र होकर कथा सुनाना और उनके नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण करना आज के समय में चुनौती भरा काम है। सम्भव है कि इस प्रकरण में कई ऐसे विद्यार्थी भी होते होंगे जिन्हें इन कथाओं को सुनना प्रिय नहीं लगता होगा। हो सकता है कि इस काम को वे समय की बर्बादी समझते हो। लेकिन इन कथाओं को पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि जो विद्यार्थी आज उनके महत्त्व को महसस नहीं कर पा रहे हैं, हो सकता है कि वे आगे चलकर याद करें कि कभी इस तरह से कुछ बातें उन्हें समझाई गयी थीं।

मेरा विश्वास है कि आज के विद्यार्थियों को नैतिकता और आत्मीयता की भरपूर जरूरत है। सफलता की दौड़ में सर्वाधिक नुकसान हृदय पक्ष का ही होता है। हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि हृदय पक्ष को छोड़कर हम खुश नहीं रह सकते। जो स्वयं खुश नहीं है वह दूसरों को भला क्या खुशी देगा ? आत्मीयता और नैतिकता से ही मन को प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

नैतिक चेतना वह है जिससे मनुष्य और समाज के बीच पारस्परिक सम्बन्ध मजबूत होते हैं। इसी से व्यक्ति अपने प्रेम सहयोग व प्रेरणा से निज-स्वार्थ को त्याग कर कार्य करते हैं। क्योंकि नैतिक चेतना के बिना समाज जीवित ही नहीं रह सकता है। इसीलिए समाज में एक नैतिकता का स्वरूप तैयार करना आवश्यक है। शिव नारायण सिंह जी निरन्तर नैतिक चेतना को अपनी बोधकथाओं के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

'धरती पर धूल-कण खोजती वर्षा की बूँदे' समीक्षात्मक लेख में सर्वेन्द्र विक्रम सिंह कहते हैं- शिव नारायण सिंह कथा-कथन पद्धति को अपनाकर अपने विद्यालय के छात्र-छात्राओं में नैतिक गुणों का रोपण बड़े ही सरल और सुरुचि पूर्ण ढंग से करते हैं, ताकि उनके अन्दर सदाचार, त्याग, प्रेम की भावना विकसित हो, जिससे एक सुसंस्कृत समाज की स्थापना हो सके ।" 17

वर्तमान में शिक्षा के आधुनिकीकरण के बाद भी नैतिकता पर आधारित शिक्षा की चर्चा तो की जा रही है। परन्तु पाठ्यक्रम की शिक्षा के अलावा किसी भी पाठशाला में बच्चों को नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ाया जाता है। सच्चा मनुष्य कैसे बनें इसका पाठ पढ़ाया जाना अति आवश्यक है। शिव नारायण सिह की बोध कथाएँ इस कार्य को पूर्ण करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं। वे अपने विद्यार्थियों व पाठकों को नैतिकता, व मानवीयता का सन्देश सुनाकर मनुष्यता से भर देते हैं।

'आज के चाणक्य: विद्यार्थियों के प्रेरणास्रोत' समीक्षात्मक लेख में डॉ. महेशचन्द्र सक्सेना कहते हैं कि "शिक्षक एक कुशल शिल्पी की तरह बच्चों को परम्परागत पाठ्य क्रम के साथ नई दिशा देने का कार्य करता है। बच्चों में उनके बचपन का समय सीपियों से मोती चुनने का स्वर्णिम समय होता है। बचपन आकाश को मुटठी में भर लेने का जज्बा है। निरीह जीवन का दूसरा नाम बचपन ही तो है। ऐसे अनगढ़ बचपन को गढ़ने का कार्य शिक्षक करता है। शिक्षक प्रेम से और डाँट से बच्चों को संस्कारित करता है ।" 18

'मेरे प्रिय, जागो, पहले ही देर हो चुकी है' के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी सन्देश देते हुए कहते हैं कि "आप इस शरीर रुपी वीणा को उतना ही टाइट

करेंगे, उतना ही कसेंगे, जितने से एक सम्यक जीवन आप जी सकें। जरूरत है जीवन को सम्यक दृष्टि से देखने की, जीने की और इस दुनिया में सब कुछ सीखने की।" 19

छात्रों के हौसले को बढ़ाते हुए वे कहते हैं कि "इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी कोई बड़ा परिवर्तन हुआ है तो उसका कर्णधार युवा छात्र ही रहा है। आज फिर मैं कह रहा हूँ, कोई भी मूवमेन्ट हो, उसका कर्णधार युवा छात्र ही रहा है, रहेगा और आप युवा है, आप अपने को युवा मानते हों, न मानते हों, लेकिन मैं आपको युवा मानता हूँ।" 20

निष्कर्ष – इन ढ़ेर सारे सन्दर्भों को ध्यान में रखकर शिव नारायण सिंह के इन प्रयासों का मूल्यांकन किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि वे दूरगामी फल प्रदान करने वाला श्रम कर रहे हैं। वे एक ऐसे प्राचार्य हैं जो शैक्षणिक संस्थाओं के बाजारीकरण के खिलाफ प्रयासरत है। वे चाहते तो निश्चिन्त होकर अपने बच्चों को सफलता की दौड़ में ठेल सकते थे, मगर उनकी चिन्ता है कि हमारे विद्यार्थी अपने जीवन में खुश रहें और अपने कर्मो से संसार को सुखी बनाएँ।

स्पष्ट-सी बात है कि जो व्यक्ति इतने बड़े संकल्पों और विचारों के साथ जीवन के कर्मक्षेत्र में उतरेगा, उसमें ऐसी जीवनी शक्ति तो होगी ही जिसके सम्पर्क में आने से दूसरे लोग भी कृत-कृत्य हो उठेंगे। उनके बड़प्पन और उदारता का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि कुछ कथा-प्रसंगों में उन्होंने अपने आपको भी प्रश्नों के घेरे में खड़ा करते हुए निरपेक्ष भाव से बातें की हैं। वे बच्चों को यह बिल्कुल नहीं जताना चाहते हैं कि उनका आचरण सर्वथा निष्कलंक है।

शिव नारायण सिंह भी एक सामान्य मनुष्य की तरह ही विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं। कदाचित इसलिए भी उनके बातों की ग्राह्यता बढ़ी है और इस प्रकार वे विद्यार्थियों और अपने बीच के फासले को लगातार कम करके निकटता बनाये रखने में सफल हुए हैं। ऐसे में हम स्पष्टत: कह सकते हैं कि उनकी बोध कथाएँ सत्यम्- शिवम् सुन्दरम् का उद्घोष करते हुए पूर्णता प्राप्त कराने वाली हैं।

सन्दर्भ सूची-

1. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -57
2. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -59
3. प्रो0 श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, 'मन मानस में राम' वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -19
4. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 345
5. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 399
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 98
7. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 209
8. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 88
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 282
10. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 30
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 185
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 46
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 145
14. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 106
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 210
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 614
17. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -61
18. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -157
19. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो पहले ही बहुत देर हो चुकी है।', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 68
20. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो पहले ही बहुत देर हो चुकी है।', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या - 97

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं का पुनरावलोकन : शिक्षा पद्धति को भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ों से जोड़ने का भगीरथ प्रयास

संजू कुशवाहा
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना–प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज, देवरिया में शिक्षा के अपने प्रयोगों के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी ने यह सिद्ध कर दिया है–

लीक-लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत।
लीक छाँड़ि के तीनों चलै, सायर सिंह, सपूत।।

अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में छात्रों के साथ संवाद की पाश्चात्य शैली अपनाने की जगह शिव नारायण सिंह विशुद्ध भारतीय पद्धति को आधार बनाकर शिक्षण की जिस विधा का पौधरोपण किया वह अब बरगद बनकर सभी को शीतलता प्रदान कर रहा है। इनके लिए पाश्चात्य शैली का अनुकरण करना समयानुकूल और सरल पथ होता लेकिन पथ का राही बनने की जगह एक युग प्रवर्तक की तरह अपना पथ खुद चुना। इनकी दूरदृष्टि, मेहनत और समर्पण के त्रिआयामी संयोग ने इन्हें आधुनिक काल का विष्णुगुप्त बनाया है। इनकी बोधकथाएँ पढ़कर 'जथा नाम तथा गुण' की उक्ति याद आती है।

शिव नारायण सिंह की कथाएँ सही मायने में 'शिवोऽहम्' के भाव को चरितार्थ करती हैं। कथाओं के माध्यम से छात्रों में जो नैतिकता बोध, सामाजिक मूल्यों की चर्चा, अपनी संस्कृति और सभ्यता की बातें, ज्ञान-विज्ञान का विमर्श आदि सभी कुछ समाहित है इन बोधकथाओं में। एक ऐसे समय में जब शिक्षा के मंदिरों में नैतिक शिक्षा की व्यवस्था का लगभग लोप हो चुका है, तब यह भगीरथ प्रयास तिमिर के बीच टिमटिमाते तारों के मध्य चंद्रमा की भाँति शीतल प्रकाश फैला रहा है। शिव नारायण सिंह ने अपनी बोधकथाओं के माध्यम से समकालीन शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी चिन्ता ,शिक्षा के माध्यम से मूल्यों का रोपण कैसे किया जाए? का समाधान प्रस्तुत करते हुए दूसरों के लिए पथ-प्रशस्त किया है।

बीज शब्द– नवोनमेषी, संवादधर्मिता,आत्मविश्वास, धर्म-दर्शन, शक्तिपीठ, स्वर्णाक्षर, प्रेरणाशक्ति, पुनीत, कौशलयुक्त, जीवन-विषयक

शोध आलेख– शिव नारायण सिंह समकालीन समय के महान शिक्षा दार्शनिक है। विश्व के सभी महान शिक्षा शास्त्रियों और दार्शनिकों ने अपने शैक्षिक दर्शन के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को साकार रूप देने के लिए शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की। इसमें प्लेटो द्वारा स्थापित अकादमी, फ्रॉबेल द्वारा स्थापित किन्डरगार्डेन, मारिया मांटेसरी द्वारा स्थापित मांटेसरी स्कूल, गीजू भाई बधेका द्वारा स्थापित दक्षिणमूर्ति बालमन्दिर, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन, महर्षि अरविन्द द्वारा स्थापित श्री अरविन्द आश्रम प्रमुख हैं।

ठीक इसी तरह शिव नारायण सिंह ने अपने शैक्षिक प्रयोगों के लिए प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज की स्थापना की। इनके समस्त शैक्षिक प्रयोग की आधार भूमि यही प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज है। यह कॉलेज इनके नवोनमेषी प्रयोगों के लिए जाना जाता है। इसी कॉलेज में प्राचार्य के रूप में प्रार्थना सभा में छात्र छात्राओं के साथ संवाद करते हुए इन्होंने बोधकथाओं के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा कैसे प्रदान किया जाए इसकी रूपरेखा समस्त शिक्षा जगत के सम्मुख प्रस्तुत की। इनके द्वारा रचित 'विद्यार्थियों से...' विशाल वाङ्मय को देखकर विस्मय होता है। यह उनकी दूरदृष्टि,लगन और परिश्रम का ही परिणाम है कि बोधकथाओं का यह प्रयोग मूल्यपरक शिक्षा के लिए भविष्य में भारत सरकार की शिक्षा नीति का आधार बनें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

'विद्यार्थियों से...' बोधकथाओं का सम्पूर्ण वाङ्मय मेरे सम्मुख है। इसे पढ़ते हुए इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि शिव नारायण सिंह न सिर्फ

एक आदर्श शिक्षक हैं अपितु वे महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, समाजविज्ञानी, वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न प्रबंधनकर्त्ता भी हैं। इन्होंने बोधकथाओं के शिल्प को विद्यालय की दिनचर्या में इस तरह पिरोया कि वह शिक्षा का एक अंग बन गई है। बोधकथाओं का यह प्रयोग दूसरे शिक्षण संस्थानों के लिए अनुकरणीय है। आप मानव मन को समझने वाले कुशल मनोवैज्ञानिक है। शिव नारायण सिंह ने इस बात को समझा कि मानव सभ्यता ने अपनी आने वाली पीढ़ी की शिक्षा का प्रारम्भ कहानियों के माध्यम से की। शुरुआती दौर में चरित्र-चित्रण और कहानियाँ ही शिक्षा का माध्यम थीं।

हम सभी बचपन से ही अपने दादा-दादी, मुहल्ले के बड़े-बुजुर्गों के मुखारविन्द से कहानियाँ सुनते आ रहे हैं। इन कहानियों ने हम सभी का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं के विविध विषयों पर मार्गदर्शन किया। धार्मिक कथाओं ने धर्म और कर्म के बीच सन्तुलन करना सिखाया। कहानियाँ बालमन के लिए सबसे ज्यादा कौतूहल और आनन्द का विषय होती हैं। इसके माध्यम से बच्चे समाज के नियमों, नैतिक व्यवहार, परम्पराओं, धार्मिक रीतियों आदि का ज्ञान प्राप्त करते थे। प्राचीन काल में गुरुकुल में शिक्षा का प्रमुख माध्यम कहानियाँ ही थी। हमारे यहाँ सभी प्रमुख ग्रंथ–महाकाव्य, पुराण और पंचतंत्र, कथासारितसागर, बृहतकथामंजरी आदि ग्रंथ कहानियों से भरे पड़े हैं।

शिव नारायण सिंह का कथा संसार अत्यन्त विस्तृत है। विद्यार्थियों से संवाद करते हुए इन्होंने शिष्य और गुरु की संवाद परम्परा को पुनर्जीवित किया है। यह व्यवस्था हमारी समूची शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ रही है। इनकी कृतियों की समीक्षा पर आधारित पुस्तक 'मूल्यों के निर्माण कलश' को पढ़ते हुए इसे बखूबी समझा जा सकता है। इनके कार्यों के महत्त्व को इसी से समझा जा सकता है कि विख्यात आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय अपने समीक्षात्मक लेख 'बोधकथाओं का आधुनिक रूप' में शिव नारायण सिंह की रचनाओं पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि " शिव नारायण सिंह अपने छात्रों से जो संवाद करते हैं, उसका सम्बन्ध और स्वभाव उपनिषदों की संवादधर्मिता से है और प्लेटो के संवादों से भी । दुनिया भर में संवादधर्मिता का सर्वोत्तम रूप कथाओं में मिलता है।" 1

एक जगह वे लिखते हैं कि, " शिव नारायण सिंह का शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी प्रयत्नों और प्रयोगों की याद दिलाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुत बड़े आदमी थे, बड़े होने के सभी अर्थों में, इसलिए उनका प्रयत्न और प्रयोग भी बड़े थे तथा उसका परिणाम भी बड़े निकले।

शिव नारायण सिंह उतने बड़े आदमी नहीं हैं,लेकिन उनकी मूल चिन्ता, चेतना और कोशिश वैसी ही है, जैसी रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।

शिव नारायण सिंह जो विद्यालय चलाते हैं और उसमें छात्रों से जैसा आत्मीय और अंतरंग सम्बन्ध विकसित करते हैं, वह अनूठा और अनुकरणीय है। शिव नारायण सिंह शिक्षा की भारतीय परम्परा और पश्चिमी परम्परा के सुमेल से छात्रों में ऐसी चेतना जगाते हैं जो उन्हें आत्म-बोध के साथ साथ जगत-बोध के विकास की प्रेरणा देता है।" 2

पद्मश्री डॉ. रमेशचंद्र शाह लिखते हैं- "सोचता हूँ, कहाँ कब सुनी थी ये कथाएँ हमने। अपने माँ -बाप, गुरुजनों या घर में आने वाले सयानों, बड़े-बूढ़ों या रमता जोगी के मुँह से? अरे नहीं। फिर स्वाद इनका वैसा पुराने आख्यानों जैसा क्यों है ? वही चाव क्यों जग रहा है मन में। यहाँ अंगद और रावण तपस्वी-मुनि-बुद्ध,महावीर, नानक, कबीर ही नहीं है, इसी आपके शहर के परिचित भी हैं, राजा ही नहीं, मचान पर रात बिताने वाला घर का बुजुर्ग भी है, गाँधी के बंदर भी हैं,कई सारे नए जमाने के कैरेक्टर्स भी हैं ।" 3

इसी लेख के अंत में चर्चा करते हुए डॉ. शाह लिखते हैं कि- " तो धन्यवाद, तुम्हारा इन दैनिक उद्बोधनों के उद्गम इस शिक्षा-द्रोही, शिक्षक-द्रोही, ज्ञान-द्रोही, जीवन-द्रोही समय का रुख पलट देने जैसे अध्यवसाय में सिर से पॉव तक डूबे मेरे सहयात्री! तुमने, तुम्हारी इन करतूतों ने मुझमें वह ईमोशन जगा दिया,जो मैं तो समझ बैठा था, आज मर चुका है, अब नहीं जगेगा कभी। खत्म हो चुका है वह सब, उजड़ चुकी है वो दुनिया।

तुम्हारी बसाई इन किस्से- कहानियों की नहीं, सचमुच के रागों, जीवन-रागों की दुनिया एक समूची पीढ़ी को दीक्षित कर सकती है और करेगी, बशर्ते लोगों तक ये पहुँचे, बशर्ते स्वयं अध्यापक नाम के जीव जो इस देश में लाखों की तादात में हैं और अपनी भूमिका, अपना स्वधर्म, अपना महत्त्व सब भूल चुके हैं,

इन्हें पढ़ें, गुनें। तब वे पाएँगे कि उन्हें न केवल हनुमान की तरह सब याद आ गया है बल्कि वे जरठ जामवंत वाली भूमिका भी निभा सकते हैं- हजारों आत्म-विस्मृत हनुमानों को याद दिलाने की कि वे कौन हैं? और क्या कर सकते हैं? आज भी। अभी भी।" 4 पद्मश्री डॉ. रमेशचंद्र शाह की उपरोक्त टिप्पणी शिव नरायण सिंह के कार्यों के महत्त्व को रेखांकित करने के लिए पर्याप्त है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) 'सार्थकता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अगर आप अपनी उपयोगिता कायम रख सकते हैं, आप अपनी उपयोगिता बढ़ा सकते हैं, आप इस समाज में अपने को उपयोगी सिद्ध कर सकते हैं तो निश्चित रूप से आपका महत्त्व है और तब यह पूरा संसार, पूरी दुनिया, पूरा समाज आपके सामने नतमस्तक होगा।" 5

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) 'सर्वश्रेष्ठ धर्म' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, न कोई धर्म, न कोई व्यवस्था और न ही किसी के सहयोग से आप उन्नति कर पायेंगे। उन्नति के मूल में आपको स्वयं होना होगा, उन्नति तभी सम्भव है अन्यथा असम्भव है। सिद्धार्थ से बुद्धत्व की यात्रा बुद्ध के अपने प्रयत्न की यात्रा थी। आप भी बुद्धत्व प्राप्त कर सकते हैं लेकिन प्रयत्न आपको ही करना होगा। कोई धर्म, कोई व्यवस्था आपके लिए सहायक मात्र हो सकती है, वह आपको लक्ष्य तक पहुँचा नहीं सकती है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आपको स्वयं प्रयत्न करना होगा।" 6

इसी तरह इनके सम्पादन में प्रकाशित एक और कालजयी रचना 'तू फिर मेरी माँ बन' की चर्चा अवश्य करना चाहूँगी। सम्बन्धों के सतही होते दौर में माँ को समर्पित और केंद्र में रखकर पुस्तक का प्रकाशन शिव नरायण सिंह का एक और सराहनीय कार्य है। इस पुस्तक में 34 अलग-अलग कालजयी लेखकों की रचनाएँ सम्मिलित की गई है।

सभी का विषयवस्तु है- माँ । इस मायने में यह अनूठा संग्रह है जिसमें कविता, निबंध, संस्मरण सब कुछ एक साथ उपलब्ध है। इसमें कालजयी रचनाकारों यथा- मुंशी प्रेमचंद, प्रो. चितरंजन मिश्र, प्रो. सदानंद शाही की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं तो दूसरी तरह राष्ट्र की चिन्ता को आकार देने वाले नायकों जैसे- स्वामी विवेकानंद, गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, आदि के लेख भी सम्मिलित किए गए है। इससे यह रचना संग्रह व्यक्तिगत पुस्तकालय के सेल्फ की सबसे सराही जाने वाली कृति बन जाती है।

इस संग्रह में संकलित डॉ. अष्टभुजा शुक्ल की रचना 'कुमाता न भवति' संग्रह के श्रेष्ठ निबंधों में से एक है। इसका एक उद्धरण- " माँ सृष्टि और पालन का पर्याय है। जिसे नाभ-नाल का सम्बन्ध कहते हैं वह सम्बन्ध सिर्फ माँ से जुड़ता है। नवजात की नाभि का नाल माँ के गर्भ से इस तरह अविछिन्न है कि काटने के बाद ही शिशु की सत्ता संसार में अलग बन पाती है। इसीलिए गर्भवती को ससत्व अर्थात् एक और प्राणी की धात्री कहा गया है।" 7

यह वाक्यांश इस महत्त्वपूर्ण संग्रह के महत्ता को दर्शाता है। अगर आपको माँ की महिमा के सम्बन्ध में एक साथ कविता, निबन्ध, धर्म -दर्शन में माँ के सम्बन्ध में चिन्तन, सामाजिक और पारिवारिक जीवन में उसके योगदान को जानना समझना है तो इस एक संग्रह का अध्ययन पर्याप्त होगा। इसमें एक तरफ वेदवाक्य - "माता भूमि : पुत्रोऽहं पृथिव्या:" की घोषणा है तो दूसरी तरफ आदि शंकराचार्य के कथन – "कुपुत्रो जायेत कवचीदपि कुमाता न भवति" हमारा मार्गदर्शन करते हैं। शक्तिपीठों की स्थापना के सम्बन्ध में लोककथाओं की चर्चा के साथ ही सम्पूर्ण संसार को जननी की सृजन शक्ति का विस्तार बताया है। सबसे बड़ी बात कि संग्रह के विभिन्न लेखकों की रचनाएँ माँ के विविध रूपों की चर्चा करते हुए उसके वत्सल और सृजनशील रूप को सबके सामने रखती है।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'इन्द्रिय विजय' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, जो लोग पढ़ते हैं, समझिए, उन्होंने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लिया है और जो नहीं पढ़ते हैं वे कोशिश करें अपनी इन्द्रियों को वश में करने की, अपने मन को अपने उद्देश्य में लगाने की। आपके सामने जो भी कार्य हैं उन्हें पूरी निष्ठा से कीजिए, यही इन्द्रिय विजय है। आपको होमवर्क दिया जाता है, उसे पूरा नहीं करते हैं। परिणाम, क्लास में डाँट पड़ती है, पनिशमेंट दिया जाता है। बताइए, कितने दुःख की बात है ! यहाँ किसलिए आते हैं, पनिशमेंट पाने के लिए आते हैं या और भी कोई उद्देश्य

है यहाँ आने का ?" 8

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'श्रद्धा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, क्या आपको अपने आप पर है विश्वास, आपको अपने आप पर है आस्था, आपको क्या लगता है ? अगर आपको अपने आप में आस्था होती, अपने आप पर विश्वास होता, अपने आप पर भरोसा होता तो निश्चित रूप से जो बात आपको एक बार बता दी जाती है फिर उसे दोबारा नहीं बताना पड़ता। लेकिन आपको किस पर विश्वास है, जानते हैं ? आपको विश्वास है डाँट पर, फटकार पर।" 9

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'संचय' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, इस दुनिया में कोई भी परिवर्तन, कोई भी नया काम, कोई भी बड़ा काम अगर किसी ने किया है तो विद्यार्थी जीवन में ही किया है। बहुत कम लोग हैं जो बाद की उम्र में कुछ ऐसा किये हैं। अधिकतर लोगों ने जो भी श्रेष्ठ किया है वह इसी समय में किया है।" 10

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'मनमर्जी' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " प्रिय विद्यार्थियों, अगर परिस्थितियाँ उतनी प्रतिकूल नहीं होतीं तो रिजल्ट इतना अनुकूल नहीं आता। परिस्थितियाँ जितनी ही विषम होती गयीं, जितनी कठिन होती गयीं उतना ही हमारे अन्दर दमखम उत्पन्न होता गया और हम विजय प्राप्त किये, हम स्वतंत्र हुए।" 11

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'समता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "यहाँ का जो वातावरण मिला है, वह सबके लिए सिमेट्रिकल है। ईश्वर ने जिसे भी अवसर दिया है, पैरलल दिया है, बराबर दिया है। यह अलग बात है कि कुछ लोग उसे एचीव कर जाते हैं, कुछ लोग उस पर ध्यान नहीं देते, गौर नहीं करतें। लापरवाही करते हैं और वे पिछड़ जाते हैं।" 12

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'निःस्वार्थ सेवा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आपके जीवन का यह शुरुआती दौर है। आप जो भी बनने जा रहे हैं, आप कल जो भी करने को होंगे, जो कुछ भी करेंगे, उसमें अन्तिम लक्ष्य आपको रखना होगा सेवा और ऐसी सेवा जो निःस्वार्थ हो। वही फलित होगी, उसका ही मतलब है। स्वार्थ से संचित सेवा या जिसमें स्वार्थ निहित हो, ऐसी सेवा व्यर्थ है।" 13

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'पागलपन' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, अपने को धोखे में न रखें, गलतियाँ न करें, यह पागलपन छोड़ें। जो तय करें उसे हर कीमत पर निभाने की कोशिश करें। जो अच्छी बात है उसे ग्रहण करें, जो उचित समझ में नहीं आतीं हैं उन्हें एवाइड कर दें। आखिर करेंगे तभी न होगा, नहीं करेंगे तो फिर वही स्थिति जैसे थे वाली। अभी मैंने कहा आपसे कि जो बात मैं मना करता हूँ वही आप करते है, जो मैं कहता हूँ यह न करिए और वही आप करते हैं। अभी वक्त है सोचने का, समझने का, सोचे-समझें, कोशिश करें, प्रयास करें निश्चित ही आपको सफलता मिलेगी।" 14

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'छुट्टी' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आप थोड़ा-सा अपने में परिवर्तन लाइए, तथ्यों को समझिए और उस समझ के अनुसार आचरण कीजिए, निश्चित ही आप अपने लक्ष्य तक पहुँचेंगे। इन गौण चीजों को छोड़ें, इन तुच्छ चीजों के फेर में मत पड़ें, भटकाव से बचें। ये जो ढेरों काम आपके पास है उसका कोई मतलब नहीं है। आपको उसके बारे में सोचना नहीं है। उसके बारे में कोई पूछता नहीं है, वह कोई लक्ष्य नहीं है, वह महत्त्वपूर्ण भी नहीं है। जिसके पीछे आप भटक रहे हैं, जिसके पीछे आप परेशान हैं। क्यों परेशान हैं ? मैं यही न आपसे कह रहा हूँ कि अपने विवेक को जागृत कीजिए, अपनी दृष्टि को मंजिल पर रखिए, निश्चित ही आप अपने लक्ष्य पर होंगे।" 15

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'वास्तविकता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, बस एक और कोशिश करके तो देखें, अपनी कल्पना को यथार्थ धरातल देकर तो देखें, उसके वास्तविक पक्ष की सोचें, उसके वास्तविक पक्ष को ग्रहण करें, उसके वास्तविक पक्ष को जानें, उसके वास्तविक पक्ष का क्रियान्वयन करें, उसके वास्तविक पक्ष को स्वरूप प्रदान करें।"16

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छः) 'बचपन'

बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों जीवन का गणित एकदम साफ है. क्यों साफ है ? क्योंकि यहाँ गणित जैसी कोई बात है ही नहीं, यह तो केवल और केवल तुम्हारी मर्जी है। जो भी है तुमसे है, तुम्हारे लिए है, तुम्हारा है। मेरा तो बस इतना ही कहना है कि कहीं पछताना न पड़े, नहीं तो तुम कहोगे कि आप भी मिले तो कुछ बता न सके, कुछ समझा न सके, कुछ कर न सके। मैं, जो मेरा दायित्व है उसके निर्वहन से चूक न जाऊँ, बस इसीलिए कह देता हूँ।"17

शिव नारायण सिंह की एक और महत्त्वपूर्ण कृति है 'मेरे प्रिय जागो- पहले ही बहुत देर हो चुकी है।' इस संग्रह में कुल 16 रचनाएँ है। इस संग्रह की रचनाएँ छात्रों को प्रेरित करने के उदेश्य से लिखी गई हैं। शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के माध्यम से छात्रों के साथ न सिर्फ जीवन्त संवाद करते हैं बल्कि उनके अचेतन मन में साहस, संस्कार, आत्मविश्वास और प्रेरणाशक्ति जागृत करते है।

वास्तव में शिव नारायण सिंह अपनी बोधकथाओं के माध्यम से युवाओं को जागृत ही नहीं कर रहे होते हैं अपितु अपने सपनों के अनुरूप भारत के भविष्य को भी गढ़ रहे होते हैं। यह कार्य वे बिना किसी दिखावे अथवा उकसावे के सिर्फ आत्मप्रेरणा से उसी प्रकार कर रहे होते हैं जैसे कोई सन्त जगत कल्याण हेतु एकांत साधना में लीन हो अनुसंधान करता है।

शिव नारायण सिंह का रचना संसार सिर्फ आत्माभिव्यक्ति नहीं है अपितु उसमें सम्पूर्ण शिक्षा जगत का पथ प्रशस्त करने का माद्दा है। इनके संपर्क में मैं जितनी बार आयी इनके ऋषि तुल्य जीवन शैली को देखकर विस्मित भी हुई और श्रद्धानत भी हुई। आपका तपस्वियों-सा जीवन और निष्काम भाव से की जा रही साधना अब शिक्षा जगत के बीच चर्चा का विषय बन गई है। विगत 40 वर्षों की नित साधना का सुपरिणाम अब शिक्षा जगत में भारतीय ज्ञान परम्परा की पुनर्स्थापना के रूप में देखा जा रहा है। यह सामान्य घटना नहीं है कि जब देश के ख्यातिलब्ध विश्वविद्यालयों के बहुप्रतिष्ठित प्रोफेसर जो कार्य नहीं कर सके वह देवरिया जैसे पिछड़े जनपद में प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज के प्रांगण में शिव नारायण सिंह कर रहे हैं।

जो प्रयोग विश्वविद्यालयों के हिस्से की पूँजी बन सकते थे उसे शिव नारायण सिंह ने भगीरथ प्रयास से नवीन आयाम और रूप में साकार किया है। जब कभी आँखें बन्दकर सोचती हूँ कि विगत 40 वर्षों की श्रेय विहीन एकनिष्ठ साधना का फल क्या होगा तो शरीर का रोम- रोम रोमांचित हो उठता है। आँखे, पलकें झपकाना भूल जाती हैं और हृदय से एक ही आवाज उठती है 40 वर्षों की निरन्तर साधना का फल राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के पुण्य कार्य से बढ़कर और क्या हो सकता है। इसी समय भारतीय शिक्षा आयोग वह प्रसिद्ध टिप्पणी याद आती है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।

फिर प्रश्न उठता है कि कच्चे घड़ों को गढ़ने वाला कुम्हार कौन है? जवाब मिलता है शिव नारायण सिंह जैसे शिक्षक। जिनका शिक्षण एक व्यवसाय नहीं अपितु साधना है। एक ऐसी साधना जो शिक्षा को उसकी जड़ों से जोड़ती है। उसमें भारतीयता का पुट होता है। शिव नारायण सिंह एक ऐसे शिक्षक हैं जो यह मानते हैं कि भारत का निर्माण विशुद्ध भारतीयता के प्राणतत्व को अंगीकृत करके ही हो सकता है। यही कारण है इन्होंने बोधकथाओं के माध्यम से जिस युवा का निर्माण करने का बीड़ा उठाया है वह शिक्षा, संस्कार, विनय और आत्मविश्वास से भरा वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला युवा होगा। वहीं वे अपनी बोधकथाओं के माध्यम से युवाओं को समसामयिक ज्ञान, ज्ञान-विज्ञान की चर्चा, धर्म और दर्शन की बातें, सामाजिक मूल्यों पर बात, छात्रों को भविष्य निर्माण की चिन्ताएँ सभी विषयों पर ज्ञानवर्धन करते हैं।

शिव नारायण सिंह का यह प्रयोग अब कथाओं के वाचन से आगे बढ़कर बोधकथा शोध संस्थान, शिवलोक गोरखपुर, (उ.प्र.) के रूप में नवीन आकार ले रहा है। यहाँ पर इनकी बोधकथाओं पर शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। यही शोध आलेख अब 'शोध-बोध' पत्रिका के माध्यम से देश दुनिया के समक्ष प्रस्तुत है। कह सकते हैं यही कार्य इन्हें इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित करेगा। आधुनिक भारत की शिक्षा का जब इतिहास लिखा जाएगा तब दुनिया यह जानकार हतप्रभ होगी कई भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित शिक्षा व्यवस्था की चर्चा के जोर पकड़ने से पूर्व एक साधक देवरिया के गुरुकुल में बोधकथाओं के माध्यम से शिक्षा में भारतीय तत्व के समावेश का हठयोग कर रहा था। उसने अपनी साधना के लिए सहचर चुना युवा सन्यासियों (शोधार्थियों) को। उनका मार्गदर्शन किया भारतीयता के भावों से भरे आचार्यों ने।

बोधकथा शोध संस्थान, शिवलोक गोरखपुर, (उ.प्र.) इस मायने में अनूठा है कि देवाधिदेव महादेव की तरह यह भी लोक कल्याण के लिए समर्पित संस्थान है। सबसे बड़ी बात लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को चुनौती देने का यह प्रयास निजी तो है लेकिन 'शिवोऽहम्' के भाव के कारण इसके मूल साधक ने इसे लोक कल्याण हेतु समर्पित कर दिया है। कहते हैं कि क्रांति की शुरुआत हमेशा खामोश शुरुआत के साथ होती है। शुरू में क्रांति की पदचाप सुनाई नहीं देती है लेकिन जब क्रांति अपनी भूमि ग्रहण कर लेती है तो वह परिवर्तन का वाहक बन जाती है। बोधकथा शोध संस्थान , शिवलोक गोरखपुर, (उ.प्र.) ऐसी खामोश क्रांति का गवाह बनने जा रहा है।

इस देश में लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति की आलोचना तो खूब की गई हैं। सभी शिक्षा आयोगों ने शिक्षा के भारतीयकरण की बात की किन्तु कोई भी वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था खड़ा नहीं कर पाया। वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा की चहुओर चर्चा के बीच एक-एक संकल्प चुपचाप समय की शिला पर अपने हस्ताक्षर अंकित कर रहा है। वह है शिव नारायण सिंह के बोधकथाओं के प्रयोग का हस्ताक्षर। वास्तव में मैकाले की प्रेत बाधा से मुक्ति का मार्ग के बीज शिव नारायण सिंह के शैक्षिक प्रयोग में सन्निहित हैं। इस पुनीत कार्य हेतु भगवान शिव की तरह उनका बोधकथा शोध संस्थान, शिवलोक गोरखपुर, (उ.प्र.) भी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस पुण्यकार्य हेतु शिव नारायण सिंह को चुना गया है। इसकी एक झलक इनकी रचना के इस अंश से देखी जा सकती है–

"शिक्षा ने अपना मूल स्वरूप खो दिया है। केवल कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना या किसी बड़े पद की नौकरी प्राप्त कर लेना, मैं नहीं समझता शिक्षा है। जिस शिक्षा का सम्बन्ध जीवनचर्या से न हो,वह एकदम बेकार हैं किसी काम की नहीं है, उसका कोई मतलब नहीं है। चाहे कितनी बड़ी उपाधि ले लें, मैं इसे शिक्षा नहीं मानता।" 18

उपरोक्त कथन में ही शिव नारायण सिंह के शैक्षिक प्रयोगों का मूल ध्येय छिपा है। इनका मानना है कि आचरण की पवित्रता, विनम्रता, धैर्य, साहस और मूल्य विहीन शिक्षा न लोक के हित में है और न ही व्यक्ति के। जो व्यक्ति को समष्टि की चिन्ताओं से नहीं जोड़ती, जो उसके हृदय में प्राणिमात्र के लिए संवेदना जागृत नहीं करती, जो उसके हृदय में साहस नहीं भरती, अपनी परम्परा और संस्कृति से प्रेम करना नहीं सिखाती वह भी भला कोई शिक्षा है।

यहीं पर आपके शैक्षिक प्रयोग समय की जरूरत बन जाते हैं। ऐसे समय में शिक्षा जब संस्कारहीन होती जा रही है। समाज मूल्यहीन होता जा रहा है। कुटुम्ब टूट रहे हैं। आपसी प्रेम के बंधन कमजोर पड़ रहे हैं। मानवता कराह रही है । यह सब ऐसे समय में घटित हो रहा है जब देश में साक्षरता दर में निरन्तर वृद्धि हो रही है। शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ इन्हीं चिन्ताओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं। आपकी मूल चिन्ता अबोध और अनगढ़ बालक को शिष्ट और मानवीय गुणों से परिपूर्ण कौशलयुक्त समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाने की चिन्ता है।

यह चिन्ता आपके विचारों में और मुखरित होकर सामने आती है। जैसे- " हमने कभी विचार ही नहीं किया कि शिक्षा के नाम पर हम क्या दे रहे है ? और क्या ग्रहण कर रहे हैं? क्योंकि जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ रहा है, वैसे- ही- वैसे समाज की समस्याएँ बढ़ रही हैं। क्या यह इसी शिक्षा का परिणाम नहीं है ? आखिर यह परिणाम आया कहाँ से है? आखिर यह सब चीजें तो इसी से आ रही हैं? क्यों आ रही हैं ? कैसे आ रही हैं ? यह प्रश्न आज भी हमारे सामने खड़ा है । तो सत्यता यही है कि कमी इस शिक्षा व्यवस्था में है जिस पर हमारा ध्यान ही नहीं जा रहा है।" 19

वे आगे घोषणा करते हुए कहते हैं कि - " इस शिक्षा का सम्पूर्ण आधार बदलना होगा, निश्चित बदलना होगा। बिना बदले कुछ भी सम्भव नहीं है। जीवन विषयक तथ्यों के साथ-साथ नित्य जीवन में घटने वाली घटनाओं, क्रियाकलापों को समझकर आज की शिक्षा में सम्मिलित करना होगा। यही मेरा मानना है। आज बालक को समुचित शिक्षा की जरूरत है। आचार्य स्वयं सम्पूर्ण होगा, तभी वह दूसरों को शिक्षित कर पाएगा। हमें किताबों से बाहर आना होगा।" 20

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'कुचाल' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, इस पर अब मैं कुछ नहीं कहूँगा। मुझे तो बस देखना है कि आप कितने में हैं, आप कहाँ

पहुँचते हैं। दोनों ऑप्शन आपके पास है- एक हंस होने का और दूसरा आप जानते ही हैं। अब तो आप जानें और आपका काम जानें। जो मैं जानता हूँ वह बस इतना ही है कि अब तक इस परिवेश में केवल हंस-ही-हंस होते आए हैं।"21

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'सर्वस्वीकार्य' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, यही मेरा कहना है कि तुम अपने द्वार खोलो, ज्ञान की किरणें तुम्हारे अन्दर स्वतः ही प्रवेश कर जाएँगी और उनके स्पर्श मात्र से तुम रूपान्तरित हो जाओगे, तुम ज्ञानी हो जाओगे, क्योंकि उन्हें तुमने ही रोक रखा है। अवरोध तुम्हारा अज्ञान ही है।" 22

निष्कर्ष- निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हमें किताबों से बाहर आना होगा। यह शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं के माध्यम से किए जा रहे शैक्षिक प्रयोगों का सार हैं। इनकी रचनाओं पर शोध आलेख प्रस्तुत करते हुए ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कि भगवान बुद्ध कह रहे हों 'अप्प दीपो भव'। जिस तरह से दीपक स्वयं जलकर अपने परिवेश को प्रकाशित करता है। उसी तरह इनके शैक्षिक प्रयोग की साधना भूमि इस देश की शिक्षा व्यवस्था को आलोकित करेगी इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

सन्दर्भ सूची-

1. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -16
2. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -15
3. 'मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -21
4. मूल्यों के निर्माण कलश', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -22
5. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 31
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 162
7. शिव नारायण सिंह, 'तू फिर मेरी माँ बन', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 116
8. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 38
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 202
10. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 86
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 186
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 19
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 299
14. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 45
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 225
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 134
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 642
18. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 11
19. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 15
20. शिव नारायण सिंह, 'मेरे प्रिय जागो', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 16
21. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 70
22. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 461

वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 02 | कुल अंक: 03

शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ: जहाँ सुमति तह सम्पति नाना का विग्रह

डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर (उ.प्र.)
पूर्व अध्यक्ष- हिंदी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची

प्रस्तावना– किसी सरस्वती पुत्र की सुदीर्घ सारस्वत साधना का आकलन या मूल्यांकन करना आसान काम नहीं है; विशेषत: उस सरस्वती पुत्र की साधना का आकलन या मूल्यांकन करना तो और भी कठिन कार्य है, जिसका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी हो और जिसके चिंतन का आकाश विस्तृत एवं व्यापक हो तथा जो एक साथ कई भाषाओं में निष्णात हो। ऐसे वाणी साधक का बहिरंग जितना व्यापक होता है, अंतरंग उससे कहीं अधिक गहरा होता है। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के निवासी प्राचार्य शिव नारायण सिंह ऐसे ही वाणी साधक और सरस्वती के वरद् पुत्र हैं। विगत तीन दशकों से अधिक समय से देवरिया के प्रेस्टिज इण्टर कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य हैं और कुशलता पूर्वक साहित्य सृजन और बोधकथाओं के निर्माण में सलंग्न हैं। इन्होंने अपने परिश्रम एवं कर्मठता से 'जागो शिव न्यास' के सौजन्य से गोरखपुर में बोधकथा शोध संस्थान की स्थापना की है।

संस्कृत के आख्यान साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह इतना समृद्ध था कि इसने भारत की सीमा लांघकर संसार के अनेकानेक देशों में अपने प्रभाव का झण्डा गाड दिया था। आख्यान साहित्य से तात्पर्य वैसे कथा साहित्य से है जिसे अंग्रेजी में फेवल कहते हैं। इन आख्यानों में संस्कृत के महाकाव्यों या नाटकों की तरह इतिहास - प्रसिद्ध या पुराण- प्रथित पात्रों को आधार नहीं बनाया गया है, वरन् साधारण पशुओं या पात्रों को कथानक की कील के रूप में लिया गया है। इस आख्यान साहित्य के दो भाग किये जा सकते हैं-1 नीति कथा 2 लोक कथा।

नीति कथा का लक्ष्य मनोरंजन के माध्यम द्वारा उपदेश प्रदान करना है। इसके पात्र पशु- पक्षी होते हैं किन्तु वे मानववत् आचरण करते प्रतीत होते हैं और जीवन, राजनीति तथा आचार के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करते हैं।इसकी शैली रोचक तथा भाषा बड़ी प्रबोध होती है, जिसे छोटे-छोटे बालक भी अनायास समझ लेते हैं। लोक कथा का प्रधान लक्ष्य मनोरंजन करना है। इसमें पशु पक्षी नहीं, मानव चरित्र कथानक की रीढ़ होते हैं। बोधकथा नीति-कथा और लोक-कथा का समवेत रूप है।

बीज शब्द– महाभाष्य, अजाकृपाणीय, काकतालीय, ऋग्वेद, छांदोग्य उपनिषद्, मंदाकिनी, नीति कथा, लोक कथा, राजपुरोहित, शिक्षालय, आद्योपांत ।

शोध आलेख– प्राचार्य शिव नारायण सिंह द्वारा प्रणीत बोधकथाओं को आद्योपांत मनोयोग पूर्वक पढ़ने का सुअवसर बोधकथा शोध संस्थान में रहकर आत्माराम को मिला है। उनकी बोधकथाएँ रामायण, महाभारत, वेद पुराण, उपनिषद्, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि पर आधारित रहती हैं। उनकी बोधकथाओं में किसी-न-किसी रूप में राम या कृष्ण की उपस्थिति रहती है। राम और कृष्ण भारतीय जीवन-दर्शन के मूलाधार हैं। इनके बिना भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की कल्पना नहीं की जा सकती है।

अतः इसमें मनोरंजन तथा उपदेश दोनों समाविष्ट रहते हैं। पशु- पक्षी की कथा के माध्यम से उपदेश देने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। ऋग्वेद में मनुष्य और मछली की कथा वर्णित है। छांदोग्य उपनिषद् में उद्गीथ-श्वान की कहानी कही गई है। रामायण, महाभारत और पुराणों में एक- से- एक सुंदर बोधकथाएँ कही गई हैं। पतंजलि (150 ई) अपने महाभाष्य में काकतालीय और अजाकृपाणीय जैसी लोकोक्तियों का प्रयोग कर कौए और उल्लू तथा सांप और नेवले की जन्मजात शत्रुता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। स्तूपों पर भी कई नीति-कथाओं के नाम उत्कीर्ण हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि ईसा के कई सौ वर्ष पहले भारतवर्ष में नीति कथाओं एवं बोधकथाओं का पर्याप्त प्रचार था।

राम कथा की मंदाकिनी महर्षि वाल्मीकि मुखारविंद से नि:सृत हुई और कालांतर में व्यास,भवभूति, कालिदास, जयदेव, मुरारि,अग्रदास, ईश्वरदास, रामानन्द, नरहरिदास, तुलसीदास, नाभादास, केशवदास, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिली शरण गुप्त, बालकृष्ण

शर्मा 'नवीन', रामचरित उपाध्याय, केदार नाथ मिश्र प्रभात, डॉ. राम कुमार वर्मा, कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह, गोवर्द्धन प्रसाद सदय, डॉ. श्याम नन्दन किशोर, डॉ. वचनदेव कुमार से लेकर आज तक किसी-न-किसी रूप में प्रवाहित होती रही है और रामकथा की मंदाकिनी को प्रवाह मान बनाये रखने में उपर्युक्त सभी कवियों के नाम विशेष रूप से उलेख्य हैं। सभी ने अपने-अपने ढंग से अपने वातावरण के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का गुणगान किया है, किन्तु सम्प्रति परिवेश में तुलसी कृत मानस के श्रीराम ही अधिक ग्राह्य बन गये हैं।

तुलसी साहित्य मेरा सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है और मैंने रांची विश्वविद्यालय से " श्रीरामचरित मानस की रस योजना" पर शोध कार्य कर पी-एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की है। अपने शोध कार्य के दौरान राम साहित्य पर अनेक ग्रंथों को देखने, सुनने एवं पढ़ने का सुअवसर मुझे मिला है, लेकिन प्राचार्य शिव नारायण सिंह प्रणीत बोधकथाएँ अपने आप में शिष्ट और विशिष्ट हैं। शिष्ट इसलिए कि उनमें नैतिकता, ईमानदारी एवं कर्त्तव्य निष्ठा की भावना सन्निहित है और विशिष्ट इसलिए कि उनमें आचार, विचार, संस्कार एवं मर्यादा का निदर्शन है। उनकी बोधकथाएँ जीवन और जगत् के बीच संतुलन स्थापित करने का एक सशक्त संदेश देती हैं। आज सर्वत्र नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, सदाचार और संस्कार के सारे सेतुबंध टूट रहे हैं; ऐसी विकट परिस्थिति में मनुष्य के भीतर के मद, मोह एवं अहंकार के विनाश का उपक्रम सर्वाधिक अपेक्षित है। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने महाकाव्य रामचरित मानस में मनुष्य के तीन प्रबल शत्रुओं की चर्चा की है –

"तात तीन अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान धाम मन, करहिं निमिष मंह क्षोभ।
लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचार।" 1

मुझे यह कहते हुए गर्व एवं रोमांच ही रहा है कि विद्वान् प्राचार्य शिव नारायण सिंह की सभी बोधकथाएँ काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह एवं अहंकार के विनाश की दिशा में उठाया गया एक सार्थक कदम हैं, जिससे मानव और मानवता का परम हित संभाव्य है।

कहना ही होगा हर पुरुष को महिला को सम्मान के भाव से देखना चाहिए। मनु स्मृति में मनु महाराज ने लिखा है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता:"2 अर्थात् जहाँ महिला का सम्मान होता है, वहाँ देवता का वास होता है।इसीलिए राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है कि –

इस धरती से मातृ शक्ति का मान नहीं जा सकता है।
नर के मन से नारी का सम्मान नहीं जा सकता है।
बेटा घर में हो तो भले चूल्हा ठण्डा रह जाए,
बेटी घर में हो तो भूखा मेहमान नहीं जा सकता है।

जीवन में क्या करना है ? यह हमें रामायण सिखाती है। जीवन में क्या नहीं करना है ! यह हमें महाभारत सिखाता है।जीवन में भक्ति कैसे करनी है, यह हमें श्रीमद्भागवत महापुराण सिखाता है और जीवन को कैसे जीना है! यह हमें श्रीमद्भगवद्गीता सिखाती है। जिसको जीवन में क्या करना चाहिए,क्या नहीं करना चाहिए, भक्ति कैसे करनी चाहिए और जीवन कैसे जीना चाहिए -यह समझ आ गई, उसका जीवन सफल ही नहीं सार्थक एवं चरितार्थ भी हो गया। सफलता और चरितार्थता में जमीन आसमान का अन्तर है।

भौतिक उपलब्धियों का नाम सफलता है, जबकि आध्यात्मिक उपलब्धियों का नाम सार्थकता है। मकान, गाड़ी, बाड़ी और धन-दौलत की प्राप्ति से हमारा जीवन सफल हो सकता है, लेकिन प्रेम, सत्य, तप, त्याग, सहिष्णुता ईमानदारी, करुणा, संवेदना,सहजता, उदारता, पर दुःख कातरता, विश्व बंधुता और मानवीयता से हमारा जीवन सार्थक और चरितार्थ होता है। ये उदात्त मानवीय गुण मानव के जीवन को सार्थक और चरितार्थ बनाते हैं।

इस सन्दर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का ललित निबन्ध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं? ' की पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं। उन्होंने लिखा है – "सफलता और चरितार्थता में अन्तर है। मनुष्य मारणास्त्रों के संचयन से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा भी सकता है, जिसे उसने बड़े आडम्बर के साथ सफलता नाम दे रखा है। पर मनुष्य की चरितार्थता प्रेम है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए नि:शेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ाना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता लें आना चाहती है, उसको काट देना उस स्वनिर्धारित आत्म-बन्धन का फल है,जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है। कम्बख्त नाखून बढ़ते हैं, तो बढ़ें, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।"

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-पाँच) बोधकथा 'गुरु-दक्षिणा' में आप जैसा ही एक विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के बाद, शिक्षा पूरी होने के बाद अपने गुरु से कहता है- आपकी बड़ी कृपा हुई जो आपने मुझे ऐसी शिक्षा दी और अब मैं विद्वान हो गया हूँ, ज्ञानी हो गया हूँ । जो शिक्षा आपने मुझे दी है, जो ज्ञान आपने मुझे दिया है, उसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ और अब मैं आपको गुरु-दक्षिणा देना चाहता हूँ।

गुरु ने कहा- इसकी कोई जरूरत नहीं है।

शिष्य मानता नहीं है। तब गुरु कहते हैं ठीक है, जब तुम नहीं मान रहे हो और कुछ देना ही चाहते हो, दक्षिणा देना चाहते हो, तो निश्चित रूप से दे सकते हो। गुरु भी बहुत पहुँचे हुए थे। उन्होंने कहा- ठीक है, अगर देना ही चाहते हो तो मुझे दक्षिणा में कोई ऐसी चीज दो, जो व्यर्थ हो। जिसकी कोई उपयोगिता न हो, जिसका इस संसार में कोई महत्त्व न हो।

विद्यार्थी के पास तो ऐसी कोई चीज होती नहीं उस समय। वह व्यर्थ चीज की खोज में निकल पड़ता है। अभी कुछ सोच ही रहा है तभी उसके मन में आता है। इस दुनिया में जहाँ देखिए वहीं मिट्टी-ही-मिट्टी पड़ी हुई है, इतनी अधिक मिट्टी का क्या मतलब? यह व्यर्थ ही तो है, क्यों न इस मिट्टी को ही में अपने गुरु को दे दूँ, गुरु दक्षिणा पूरी हो जाय।

लेकिन जैसे ही वह मिट्टी को हाथ लगाता है गुरु को देने के लिए तभी उसके मन से आवाज आती है- यह मिट्टी ही तो है जो इस दुनिया में वैभव का कारक है। इस दुनिया में जो कुछ भी है वह इस मिट्टी से ही है। अगर मिट्टी न होती तो शायद यह दुनिया ही न होती। मेरा इस मिट्टी को व्यर्थ मानना गलत है। यह मिट्टी व्यर्थ कैसे हो सकती है? यह मिट्टी व्यर्य हो ही नहीं सकती और वह अपना हाथ खीच लेता है, आगे बढ़ जाता है।

व्यर्थ की चीज खोजने के क्रम में वह और कहीं से गुजर रहा है, तभी देखता है कि सड़क के किनारे गन्दगी का ढेर लगा है। उस पर मक्खियों भिन भिना रही हैं, उससे बदबू भी आ रही है। उसके मन में घृणा उत्पन्न होती है। उस कूड़े-कचरे को देखकर, वह सोचता है. यह तो वाकई व्यर्थ की चीज है, क्यों न मैं इसे ही अपने गुरु को ले जाकर दे दू और मेरी दक्षिणा पूरी हो जाय, लेकिन फिर सोचता है, इसी कूड़ा-कचरा के ढेर से खाद बनती है, तो यह व्यर्थ कैसै है।तभी उसकी नजर नाले से बह रहे गंदे पानी पर पड़ता है, अभी वह ऐसा सोच ही रहा था कि तब तक उसका मन कह उठता है कि यह नाले का गन्दा पानी व्यर्य कहाँ है? यह भी अब खेतों में फैल जाएगा तो सूर्य के धूप एवं गर्मी से इसकी गन्दगी सूखकर सड़कर पौधों को प्राण देगी और जल वाष्पित होकर बादल बन जाएगा और ये बादल हमें प्राण देते हैं, जीवन देते हैं तो इसे भी कैसे व्यर्य कहा जा सकता है, यह भी व्यर्थ नहीं है।

वह व्यर्थ की चीज खोजता रहता है, खोजते-खोजते उसका काफी समय बीत जाता है, लेकिन ऐसी कोई भी व्यर्य की चीज उसके हाथ लग नहीं पाती है जिसे ले जाकर वह अपने गुरु को दे सके।

थक-हारकर वह गुरु के आश्रम में लौटता है और गुरु से कहता है- मैं बहुत दूर-दूर तक गया, मैंने बहुत ढूँढ़ा लेकिन मुझे ऐसी कोई व्यर्थ की चीज नहीं मिली। मैंने मिट्टी को हाथ लगाया तो मेरे मन में विचार आया कि इससे ही पृथ्वी बनी है। मैंने कूड़े-कचरे को उठाने की कोशिश की जिसे देखकर मुझे घृणा हो रही थी, लेकिन तुरन्त मेरे मन में विचार आया कि इससे तो पौधे प्राण पाते हैं, जिनसे हमारा जीवन संचालित होता है। इसके बाद मैंने गन्दे नाले के पानी को हाथ लगाने की कोशिश की, क्योंकि उससे बहुत तेज बदबू उठ रही थी। मैंने सोचा यह भी तो व्यर्थ ही है। तभी मुझे ध्यान आया कि इससे ही तो बादल बनते हैं जो हमें जीवन देते हैं। अब यह बात मेरे समझ में नहीं आ रही है कि आखिर ऐसी कौन सी व्यर्थ की चीज है जिसे लाकर में आपको दूँ?

आप समझ सकते हैं, गुरु ने शिष्य से क्या कहा होगा? गुरु ने अपने शिष्य से कहा- इस दुनिया में वही व्यर्थ है जो दूसरों को व्यर्थ समझता है। इस दुनिया में कोई भी चीज व्यर्थ नहीं है। प्रत्येक चीज का अपना महत्त्व है, जरूरत है उसके उचित मूल्यांकन करने की।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों ! इस घटनाक्रम में आपने देखा कि वह विद्यार्थी व्यर्थ की चीज खोजने में क्या कुछ नहीं बर्बाद करता है। वह व्यर्थ की चीज खोजने में अपना बहुमूल्य समय बर्बाद करता है और इस तरह अपने आपको ही व्यर्थ साबित करता है। क्या आप भी अपने आपको व्यर्थ साबित करना चाहेंगे? अगर आप भी स्वयं को व्यर्थ साबित करना चाहते हैं, तो कोई बात नहीं। अगर नहीं तो आप क्या करेंगे? आप समय के महत्त्व को समझेंगे।" 3

समय क्या है ? मैं मानता हूँ समय को परिभाषित करना कठिन है। किन्तु जरा इस तरह से सोचें, जब बन्द घड़ी भी प्रतिदिन दो बार सही समय बताती है, तो आप अपने बारे में क्या सोचते हैं? आपकी अपनी रुटीन, आपकी अपनी दिनचर्या, आपकी अपनी समय सारणी क्या है? कैसे चलती है आपकी घड़ी, कैसे पूरी होती है आपकी दिनचर्या? क्या इसके अवलोकन से यह नहीं समझा जा सकता है कि समय क्या है? आज इस सत्र का पहला दिन है। आज से एक नई शुरुआत कर रहे हैं आप। आज आपको निश्चय करना चाहिए, आज आपको प्रतिज्ञा आज आपको यह तय करना चाहिए कि आप समय के साथ हो लेंगे।

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-चार) बोधकथा 'कस्तूरी-कुण्डलि' में शहर के एक बड़े व्यवसायी की कथा है, जो मेरे करीबी भी हैं, अपने व्यवसाय सम्बन्धी एक यात्रा का जिक्र कर रहे थे। उन्हें बार-बार कलकत्ता जाना होता है,

आप जानते हैं. व्यवसायी हैं तो पैसे ले जाना होता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कैश भी ले जाना होता है। ट्रेन में चढ़ते हैं बिस्तर लगा कर लेटते हैं, तब तक क्या देखते हैं कि सामने वाली बर्थ पर जो अभी तक खाली थी उन्हीं में से एक आदमी आता है और अपना बिस्तर लगा लेता है। उसे रात भर नींद नहीं आयी। उन्होंने कहा- परेशान ही नहीं लग रहे हो, तुम्हारे दिमाग में कोई प्रश्न बहुत तेजी से गूँज रहा है।उसने कहा- अरे। आप तो बड़े ज्योतिषी हैं, कैसे जान गए कि मेरे दिमाग में प्रश्न बहुत तेजी से गूँज रहा है?

फिर वह हार-पाछकर कहता है- हाँ, मैं परेशान भी हूँ और मेरे दिमाग में एक प्रश्न बहुत तेजी से गूँज रहा है। वे कहते हैं- कहो तो मैं बताऊँ तुम्हें, कौन-सा प्रश्न है?उसने कहा- इतना आप जानते हैं ? तब वे कहते हैं- हाँ जानता हूँ। तुम इसीलिए परेशान हो कि जो रुपये तुमने स्टेशन पर मेरे बैग में देखे थे. वे रुपये कहाँ है? बहुत खोजने के बाद भी तुम नहीं पाये।

उन्होंने कहा- हाँ, यह बात तो सही है कि रुपये मेरे बैग में नहीं थे और तुम खोजे और खोजते रहे, पाये भी नहीं। जो चोर है वह बैग में तलाश रहा था, जहाँ उसने देखा था, लेकिन पैसा उसके पास ही था, जो खोज इनके पास रहा था।

प्रिय विद्यार्थियों! आपको विश्वास नहीं होता मेरी बातों का कि वह सब कुछ आपके अन्दर भरा पड़ा है, जिसे आप बाहर खोजते हैं। क्यों आप बाहर खोजते हैं? इसलिए न कि आपको पता नहीं है कि अन्दर भरा पड़ा है, लेकिन कौन आपको दिखाएगा कि सब कुछ आपके अन्दर ही भरा पड़ा है। संत कबीर दास ने इसीलिए कहा है कि -

कस्तूरी कुण्डलि बसे, मृग ढूँढे वन माहि।
वैसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहि।।

ठीक यही स्थिति आपकी भी है। अब मेरे वश का तो नहीं, क्योंकि यह कार्य तो केवल एक ही आदमी ने किया था, भगवान श्रीकृष्ण ने किया था। उन्होंने अर्जुन को दिखा दिया कि अर्जुन सारी सृष्टि मेरे मुँह के अन्दर है। देखा ही होगा आप लोगों ने, जरूर कहीं देखा होगा, सीरियल में देखा होगा, नहीं तो कहीं फोटो में देखा होगा।

जब अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण शिक्षा दे रहे थे, अर्जुन को बातें नहीं समझ में आ रही थी। उन्होंने अपना मुँह खोला और उसमें दिखाया ही सारी सृष्टि देखो, मेरे मुँह के अन्दर है, एकदम सत्य है और मेरा यही मानना है कि केवल भगवान श्रीकृष्ण के मुँह के अन्दर ही नहीं थी वह सारी सृष्टि, हमारे-आपके, सभी के अन्दर है। मुहँ खोलिएगा मत ! क्योंकि हमें दिखाई नहीं देगा और हम खोलेंगे तो आपको दिखाई नहीं देगा, इसलिए कि आप देखना नहीं चाहते हैं। नहीं तो, है सारा कुछ आपके अन्दर ही, बस देखने के लिए वह दृष्टि चाहिए। वह दृष्टि कहाँ से उत्पन्न होगी? आपके अपने अन्दर से उत्पन्न होगी, आपके अपने विचार से उत्पन्न होगी, आपकी सोच से उत्पन्न होगी, आपके करने से उत्पन्न होगी। कैसे करेंगे? यह आपको नित्य प्रति बताया जाता है, उसे आप आचरण में उतारें, सीखे तो निश्चित रूप से आप वहाँ तक पहुँच जायेंगे, जहाँ आपको पहुँचना है।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, वह चीज एकदम उसके पास थी, लेकिन वह उसे पा नहीं सका। तो अब वक्त नहीं रह गया है, समय के साथ लगिए, आगे बढिए और प्रयास कीजिए। सब कुछ आपके अन्दर ही छिपा हुआ है, उसे आप बाहर निकाले, उसका लाभ-समाज को पहुँचायें, मानव मात्र को पहुँचायें, यही आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। प्रयास करें, निश्चित ही सफलता मिलनी है।" 4

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-तीन) बोधकथा 'मनोबल' में एक छोटे-से राज्य पर किसी बड़े राज्य के राजा ने आक्रमण कर दिया। अब इस छोटे राज्य का सेनापति, जिसके पास सैन्य बल बहुत कम था, घबरा जाता है और जाकर अपने राजा से कहता है- अगर हम लोग लड़ाई लड़ेंगे तो किसी भी स्थिति में जीत नहीं पाएँगे, क्योंकि शत्रु की सेना हमारी सेना से पाँच गुनी है और इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि हम लोग हथियार डाल दें, हार स्वीकार कर लें।

राजपुरोहित वहीं खड़ा रहता है। सेनापति की बातें सुनकर राजा राजपुरोहित की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखते है। राजा जानना चाहते हैं कि राजपुरोहित की मंशा क्या है?

राजपुरोहित ने राजा से कहा- नहीं, हम लोग हथियार नहीं डालेंगे। लड़ाई लड़ी जाएगी परिणाम चाहे जो हो देखा जाएगा।

राजा ने राजपुरोहित की बात मान ली। अब राजपुरोहित सेनापति नियुक्त हो गया और तुरन्त लड़ाई के लिए कूच कर गया।

राजपुरोहित के पास अब इसका कोई जवाब नहीं था। उसने कहा- ठीक है, मैं तुम लोगों के सामने ही पूछ लेता हूँ। उसने अपनी झोली में हाथ डाला, एक सिक्का निकाला और सैनिकों से कहा- देखो, यह सिक्का है, मैं इसे उछालता हूँ, अगर चित्त आता है. तो जीत हमारी होगी और अगर पट आता है, तो हम लोग वापस लौट चलेंगे।

सिक्का उछाला गया, सिक्का चित्त ही गिरता है। पुरोहित ने क्या कहा था? सिक्का अगर चित्त गिरेगा तो हम जीत जायेंगे। अब सैनिको का उत्साह जाग जाता है। सैनिक उत्साहित हैं। सैनिक कहते हैं ठीक है, एक बार और

उछालिए, देखिए, इस बार क्या होता है?

सिक्का पुनः उछाला जाता है, इस बार फिर चित्त ही गिरता है। सिक्का दूसरी बार भी चित्त ही गिरा। सैनिक और उत्साहित होते हैं, लेकिन उनका मन अभी भी पूर्ण आश्वस्त नहीं है।

सैनिक कहते हैं- अच्छा ठीक है, तीसरी बार उछालिए। इस बार जो होगा वही किया जाएगा।

सिक्का पुनः उछाला जाता है, तीसरी बार भी वह चित्त ही गिरता है। अब उनके उत्साह की सीमा नहीं है।

सभी सैनिक पूरे उत्साह से 'जीत- जीत जीत' चिल्लाने लगते हैं। बस उसी क्षण वे कूच कर जाते हैं और विपक्षी राजा की जो पाँच गुनी सेना होती है उसका मर्दन कर देते हैं, उसे तहस-नहस कर, जीतकर लौट आते हैं।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आज ही लिखकर रख लीजिए कि आपको क्या बनना है। आपको जो भी बनना है उसके लिए आप केवल अपने उस सोये हुए मनोबल को, आत्मविश्वास को जगा लीजिए और इसी समय प्रोसेसिंग शुरू कर दीजिए। समय आने पर रिजल्ट आपके पक्ष में ही होगा। आप जो बनना चाहेंगे, एकदम बन कर रहेंगे, यह अकाट्य है। इसे आज तक न कभी कोई काट सका है और न काट सकेगा।" 5

'विद्यार्थियों से...' (खण्ड-पाँच) बोधकथा- 'यत्न देवो भव' में दक्षिण अफ्रीका में घटी एक घटना से सम्बन्धित कथा है। कुछ सत्याग्रहियों जो आन्दोलन करना बन्द नहीं कर रहे थे, बार-बार मना करने पर भी नहीं मान रहे थे, जेल में बन्द कर दिया गया।

एक दिन गवर्नर का मुआयना हुआ। गवर्नर आया कैदियों से मिलने, उनका हाल-चाल लेने के लिए। गवर्नर उस कैदी से पूछता है बताओ तुम्हें जेल में कोई कष्ट तो नहीं है ? तो उस व्यक्ति ने क्या कहा मालूम है आपको ?

उस व्यक्ति ने कहा- मुझे और तो कोई कष्ट नहीं है, लेकिन इतना कष्ट जरूर है कि यहाँ मेरे लिए कोई काम ही नहीं है। यहाँ समय नहीं बीतता है, इधर-उधर काम करना पड़ता है। कोई ऐसा काम मुझे दिया जाय जिसमे में व्यस्त रहूँ। गवर्नर हतप्रभ! उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

उस व्यक्ति ने कहा कि मुझे करने के लिए कार्य चाहिए। वह व्यक्ति कौन था आपको पता है ? जी हाँ , गाँधी जी थे। कहा भी गया है, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, गुरु देवो भव।' इतना जानते हैं न? ठीक, अच्छा एक और देवो भव, वह भी आपको बता देता हूँ। 'यत्न देवो भव। यत्न समझते हैं? प्रयत्न करना, प्रयास करना, कोशिश करना, लगे रहना और यही है कर्मयोग। बस इसी का परिणाम था कि गाँधी, गाँधी जी हो गये।

इस बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, आपके सामने भी अवसर है। आपको भी लगना चाहिए, आपको भी कर्म का पुजारी होना चाहिए। जिस दिन आप कर्मयोग को साध लेंगे, जिस दिन आप लग जाएँगे, जब आप लगे रह जाएँगे, एक तरह से कहा जाय कि जो भी आपका उद्देश्य है, जो भी आपके सामने लक्ष्य है, जो भी आप कर रहे हैं उसमे पूरी तन्मयता से लग जाएँगे, जूझने लगेंगे तो निश्चित रूप से आपको भी दुनिया जानेगी और आप अपने लक्ष्य पर होंगे।

कोई काम छोटा-बड़ा नहीं होता। मैंने पहले भी आपको बताया है, आज फिर बता रहा हूँ, जो भी काम इस समय आपके पास है, पूरे लगन से, पूरी निष्ठा से, पूरे मनोयोग से आप उसमें भिड़ जाते हैं, तो निश्चित रूप से आपको आपका लक्ष्य मिलना ही है।" 6

इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेख करना बड़ा ही समीचीन होगा कि शिव नारायण सिंह के विचार और चिंतन भी बड़े ही सार्थक एवं प्रेरणाप्रद हैं। यथा -

" इस अस्तित्व को बचाने का केवल और केवल एक ही विकल्प है, अन्तिम विकल्प है कि हम अपने दिन की शुरुआत एक पौधा लगाकर करें।" 7

"इस समय तुम भले ही लक्ष्य से कुछ दूरी पर हो, लेकिन तुम्हारा प्रयास, तुम्हारी चेतना, तुम्हारी दिशा, तुम्हारी सोच तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगी।" 8

" आप सीधे शिखर पर पहुँचना चाहते हैं, तो यह कैसे संभव है?पहले निचले स्टेप पर पैर नहीं रखेंगे तो अन्तिम स्टेप पर कैसे पहुँच पायेंगे।" 9

" हमारी शिक्षा-पद्धति, शिक्षा-व्यवस्था, शिक्षण सामग्री निर्जीव की शिक्षा देती है, निर्जीव का अध्ययन कराती, उसे जीवंत चींजे कहाँ समझ में आती हैं। " 10

" क्या केवल सूर्य का निकलना ही प्रकाश है ? नहीं! प्रकाश है ज्ञान का उपजना, जब आपके अंदर ज्ञान उपजेगा, तो प्रकाश ही प्रकाश हो जायेगा।" 11

" आज शिक्षा की जो दुर्गति है, उसके पीछे शिक्षालय ही हैं, क्योंकि वे कारखाने बन गये हैं, विद्यार्थी कच्चा माल, शिक्षक कारीगर और व्यवस्था मशीन बन गई है, तो फिर प्रोडक्ट का क्या पूछना? " 12

" प्रत्येक व्यक्ति एक यूनिट है, वह एक निश्चित उद्देश्य से संसार में आया है, जो अपने उद्देश्य में लगा रहता

है, वह सफल हो जाता है।" 13

" चित्त की गहराई में उतरने के बाद यह जाना जा सकता है कि शांति क्या है? वहाँ आँधियाँ नहीं हैं, तूफान भी नहीं है, वहाँ यहाँ जैसा कुछ भी नहीं है, केवल और केवल शांति है। "14

" सीखना तो जीवन पर्यंत चलने वाली प्रकिया है, सब कुछ सीखकर भी बहुत कुछ सीखने के लिए शेष रह जाता है।" 15

"इस पृथ्वी पर अपनी माता से बड़ी कोई माता नहीं है, जो अपनी माँ दे सकती है, वह कोई दूसरी माँ नहीं दे सकती है। " 16

"यह प्रकृति सबसे महत्त्वपूर्ण उपहार है, जब आप किसी का भला करते हैं, तो आपका भला प्राकृतिक रूप से बिना किये अपने आप हो जाता है।"17

निष्कर्ष – इन ढ़ेर सारे सन्दर्भों को ध्यान में रखकर शिव नारायण सिंह के इन प्रयासों का मूल्यांकन किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि उनकी सभी बोधकथाएँ कुमति पर सुमति के विजय का उद्घोष हैं। उनकी बोधकथाएँ भाषा-विचार तथा भाव एवं प्रभाव सभी दृष्टियों से वैभवपूर्ण हैं।

सन्दर्भ सूची-

1. श्रीराम चरित मानस- तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर - 2001
2. मनु स्मृति-मनु जी महाराज, गीता प्रेस, गोरखपुर 2001.
3. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 03
4. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 04, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 99-100
5. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 09
6. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 16
7. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 361
8. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 591
9. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 293
10. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 541
11. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 225
12. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 224
13. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 215
14. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 634
15. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 129
16. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 629
17. शिव नारायण सिंह, 'विद्यार्थियों से...', खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या – 362

© 9454806323
Shivshivoaham@jagoshiv.in
Shivshivoaham@gmail.com

स्वामित्व- शिव नारायण सिंह, अध्यक्ष, जागो शिव न्यास, शिवलोक, गोरखपुर उ. प्र.
के उपक्रम बोधकथा शोध संस्थान की मासिक ई पत्रिका 'शोध बोध' में छपे शोध आलेख
की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी शोधार्थी की होगी, किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र गोरखपुर होगा।